

औरत एक रात है

(कहानियाँ)

परमेश्वरी प्रकाशन
दिल्ली

एक रात है

मालती जोशी

औरत एक रात है

ISBN—81-88121-01-0

प्रकाशक
परमेश्वरी प्रकाशन
बी-109, प्रीत विहार
दिल्ली-110092

संस्करण
2004

आवरण
राजीव

मूल्य
एक सौ बीस रुपये

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

AURAT EK RAAT HAI (Stories in Hindi)
by Malti Joshi
Price : Rs 120.00

अपने उस भाई को
जो सात समुन्दर पार से ही
अनत में विलीन हो गया

कथा-क्रम



निर्वासित कर दो तुमने मेरी प्रीत

रात बड़े भैया का फोन आया था । रुँधे गले से उन्होंने बस इतना कहा था, "सुमि, दिव्या नहीं रही ।"

बस एक वाक्य और फोन चुप हो गया था । मैं भी निर्निमेष उसे देखते हुए काठ होकर रह गई थी । दिव्या नहीं रही । दिव्या, जो जीवन का, सौंदर्य का, उल्लास का, उमग का प्रतीक थी, वह नहीं रही । यह कैसे हो सकता है ? सचमुच, हरदम हँसती-खिलखिलाती, ठुमकती-मचलती दिव्या को मृत्यु के साथ जोडकर देखना बड़ा कठिन लग रहा था, पर यह मजाक तो नहीं हो सकता । ऐसा क्रूर मजाक और वह भी बडे भैया क्यों करेगे ?

इस धक्के से उबरने मे मुझे कोई आधा घटा लग गया । जब मन थोड़ा स्वस्थ हुआ, तो मैंने ही फोन लगाया । इस बार लाइन पर छाया थी । ठीक तो है । वही तो सबसे पास है । दौडकर पहुँच गई होगी । वह भी बुरी तरह टूटी हुई थी । सुबकते हुए उसने जो कुछ बताया, उसका सार यह था कि दिव्या ने अपनी लैब की सत्रहवीं मजिल से छलाँग लगा दी थी । उसके प्राण-पखेरू तत्क्षण उड़ गए थे । अब यह पता लगाना मुश्किल है कि यह आत्महत्या है या मात्र दुर्घटना । हत्या की संभावना को भी एकदम नकारा नहीं जा सकता ।

ये तीनो ही सभावनाएँ मेरे गले से नीचे नहीं उतर रही थीं । उसने तो अपनी पसद से यह कैरियर चुना था और अपनी पसद के जीवनसाथी के साथ सपनों के देश मे बसने चली गई थी । शादी को अभी मात्र तीन साल ही तो हुए है । इतनी जल्दी कोई इतना हताश हो सकता है ?

और उसकी हत्या भला कोई क्यों करेगा ? क्या उस जैसी निश्छल, सरल लडकी से भी किसी की दुश्मनी हो सकती है ? और दुर्घटना का तो सवाल ही नहीं उठता । वह तो अपने सहकर्मी से कहकर गई थी कि वह फ्रेश एयर लेने ऊपर जा रही है ।

"फ्यूनरल कब है ? कहाँ है ?" मैंने दबी जबान से पूछ लिया । दिव्या जैसी लडकी के फ्यूनरल की कल्पना तक सिहरा देती है, पर औपचारिकता है । पूछना ही पड़ा ।

"फ्यूनरल तो बुआ वहीं हो गया । यहाँ लाने लायक स्थिति नहीं थी । चित्रा और अकित गए हैं मैं तो " और वह चुप हो गई समझ गई कि देवी जी फिर से उम्मीद

से है । चित्रा की शादी मे मिली थी, तब एक बेटी थी । दूसरी की तैयारी थी । दिव्या की शादी मे देखा, दो कन्याएँ है, तीसरे की आहट है और अब यह चौथे की सूचना है । इस बार भी बेटी ही हुई तो ? उस मन स्थिति मे भी मुझे छाया पर खीज हो आई ।

"अच्छा, मै कल रवाना हो रही हूँ । भैया-भाभी का खयाल रखना ।" मैने कहा और फोन रख दिया, फिर एक फोन योगेश्वरी ट्रेवल्स को किया कि कल किसी भी गाड़ी मे मेरा आगरा के लिए रिजर्वेशन करवा दे । इस उम्र मे अब धक्के खाते हुए जाने की हिम्मत नहीं होती । रात मे ही मैने सूटकेस जमाकर रख लिया । कल जिस भी गाडी मे सीट होगी, निकल जाऊँगी ।

सब समेटकर सोने गई, तो साढ़े बारह बज रहे थे । पर मेरी आँखों में नींद का नाम नहीं था । एक मन हुआ, पम्मी को फोन कर लूँ, पर घड़ी देखकर अपने को रोक लिया । वैसे भैया ने वहाँ भी फोन तो कर ही दिया होगा । वह भी मेरे आगे-पीछे ही पहुँचती होगी । मुँह से चाहे जैसा, उलटा-सीधा बोलती रहे, पर ऐसे समय मे सब कुछ भूलकर दौडी चली आएगी, मुझे विश्वास है । इस समय हम दोनों का वहाँ होना बेहद जरूरी है । भाभी रो-रोकर बेहाल हुई जा रही होगी । भैया को सात्वना देने वाला कोई नहीं होगा ।

अम्मा के बाद उस घर से सबध थोड़े औपचारिक हो गए थे । जब तक अम्मा थीं, तब तक तो मै हर छुट्टी में घर पहुँच जाती थी । इसीलिए लड़कियाँ भी मुझसे हिली हुई थीं । खासकर दिव्या के लिए तो मै 'फ्रेंड, फिलॉसफर एंड गाइड' थी, पर अम्मा के बाद सब कुछ बदल गया । अम्मा की तेरहवीं पर ही मैने भाभी को किसी से कहते सुना था, 'अरे, एक सास मर गई तो क्या हुआ, दूसरी तो अभी बैठी है । वे तो बेचारी खटिया से लगी थीं, पर यह तो खासमखास है । अभी पता नहीं कितने दिनो तक और राज करेगी ।'

अपने स्नेह की ऐसी अवमानना देखकर मन खट्टा हो गया था । तब से मैने घर जाना छोड़ दिया था । या तो पम्मी के यहाँ कुछ दिन चली जाती या फिर किसी यात्रा-कपनी के साथ भारत-भ्रमण कर आती । भैया के यहाँ तो बस लड़कियों की शादी या सगाई में ही जाना होता था, इसीलिए दिव्या की भी जो आखिरी छवि मेरे मन मे अकित थी, वह नववधू की ही थी । शादी के तुरत बाद, वह तो अमेरिका चली गई थी । उसके बाद शायद एकाध बार ही आई हो ।

रात-भर दिव्या का चेहरा मेरी आँखो के सामने घूमता रहा, उसके कई रूप याद आते रहे । यूँ तो तीसरी बेटी के जन्म पर घरो में मातम छा जाता है, पर जब नर्स ने वह जापानी गुड़िया हाथो मे थमाई थी, तो क्षण-भर को अम्मा भी अपनी हताशा भूल गई थीं । वह लडकी घर-भर की आँखों का तारा थी खिलौना थी घर और बाहर उसने

इतना प्यार बटोरा था कि उस पूँजी के सहारे वह सात जन्म जी लेती । इसीलिए तो उसकी आत्महत्या की बात गले नहीं उतर रही थी ।

किसी तरह ठेलठालकर मैंने अपने को ट्रेन मे चढ़ाया था । अम्मा के बाद से घर जाने का उत्साह ही खत्म हो गया था, फिर भी शादी-ब्याह मे जाते समय उत्साह न सही, एक उत्सुकता तो रहती ही है, पर इस बार तो यह सफर पहाड़-सा लग रहा था ।

वक्त काटने के लिए मैंने पिछली यात्राओं को याद करना शुरू किया । सबसे पहले छाया की शादी याद हो आई । मै और पम्मी करीब-करीब साथ ही पहुँचे थे । शादी मे अभी चार-पाँच दिन बाकी थे, पर घर अभी से गोदाम बन गया था । पीछे वाला बरामदा तो बोरियो से अटा पड़ा था । कमरो मे बिखरा हुआ सामान भी अपने लिए मुनासिब जगह तलाश रहा था । हमे लगा कि इस महासागर मे अगर हमारी अटैचियाँ खो गई, तो ढूँढे नहीं मिलेगी ।

नहा-धोकर हम लोग सुस्ता ही रहे थे कि एक तोदियल-सा शख्स दाखिल हुआ, “आटी, आपकी लिस्ट के अनुसार सारा सामान भिजवा दिया था । मिला लिया था ?”

“बाकी सामान तो आ गया, पर शायद बासमती का कट्टा नहीं पहुँचा ।”

“आप क्या पंगत मे बासमती परोसेगी, आटी जी ? गोल्डन सेला चलने दीजिए । आजकल सब जगह रिसेप्शन मे यही चलता है ।”

“मुकुंद, पंगत में जो तुम्हारा जी चाहे बनवाना । मै तो घर के लिए मँगवा रही थी । अब साल-भर तीज-त्योहार चलते रहेंगे । दामाद का, समधियो का आना-जाना लगा ही रहेगा । उन्हे क्या सेला चावल खिलाऊँगी ?”

“अभी ले आऊँ या बाद मे लाने से चलेगा ?”

“बाद मे ले आना । अभी ले आते तो लगे हाथ साफ-सूफ करके गोलियाँ डाल के रख देती ।”

“जी, अच्छा,” कहकर जब वह मुकुद नामक प्राणी चला गया तब मैंने पूछा, “आजकल गोपालदास के यहाँ से सामान नहीं आता क्या ? या कि यह उन्ही का आदमी है ?”

“क्या बात करती हो,” भाभी झल्लाईं, “ये तो इनका स्टुडेट है । फाइनल मे है, इग्लिश मे एम०ए० कर रहा है ।”

पम्मी चिहुँकी, “मुझे तो यकीन ही नहीं आ रहा । मुझे तो लगा, जैसे सीधे किराने की दुकान से उठकर चला आ रहा हो ।”

“उसकी दुकान है । शहर का सबसे बड़ा किराना मर्चेंट है उसका बाप । मुझसे बोला कि इस बार छाया दीदी की शादी का सामान हमारे यहाँ से लीजिए । हमने कहा

ठीक है । हमे क्या, कहीं भी पैसे देने है । वहाँ न दिए, यहाँ दे दिए ।"

"ये पैसे देंगी ?" पम्मी फुसफुसाई । मैंने बड़ी मुश्किल से चिकोटी काटकर उसे चुप किया, फिर विषय बदलने की गरज से भाभी से कहा, "हमे होने वाले दामाद की फोटो तो दिखाइए, हमने सुना है कि वे भी भैया के स्टुडेट थे ।"

"हाँ, पिछले साल ही तो फाइनल किया है । गोल्ड मेडल मिला था ।"

"अच्छा ?"

"अब पी-एच०डी० कर रहे है । मुरादाबाद मे लेक्चरर हैं ।"

भाभी फोटो लेने भीतर चली गई, तो पम्मी ने कहा, "कन्यादान के लिए गोल्ड मेडल की वर दक्षिणा, सौदा कोई बुरा नहीं रहा । क्यो दीदी ?"

"तुम थोड़ी देर चुप नहीं रह सकतीं ?"

"चुप कैसे रहूँ दीदी ? मुझे तो यह चिंता खाए जा रही है कि इस साल अगर उस मोटूमल की पोजीशन आ गई, तो बेचारी चित्रा की जिदगी तबाह हो जाएगी !"

पम्मी की बात पर हँसी भी आई और गुस्सा भी । अच्छा हुआ, भाभी फोटो लेकर प्रकट हो गई । बात वही दब गई । हम लोग फोटो का मुआयना कर रहे थे कि एक सुदर्शन-सा नवयुवक, एक मिस्त्री टाइप व्यक्ति के साथ मच पर अवतरित हुआ—"आटी जी, आप इलेक्ट्रिशियन के लिए कह रही थीं, ले आया हूँ । क्या-क्या काम करवाना है, बता दीजिए ।"

"सामान ले आए ?"

"कैसा सामान ?"

"एक तो बिजली की झालरे चाहिए । पूरे कपाउंड मे मकान में लगेगी । दो ठो बड़े पखे चाहिए । एक बरामदे में लगेगा और एक छत पर । दो ठो पखे और दो कूलर जनवासे मे भी लगेगे । हाँ, वहाँ एक रंगीन टी०वी० भी चाहिए । दूसरे दिन इतवार है । वे लोग महाभारत देखेंगे और देखो, एक बडा-सा फ्रिज दो दिन पहले से ही यहाँ आ जाए । हलवाई ने कहा है कि बगाली मिठाई फ्रिज मे ही रखी जाएगी ।"

वह लड़का मुँह बाए भाभी की फरमाइशे सुनता रहा, फिर धीरे से बोला, "ये सब सामान कहाँ से आएगा ?"

"अब यह भी मै बताऊँगी ? अजीब आदमी हो । हाथ हिलाते चले आए, सामान नहीं होगा तो इस बिजली वाले का मै क्या अचार डालूँगी ?"

लडका अपना-सा मुँह लेकर बाहर चला गया । साथ मे वह मिस्त्री भी । पम्मी एकदम पूछ बैठी, "भाभी, क्या यह भी स्टुडेंट है ?"

"हाँ क्यो ?"

"तो इस साल इसे ही गोल्ड मेडल दिलवा दीजिए ।"

"क्यों ?"

उस समय पता नही कहॉ से चित्रा कमरे मे टपक पड़ी । पम्मी की उससे कभी नहीं बनी । इस बार भी पम्मी को अपमानित करते हुए कसैले स्वर मे बोली, "उसे तुम्हारी सिफारिश की जरूरत नहीं है छोटी बुआ । आलोक हमेशा से टॉपर रहा है ।"

चित्रा शायद सेफ की चाबी लेने आई थी, लेकर चली गई, पर वातावरण को बडा असहज बना गई । मैने वातावरण को थोड़ा हलका बनाने की कोशिश करते हुए कहा, "दरअसल भाभी, लड़का इतना सुदर है कि हमें लगा, चित्रा के साथ उसकी जोडी खूब जमेगी ?"

"अरे, सुदर है तो क्या सिर पर बिठा ले ?" भाभी ने हिकारत से कहा, "न जात का, न बिरादरी का । वैसे भी चित्रा के लिए तो हम कोई डॉक्टर या इजीनियर ही ढूँढेगे । वो तो छाया का रंग थोड़ा दबा हुआ था, तो हमने सोचा कि चलो प्रोफेसर ही सही ।"

"हॉ, सो तो है । प्रोफेसरो को तो कैसी भी बीवी चल जाती है ।" पम्मी किसी तरह बाज नहीं आ रही थी । मैने उसे जबरदस्ती उठाते हुए कहा, "चल, थोड़ा लॉन मे घूम लेते है । बैठे-बैठे पॉव अकड गए है । अब तो धूप भी कम हो गई है ।"

बाहर आते ही मैने उसे आड़े हाथो लिया, "तुम्हारी जबान पर क्या कॉटे उग आए है, जो एक बात भी सीधी नहीं निकलती । कुछ भी कहने से पहले कम से कम मेरा तो खयाल किया करो । तुम्हारे पास तो अपना घर-परिवार है, पर मुझे तो रिटायर होकर यहीं इन्हीं लोगो के पास आना है ।"

"कोई जरूरी है ? मेरे यहॉ भी तो आ सकती हो ? बहुत सकोच हो रहा हो, तो अपनी सारी जमा-पूँजी मेरे छोटे के नाम कर देना । मै बिलकुल मना नहीं करूँगी ।"

मै कोई माकूल-सा जवाब सोच ही रही थी कि उसने कहा, "दीदी, उधर फाटक पर देखो ।"

मैने देखा, आलोक नामक वह शख्स, अपने स्कूटर पर अब भी बैठा हुआ सडक ताक रहा था ।

"कमाल है, इतनी लताड़ खाने के बाद भी जनाब अब भी जमे हुए हैं ।"

"गोल्ड मेडल का सवाल है, दीदी, शायद मिस्त्री को भेजकर सामान मॅगवाया होगा ।"

पर इस बार पम्मी का अदाजा गलत साबित हो गया था । बाद मे पता चला था कि बिजली का काम भी मोटूमल ने ही अजाम दिया था, इस फिकरे के साथ कि यह काम क्या उस घोचू के वश का है ?

उस समय आलोक को मिस्त्री का नहीं, किसी और का ही इतजार था। एकाएक वह सतर्क होकर खड़ा हो गया। एक साइकिल सडक से सरपट आती हुई सर्र से फाटक के भीतर दाखिल हुई और उसके साथ-साथ आलोक भी।

वह दिव्या थी। स्कूल से लौटी थी। आते ही दोनों मे तकरार शुरू हो गई, "यह वक्त है तुम्हारा घर लौटने का ? घड़ी देखी है ?"

"ओफ्फो ! नाराज क्यो होते है ? एक्स्ट्रा क्लास थी आज फिजिक्स की।"

"फेको मत। जुलाई मे कहीं एक्स्ट्रा क्लास लगती है ?"

"लगती है, बाबा, हमारे यहाँ टेंथ और टुवेल्थ के लिए वीक में दो बार लगती है।" उसने रुऑसी आवाज मे कहा, "और आप अभी जाना मत। मै अभी तैयार होकर आई।"

"कहाँ जाना है ?"

"मार्केट और कहाँ। चूड़ियाँ लेनी है, मेकअप का सामान खरीदना है, टेलर के यहाँ से लहँगा उठाना है।"

"तो जाओ, जल्दी करो।"

जैसे ही वह मुड़ी, उसने हम लोगो को देखा।

"अरे, आप लोग कब आईं ? आलोक दा, ये दोनो मेरी बुआ है। ये सुमि बुआ, और ये पम्मी बुआ।"

उसने शालीनता से हाथ जोड़ लिए। दिव्या ने हमारे पॉवो को हलका-सा स्पर्श किया और भीतर भाग गई। जाते हुए फिर एक बार आलोक को रुकने के लिए जता गई।

ऐसा शायद पहली बार हुआ था कि उसने मेरा इतना औपचारिक अभिवादन किया हो। नहीं तो वो तो बस लिपट जाती थी, झूम जाती थी। मचल जाती थी कि अभी सूटकेस खोलकर दिखाइए कि हमारे लिए क्या लाई है ?

थोड़ा बुरा तो लगा, पर मैंने मन को समझा लिया कि दिव्या अब बड़ी हो गई है, बच्ची नहीं रही। और सचमुच जब वह तैयार होकर बाहर आई, तो मानना पडा कि वह बडी हो गई है। स्कूल यूनिफॉर्म मे गुड़िया-सी दिखती दिव्या सलवार-सूट में एकदम आकर्षक युवती लग रही थी।

वह बाहर आई, तो भाभी भी साथ थीं। दोनो मे खूब चखचख हो रही थी। मुझे देखते ही दिव्या बोली, "अच्छा बुआ, फंक्शन में एकाध दिन लिपस्टिक लगाने में कोई हर्ज है ?"

मै भाभी का मूड देखकर जवाब सोच रही थी कि भाभी ही बोल उठीं "अरे जब

एकाध बार ही लगानी है, तो अलग से खरीदने की क्या जरूरत है ? अजब तमाशा है ? तीनों का सामान अलग आएगा। बडी तो खैर दुलहन है, पर ये दोनो तो साझे मे काम चला सकती है कि नहीं ? एक हमारा जमाना था, घर मे एक पौडर का डिब्बा आता था, घर-भर लगाता था।"

"हमारा-आपका जमाना बहुत पीछे छूट गया भाभी, हमारे यहॉ तो वह इकलौता पावडर का डिब्बा भी बाबूजी से छुपाकर लाना पडता था। नहीं तो घर मे महाभारत मच जाता था।"

तब तक आलोक और दिव्या फाटक तक पहुॅच चुके थे। आलोक ने स्कूटर स्टार्ट किया और दिव्या उछलकर पीछे बैठ गई। उनके ऑखो से ओझल होते ही पम्मी ने एक विशिष्ट भगिमा से मेरी ओर देखा। मै कुछ समझ पाती, इससे पहले ही भाभी ने उसका मतलब भॉप लिया। तमककर बोली, "पम्मी जी, ज्यादा चतुराई न झाड़ो। सुमि कुछ समझे, न समझे। हम तुम्हारे इशारे खूब समझते है। बेटो वाली हो न, इसीलिए तुम्हारी नाक ऊॅची है। हमे तो पग-पग पर इन लड़को का मुॅह जोहना पड़ता है। इस जमाने मे लडकियों को क्या कहीं अकेले भेजा जा सकता है ? फिर तुम्हारे भैया तो हमेशा कहते रहते है कि तुम एक बेटे के लिए रोती रहती हो। तुम्हारे तो इतने बेटे है, इन्हे ही अपना समझो।"

कहते-कहते उनका गला भर आया था। अनजाने ही पम्मी ने उनकी दुखती रग छू दी थी। बड़ी मुश्किल से उन्हे शात किया जा सका था। इसके बाद मैंने पम्मी से कसम ले ली थी कि जितने दिन रहेगी, शराफत से रहेगी। एक बार भी बदतमीजी की तो मै उसी दम भोपाल लौट जाऊॅगी।

इसके बाद पम्मी ने तो शराफत ओढ़ ली, पर मेरी ही नजरें चोर बन गई। जब भी वे दोनो साथ होते, मै अनचाहे उनकी ही गतिविधियॉ नोट करती रहती। उस घर में आलोक की कोई हैसियत हो न हो, दिव्या के लिए उसका शब्द आदेश था। हर काम मे, हर बात मे आलोक का सहयोग और सहमति आवश्यक थी। अल्पना के लिए आलोक का सर्टिफिकेट चाहिए, नहीं तो वह उसे मिटाकर दुबारा बनाएगी। मेहॅदी का डिजाइन वे पसद करेगे। दिव्या के चेहरे पर कौन-सी हेयर स्टाइल फबेगी, इसे भी वे ही तय करेंगे। कपड़ो का चुनाव तो उन्हीं को करना था। गरज यह कि हर बात में उनकी मुहर का लगना जरूरी था।

लेडीज सगीत वाले दिन की घटना याद आ रही है। उस दिन दिव्या ने खूब रग जमाया। मुझे तो पता ही नहीं था कि वह इतना अच्छा नाच लेती है। उस दिन बहुत सुदर भी लग रही थी किसी ने कहा "दिव्या तुम्हारा चुन्नीबेस मोरपखी है न शादी

वाले दिन लम्हे वाला डांस, 'बागो मे मोर नाचे', मजा आएगा ।"

"नहीं," एक गरज-सी सुनाई दी । हम सब चौंक पड़े । तब तक हमें आलोक की उपस्थिति का अहसास ही नहीं था । हमें पता ही नहीं था कि बरामदे में बैठा वही कैसेट चला रहा था, "शादी मे कोई नहीं नाचेगा ?" उसने सख्त लहजे में कहा ।

"क्यो ?" दिव्या ने इतराकर पूछा ।

"ये कोई फिल्मों का सेट है कि घर की लडकियॉ नाचेंगी ? पता है, ठेठ गॉव की बारात है और गॉवो मे नाचने वाली लड़कियो को अच्छी नजर से नही देखा जाता ।"

"पर मेरे इतने महँगे सूट का क्या होगा ?"

"अपनी शादी पर पहन लेना, पर इस शादी में नाच-वाच नही होगा, कह दिया ।"

और सचमुच नाच नहीं हुआ और न ही दिव्या ने वह सूट पहना, पर उसने जो भी पहना था, उसमे भी वह गजब ढा रही थी । देखने वालों की ऑखे उस पर अटक जाती थी । आलोक को यह भी सहन नहीं हुआ । डपटकर बोला, "तुम्हें दौड-दौड़कर कोल्ड्रिंक सर्व करने की क्या जरूरत है ? ये इतने सारे बेरे यहॉ किसलिए है ?" फिर मुझसे बोला, "बुआ जी, इसमें तो जरा भी अकल नहीं है । जरा आप ही इसे समझाइए और इन उजड्ड गॅवारो को तो देखिए, कैसे ऑख फाड़-फाडकर घूर रहे है, जैसे लडकी पहली बार देख रहे हो । मेरा वश चले तो किसी को उनके सामने ही न पड़ने दूँ ।"

और सचमुच उसने ऐसा ही किया । दिव्या को बुरा तो लगा होगा, पर वह आलोक की अवज्ञा नहीं कर सकी । यह उम्र ऐसी ही होती है । हम जिसे चाहते है, उसकी हर बात सिर-माथे लेते है । दिव्या उम्र के उसी मोड पर थी । आलोक उससे चार-पॉच साल बड़ा था । इसी नाते उसे हिदायतें भी दे रहा था, उसकी हिफाजत भी कर रहा था । मै परेशान हो उठी थी । मैने जिस सच को चार दिन मे पकड लिया था, क्या भैया-भाभी उससे अनजान होंगे ? या कि उनकी नजरो मे दिव्या अब भी बेबी ही थी, या कि फिर यह मेरा ही भ्रम था ?

चित्रा, छाया से तीन साल छोटी थी । तीन साल बाद उसकी भी शादी का नबर आ गया । एम०एस-सी० मे टॉप करके चित्रा उन दिनों आसमान में उड़ रही थी । आई०ए०एस० बनने के ख्वाब देख रही थी । भैया ने अपनी लाड़ली के लिए आई०ए०एस० दूल्हा ही ढूँढ़ दिया ।

मैं और पम्मी तो छाया की शादी के ठाठ देखकर ही दग रह गए थे, पर चित्रा की शादी देखकर लगा कि वह ठाठ-बाट तो कुछ भी नहीं था । इस बार घरातियो के लिए एक शानदार बॅगला किराए पर लिया गया था बारातियों का इतजाम तो थ्री स्टार होटल

मे था । दहेज का सामान देखकर तो ऑखे चकाचौंध हो गई । सब कुछ इम्पोर्टेड था । तीस तोला सोना और चॉदी के बर्तनों का पूरा सेट । साडी कोई भी दो हजार से कम की नहीं होगी । पिछली बार की तरह इस बार भी हम विस्मय-विमुग्ध थे । क्या सचमुच भैया की इतनी हैसियत है ?

लेकिन इस शाही सरजाम के बावजूद बारातियों के मिजाज नहीं मिल रहे थे । बार-बार शिकायते आ रही थी, "रूम सर्विस ठीक नहीं है, ए०सी० काम नहीं कर रहा, कमरे मे कलर टी०वी० नहीं है, फोन पर एस०टी०डी० सुविधा नही है ।"

भैया बार-बार फोन पर गिड़गिड़ाए जा रहे थे, "सर, मैने तो इस शहर का सबसे पॉश होटल आपके लिए बुक करवाया है । इससे अधिक मै क्या कर सकता हूँ ?"

अपने धीर, गंभीर, विद्वान् और रौब-दाब वाले भाई को इस तरह गिड़गिडाते देखना बडा बुरा लग रहा था । उधर होटल वाले बारातियो की बदतमीजियो की शिकायत किए जा रहे थे । भैया अजीब पसोपेश मे थे ।

उन लोगो की बदतमीजी का प्रमाण तो द्वाराचार के समय ही मिल गया । नाचते-नाचते तीन घंटे तो उन लोगो ने रास्ते मे ही लगा दिए । भैया के सारे गण्यमान्य अतिथि भाभी के हाथ मे लिफाफा थमाकर बिना खाए-पिए ही चले गए । अपनी बेटी के लिए भैया ने हीरे जैसा दामाद ढूँढ़ा था, पर उसका प्रदर्शन करने की तमन्ना अधूरी ही रह गई ।

बाद मे लगा कि अच्छा ही हुआ, जो सब लोग जल्दी चले गए । बाद का नजारा जरा भी देखने लायक नहीं था । सब लोग, खासकर लडके नशे मे धुत्त थे । वे लोग अश्लील गाने गा रहे थे । भद्दी फब्तियॉ कस रहे थे । वे लोग कोल्ड्रिक से होली खेल रहे थे । गिलासों को फुटबॉल की तरह लुढका रहे थे । एक-दो वेटरो के साथ तो झूमा-झटकी भी हो गई । सजे-सॅवरे पडाल का उन्होने पल-भर में नक्शा बदल दिया । कॅटरर के साथ बदसलूकी की, तो वह जाने की धमकी देने लगा । अब भैया कभी उसके हाथ जोड रहे थे, तो कभी उन लडकों के । मेरा तो खून खौल उठा था । बडी मुश्किल से अपने ऊपर जब्त किए रही । ऐसा न हो कि अपनी वजह मे रग मे भग हो जाए ।

उधर भाभी बार-बार ऑसू पोछते हुए अपने भाग्य को कोस रही थीं, "काश, एक बेटा होता, तो आज बाप के साथ खडा तो होता ।"

वहाँ जो एक सुपुत्र थे, यानी कि सन-इन-लॉ प्रो० जीतेद्र, बडे ही निर्लिप्त भाव मे सारा तमाशा देख रहे थे । मौका पाते ही उन्होने हॅसते हुए कहा, "बुआजी, देख रही है न, अब इन्हें पता चलेगा कि बारातियो के नखरे क्या होते है ? हमारा तो गॅवई गॉव का परिवार था उसे धर्मशाला में टिका दिया पॉच मिठाइयों वाली पगत दे दी छुट्टी पा

गए। हमारा तो खैर कोई सवाल ही नहीं था। हम तो लिहाज मे ही मारे गए। पापाजी को अब आनद आ रहा होगा।"

पापाजी की फजीहत का सबसे ज्यादा आनंद तो खुद जीतेंद्र ही उठा रहे थे। सब कुछ देखकर उन्हे बड़ा आसुरी सतोष मिल रहा था। मुझे तो छाया पर तरस आ रहा था। दीन-दुनिया से बेखबर, बस अपनी छुटकी मे ही मगन थी। एक गोद में, एक पेट मे। दोनो बच्चों ने उसे हलकान कर रखा था। दूसरो की ओर ध्यान देने का उसे अवकाश ही नहीं था।

सबसे ज्यादा ताव तो मुझे चित्रा पर आ रहा था। महँगा ब्राइडल मेकअप करवाकर ऐसे तनी बैठी थी, मानो विश्वसुंदरी का खिताब जीत लिया हो। लड़के पापा का अपमान कर रहे थे, मखौल उडा रहे थे, बेजा फरमाइशे कर रहे थे। उसे जैसे किसी चीज से सरोकार ही नहीं था। स्टेज पर बैठी मद-मंद मुस्करा रही थी। अपने नए-नवेले पति से बतिया रही थी।

"यह लड़की है या बरफ का गोला ? मेरा तो यह सब देख-देखकर खून खौल रहा है, पर इसे देखो, माथे पर शिकन तक नहीं है।"

"दीदी, खून-खून मे फर्क होता है," पम्मी ने गंभीरता से कहा, "हमारा-तुम्हारा खून खौलता है, क्योंकि वह पसीने की कमाई से बना है। यहाँ का हाल तो तुम जानती ही हो।" पम्मी बात कडवी करती है, पर वह अकसर सच होती है। सचमुच हम लोग तो इतना अपमान बर्दाश्त ही नहीं कर पाते।

मुझे बाईस साल पुरानी घटना याद हो आई। बारातियो के वही परपरागत तेवर थे। वधू पक्ष उसी तरह क्षमा-याचना की मुद्रा मे खडा था। मान-मनुहार हो रही थी। पता नहीं किससे क्या बदसलूकी हो गई थी कि बाराती नाराज हो गए थे। दूल्हे की घोडी दरवाजे पर रोक दी गई थी और मान-मनोव्वल का दौर जारी था।

छज्जा मेरी सहेलियो से पट गया था। सब दूल्हे को देखने के लिए बेताब थीं और दूल्हा था कि दूर सड़क पर ही खड़ा हो गया था।

खुसर-फुसर सुनकर मुझसे भी कमरे में नहीं बैठा गया। मै भी अपनी बनारसी साडी सँभालती हुई सखियो के पीछे आ खड़ी हुई। ऊपर से देखा, बाबूजी, भैया, चाचाजी सबके सब हाथ जोड़कर प्रार्थना किए जा रहे है और सामने वाले तनी हुई मुद्रा मे खडे है। मेरा खून तो जैसे उबलने लगा। कनपटियाँ फडकने लगीं। तभी सुना, कोई सिरफिरा बिगड़ैल नौजवान बाबूजी से कह रहा है, "ऐ मास्टर, अपनी औकात में रहो। ज्यादा लप्पन-छप्पन की जरूरत नहीं है।"

यह सुनना था कि मुझे तो जैसे आग लग गई। मै दनादन सीढियाँ फलाँगती नीचे

उतर आई । बीच मडप में आकर मैने ऐलान कर दिया, "बाबूजी, इन लोगों को बिदा कर दीजिए । यह शादी नहीं हो सकती ।"

सब लोग एकदम सन्न रह गए । अम्मा तो बेहोश ही हो गईं । अब भैया-भाभी, चाचा सब मुझे समझाने मे जुट गए । बाबूजी ने भी कहा, "बेटा, यह कोई अनोखी बात नहीं है । ऐसा तो होता ही रहता है । हिंदुस्तान मे हर बाराती अपने को राजा समझता है और बेटी का बाप दुनिया का सबसे निरीह और असहाय प्राणी । उसे इन जिल्लतों से गुजरना ही पडता है, पर तू इतनी-सी बात के लिए अपनी जिदगी तबाह न कर ।"

"नहीं बाबूजी, यह मेरे लिए इतनी-सी बात नहीं है । ऐसे सस्कारहीन परिवार मे मेरा गुजारा नहीं हो सकता । इससे तो मै कुँआरी ही भली हूँ ।"

लिहाजा बारात बेरग लौटा दी गई । हिंदुस्तान मे जिस लड़की के घर से बारात लौट जाती है, उसकी शादी फिर आसानी से नही हो पाती । मेरी भी नहीं हो पाई । बाबूजी को जिदगी-भर इसका मलाल रहा । भैया-भाभी को तो अच्छा बहाना मिल गया । उन्होने तो यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि अब हम पम्मी की शादी का भी जोखिम नहीं लेंगे । बेकार मे जगहँसाई होती है ।

पम्मी ने भी किसी को जहमत नहीं दी । किसी के अहसान नहीं लिए । उसने खुद अपना पति चुन लिया और मदिर मे फेरे ले लिए । घरवालो को बाद मे सूचना भेज दी । उसे गर्व है कि उसके लिए न किसी ने जूते चटकाए, न किसी के पैर पूजे ।

पिछली पीढ़ी की लड़कियाँ थीं हम, फिर भी इतना साहस कर सकीं और ये तथा-कथित आधुनिकाएँ ।

एक केवल दिव्या ही थी, जो छाया की तरह पापा के साथ लगी हुई थी । उसे देखकर लडके और बहक रहे थे, पर वह अपना संयम बनाए हुए थी । उत्तेजना से कई बार उसका चेहरा लाल हो जाता था, माथे की नसें तन जाती थीं, पर उसने अपनी गरिमा बनाए रखी, जिससे अभद्रता अपने आप लज्जित होती रही । उसे चिता थी, तो पापा के बी०पी० की । इसलिए वह उन्हें यथासंभव तनावमुक्त रखने का प्रयास कर रही थी । सच, इन दो-तीन सालो मे ही वह कितनी परिपक्व हो गई थी ।

मुझे अनायास आलोक की याद हो आई । वह होता, तो क्या दिव्या को इन भेडियों के बीच जाने देता । अगर वह होता, तो जीतेद्र की तरह खड़े-खड़े तमाशा नहीं देखता । एक ढाल की तरह, अगरक्षक की तरह दिव्या के साथ होता और उसका साथ होना ही लोगो पर रौब डालने के लिए काफी होता ।

बिना किसी बडी दुर्घटना के जब खाना-पीना समाप्त हो गया, तो सबने चैन की साँस ली । थोड़ी-सी फुरसत मिली तो मैने दिव्या से पूछा, "तुम्हारे आलोक दा नजर नहीं

आए ?"

"वे तो कब के पास होकर चले गए।"

"उन्हे निमंत्रण नहीं दिया ?"

"पापा के इतने सारे स्टुडेंट्स है। किस-किस को निमत्रण देंगे ? फिर आलोक दा का तो पता भी हमारे पास नहीं है। उन्होने कभी सपर्क करने की कोशिश ही नहीं की।"

मैंने पैनी नजरों से उसकी ऑखो मे झॉककर देखा, चेहरा पढने की कोशिश की, पर मुझे वहॉ कुछ नहीं मिला। क्या बचपन के साथ बचपन का प्यार भी हवा हो गया ? या कि वहॉ ऐसा कुछ था ही नहीं ?

दिव्या जब किसी काम से उठकर चली गई, तो छाया ने अपनी छुटकी को थपकते हुए कहा, "एक बात बताऊॅ, बुआ ? किसी से कहोगी तो नहीं ? पम्मी बुआ से तो बिलकुल भी नहीं।"

"नहीं कहूॅगी। किसी से भी नहीं कहूॅगी। बताओ, क्या बात है ?"

"अगर चाहते, तो आलोक को भी बुला सकते थे। पते की कोई समस्या नही थी। यहीं का तो है वह। कोई भी घर से पता ले आता, पर जानबूझकर नहीं बुलाया।"

"क्यों ?"

"आपको पता है, उसने क्या किया ?"

"क्या किया ?"

"अरे, ये लडके होते ही ऐसे है। उॅगली दो तो पहुॅचा ही पकड़ लेते है।"

"मतलब ?"

"अरे, बडा भाई जानकर दिव्या थोड़ा हॅस-बोल लेती थी। जनाब पता नहीं क्या समझ बैठे ! जाते हुए पापा से दिव्या का हाथ ही माँग बैठे।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? मम्मी ने ऐसा फटकारा कि बच्चू जिंदगी-भर याद रखेगे।"

"दिव्या ने क्या कहा ?"

"वह क्या कहेगी ? उसे तो हमने भनक तक नहीं लगने दी। बेचारी गले-गले तक पी०एम०टी० की पढ़ाई मे डूबी हुई थी। उसे डिस्टर्ब करने की तो कोई तुक ही नही थी। उसका कैरियर चौपट हो जाता।"

अच्छा ही हुआ कि मैने उसे यह नहीं बताया कि आलोक का नया पता मुझे मालूम है। अभी साल-भर पहले की ही तो बात है, केमेस्ट्री का प्रेक्टिकल लेने मै एक कस्बे में गई थी। आजकल हर कहीं कॉलेज खुल गए है। छोटा-सा कस्बा था। कॉलेज की छोटी-सी

इमारत थी । पता चला, यहॉ तीनो फॅकल्टी है । लॉ क्लासेस रात मे लगती है ।

जैसे ही भीतर प्रविष्ट हुई, एक गोरे-चिट्टे युवक ने आकर प्रणाम किया, "बुआजी, पहचाना ?"

क्षण-भर सोचकर मैने कहा, "आलोक हो न ?"

"चलिए, पहचान तो लिया ?"

"तुम यहॉ क्या कर रहे हो ?"

"जी, हिस्ट्री मे एम०ए० कर रहा हूँ ।"

"हिस्ट्री मे ? क्यों ?"

"जी, अग्रेजी में तो गोल्ड मेडल मिला नहीं । सोचा, हिस्ट्री मे ट्राय कर लेते है । वैसे आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा हूँ । लोग सोचते है कि उसमें हिस्ट्री बड़े काम आती है । तो मैने सोचा'''।"

"अरे, तो उसके लिए शहर में रहकर कोचिग लो न । यहॉ क्यों पडे हो ?"

"यहॉ एक हायर सेकडरी स्कूल मे जॉब ले लिया है । सुबह कॉलेज मे पढ़ता हूँ, दोपहर स्कूल मे पढाता हूँ । थोड़ा पैसा जमा कर लूँ, फिर कोचिंग के लिए दिल्ली चला जाऊँगा ।"

मुझे उसकी आर्थिक स्थिति के बारे मे ठीक ज्ञान नहीं था, इसलिए मैने ज्यादा कुरेदना ठीक नहीं समझा, फिर उसी ने पूछा, "आप यहॉ कब तक है ?"

"बस, आज भर को । सुना है, वापसी की गाड़ी रात मे मिलेगी ।"

"तो फिर ठीक है । शाम को आता हूँ । कुछ देर मेरे कमरे मे आराम कर लीजिएगा, फिर थोडा घुमा लाऊँगा । रात को ट्रेन पर भी चढा दूँगा ।"

मैने उसका निमत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया । उसे देखकर मुझे इतनी खुशी हुई थी कि मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा था । सच तो यह है कि अजनबी शहर मे एक भी चेहरा जाना-पहचाना मिल जाए, तो बड़ा सुकून मिलता है । कॉलेज वालो को उसने मेरे आतिथ्य का मौका ही नहीं दिया । स्कूटर पर बिठाकर सीधे अपने कमरे पर ले गया । वहॉ नाश्ते का, चाय का पूरा सरजाम था ।

फ्रेश होने के बाद चाय पीते हुए मैने बातो का सिलसिला शुरू किया, "दिव्या का मेडिकल मे हो गया है । तुम्हे पता तो होगा ?"

"अच्छा ? कहॉ हुआ है ?"

"जबलपुर मे । कमाल है । यह दूसरा साल चल रहा है और तुम्हें पता भी नहीं । तुम तो उसके गुरु हुआ करते थे ।"

"अरे काहे का गुरु ? वह तो एक बेगार थी जो मैं ढो रहा था आटीजी तो हर

किसी से कुछ न कुछ काम लेने मे माहिर थीं । मैने बी०एस-सी० किया था । इमलिए दिव्या की कोचिंग मेरे गले पड गई ।"

"यह बात तो तुम ठीक कहते हो । हमारी भाभी इस मामले मे बडी उस्ताद है । उन्हे डर भी नहीं लगता । घर में तीन-तीन जवान लडकियाँ है, फिर भी लडको का जमघट लगा रहता है । पता नही, भैया को यह सब कैसे अच्छा लगता है । पता है, एक जमाने में वे इतने स्ट्रिक्ट हुआ करते थे कि हमारे लिए उनके दोस्तो के सामने निकलना तक मना था । पानी भी देना होता था, तो दरवाजे के भीतर से ट्रे पकड़ाते थे ।"

"सर को तो शायद अब भी ये सब अच्छा नहीं लगता । दबी जबान से कहते भी है कि बच्चो को पढने-लिखने दो, क्यों अटकाकर रखती हो, पर आटी कहाँ मानती है । कहती है, हर जगह तो मै लड़कियो को नही भेज सकती ? कुछ काम तो लड़कों के ही करने के होते है ।"

"भाभी के पास यही एक हथियार तो है, जिसके बल पर वे भैया को चुप करा देती है ?"

"माफ कीजिए, पर आपके भैया इतने बेचारे भी नहीं है । गुरु निंदा नहीं करनी चाहिए, पाप लगता है, पर सच बात जबान पर आ ही जाती है । सर खुद कुछ नहीं कहते, बस, आटी के कधे पर रखकर बदूक चलाते है ।"

"मतलब ?"

"आटी सिर्फ काम ही करवाती है, ऐसा नहीं है । दुनिया-भर का सामान भी मॅगवाती रहती है । जिसने भी पैसे माँगे, समझ लो, हमेशा के लिए खारिज हो गया और घर के कमाऊ व्यक्ति को यह तो नजर आता ही होगा कि घर मे जो बेहिसाब सामान आ रहा है, वह उसकी आमदनी के अनुपात से बहुत ज्यादा है, फिर भी वे चुप रहते है । इसका मतलब साफ है, उनकी इस मामले में मूक सम्मति है ।"

मै चुपचाप चाय गटकती रही । जवाब मे कहती भी क्या ?

"आपके सामने यह सब कहना अच्छा नहीं लग रहा है, पर एक बार बात चल निकली है, तो रोकना भी मुश्किल है । मुझे गोल्ड मेडल नहीं मिला, बहुत बुरा लगा । किसी और को मिलता, तो शायद इतना दु:ख नहीं होता, पर वह बनिए का बेटा मुकुद हम सबसे बाजी मार ले गया । इसके लिए वह साल-भर तक सर के घर का आटा पिसवाता रहा, टेलीफोन और बिजली के बिल भरता रहा, उनकी गाड़ी धुलवाता रहा । छाया दीदी की शादी का तो सारा इतजाम उसके जिम्मे था । उसका फल भी उसे मिल गया । मेरी न तो इतनी हैसियत थी, न यह तरीका मुझे गवारा था । सर ने जीतेंद्र भैया को भी इसी तरह मेरिट दिलवाई थी । मुकुद के समय भी उन्होने यही उठा-पटक की

खुद अपने हाथों से निबंध के पॉइंट्स बना-बनाकर उसे दिए थे। मैंने मुकुंद की फाइल में खुद देखे थे। एक यही पेपर तो था, जिसमें मैं मात खा गया। लोग कहते है, आजकल के लडको को गुरुओं पर श्रद्धा नही रही। आप ही बताइए, ऐसे में श्रद्धा टिक सकती है ?"

लडका वाकई बहुत हताश, बहुत उदास हो गया था। मैंने उसकी पीठ थपथपाकर कहा, "तुम तो बहुत जहीन लड़के हो आलोक, हर कहीं तो ये मुकुंद तुम्हारा रास्ता नहीं रोक सकता ? देखना, एक दिन तुम उससे बहुत आगे निकल जाओगे। वह तुम्हारी छाया भी छू नहीं पाएगा।"

वह फीकी-सी हँसी हँस दिया था। अब लगता है, वह लड़का कितना शालीन, कितना सुसंस्कृत है। उसने सिर्फ अपने गोल्ड मेडल की बात की थी। दिव्या का दर्द वह साफ छिपा गया था।

दिव्या की शादी का निमंत्रण बिना किसी पूर्व सूचना के फोन पर ही मिला था। वहाँ पहुँचकर देखा, निमत्रण जितना अनौपचारिक था, शादी का कार्यक्रम भी उसके अनुरूप ही था। मै एक दिन पहले पहुँची थी, फिर भी घर मे जरा भी चहल-पहल नहीं थी। मेहमानों के नाम पर मै थी, पम्मी थी, दिव्या के मामा-मामी थे और छाया, चित्रा का परिवार था। पता चला, बाराती भी कुल जमा पाँच ही होंगे। वे लोग सुबह की फ्लाइट से आएँगे, घर मे चाय-नाश्ता होगा, फिर सब लोग आर्य समाज मंदिर चले चलेंगे। वहाँ जरूरी रस्मे करवाई जाएँगी। लौटते हुए होटल मे शानदार खाना होगा और शाम की फ्लाइट से वे लोग दुलहन को लेकर रवाना हो जाएँगे।

मैंने कहा, "यह क्या बात हुई भैया ? इस घर की, इस पीढ़ी की यह आखिरी शादी है, कुछ तो धूमधाम होनी चाहिए। शाम को एक अच्छा-सा रिसेप्शन ही दे देते।"

"अपनी लाड़ली से पूछो, वह इसी शर्त पर तो राजी हुई है। नहीं तो रजिस्टर्ड मैरेज के लिए ही अड़ी हुई थी, पर हमारा मन नहीं मान रहा था। हमने कहा, सादगी से ही सही, सस्कार तो होने चाहिए। बड़ी मुश्किल से तैयार हुई है।"

दिव्या ने कहा, "अब इस घर मे दो-दो हगामे हो तो चुके है। तीसरा नहीं भी हुआ, तो क्या फर्क पडता है ? अब तुम्हीं बताओ बुआ, उतना सब झेलना क्या अब पापा के वश का है। फाइनेंशियली भी और फिजीकली भी, ही इज ए वीक मैन, यू नो।" और वो काम तो ऐसा है कि एक बार शुरू हो गया, तो समेटने वाला कौन है ? रिटायरमेंट के बाद अब तो विद्यार्थियों का आसरा भी नहीं रहा। मैं दुलहन बनकर मंडप में बैठ जाऊँगी तो लोगो से कोई पानी पूछने वाला भी नहीं होगा हमारी दीदी लोगों के मिजाज

तो तुम देख ही रही हो ।" और फिर जब लड़के वालो को इन चीजो मे कोई दिलचस्पी नही है, तो हमे क्या पडी है ।"

"भाभी वता रही थीं कि तुमने गहने, कपडे, कुछ भी लेने से इकार कर दिया है ?"

"यह बताओ कि अब देने के लिए इन लोगो के पास कुछ शेष भी है ? दोनो शादियों ने पापा को एकदम निचोडकर रख दिया है । अब जो ग्रेच्युटी और फड वगैरह की रकम मिली है, वही उनकी जेब मे कुलबुला रही है । वही सब मुझ पर खर्च कर देंगे तो बाकी जिंदगी क्या करेंगे ? किसका मुंह देखेंगे ? अपने को फकीर बनाकर वे यदि मुझे कुछ देते भी है, तो वह मेरे साथ तो जाएगा नही । मास के लॉकर मे पड़ा रहेगा । उनके वॉर्डरोब की शोभा बढ़ाएगा, इसमे क्या तुक है ?"

"उन लोगो ने कुछ मॉग नहीं की ?"

"नहीं, सिर्फ मेरा एयर फेयर मॉगा है । मै तो इसके लिए भी तैयार नहीं थी, क्योंकि शादी के बाद यह एक तरह से उनकी जिम्मेदारी है, पर पापा ने कहा, मुझे कम से कम बेटी को बिदा करने का श्रेय तो लेने दो, तो मुझे चुप हो जाना पड़ा ।"

मै तो दग रह गई । वह नन्ही-सी गुडिया, कितनी समझदार हो गई थी ! कितनी दूर तक का सोच रही थी ! अपने मम्मी-पापा की उसे कितनी चिंता थी ! भैया के तीनो बच्चों मे वह सबसे ज्यादा सहृदय और समझदार थी । वही लड़की अब इतनी दूर जा रही थी ।

खुशी की बात यही थी कि लडका भी बडा हँसमुख और सुलझा हुआ था । पिछले छह सालों से बाहर था, पर अभी तक अपनी सस्कृति, अपनी सभ्यता को भूला नहीं था । लोग भी बडे सज्जन लगे । नहीं तो अपने ग्रीन कार्ड होल्डर बेटे को कोई यूँ सेत मेत मे ब्याह देता है क्या ?

अपनी बर्थ पर लेटे-लेटे मैं अविनाश का, दिव्या के पति का चेहरा याद करने की कोशिश कर रही थी । देखने मे तो बडा सौम्य और सुशील लग रहा था, पर जो युवक छह साल तक अकेले अमेरिका जैसे देश में रहा हो, उसके बारे में क्या कहा जा सकता है । हो सकता है, उसका वहॉ कोई अफेयर हो और मॉ-बाप की मर्जी की खातिर ही वह इस शादी के लिए राजी हुआ हो ।

पर उसके मॉ-बाप इतने दकियानूस तो नहीं लगे । न ही दिव्या इतनी दब्बू थी कि चुपचाप अन्याय सह लेती । वह तो उलटे पैरो वापस आ जाती, फिर कहाँ क्या गड़बड हो गई ?

इन तीन सालों में मुझे उसका एक ही पत्र मिला था अपने उस इकलौते पत्र मे

वह अपने काम से, अपने जीवन से बडी खुश नजर आ रही थी । वह आमाशय की किसी बीमारी पर रिसर्च कर रही थी । पत्र में उसने अपनी लैब, वहाँ के साधन, वरिष्ठो के सहयोग और प्रोत्साहन के विषय मे विस्तार से लिखा था ।

उसने पत्र मे लिखा था कि बुआ, अगर यही सब हमे अपने घर में मिलने लगे, तो अपनी जड़ो से कटकर कोई इतनी दूर क्यो जाना चाहेगा ? दरअसल उसे खुद अपनी जडो से कटना, अपनो से दूर जाना बहुत साल रहा था । शादी वाले दिन भी मुझसे कह रही थी कि 'अगर मेरा वश चलता तो मम्मी-पापा को इस उम्र मे अकेला छोडकर मै कहीं नहीं जाती ।' तब मैंने ही उसको दिलासा दिया था, 'पागल, आजकल घर मे रहता कौन है ? लड़का हो या लड़की, सब बाहर भागते है । सबकी अपनी महत्त्वाकाक्षाएँ होती है । इसीलिए माँ-बाप भी बाधा नही डालते । तुम अपने अविनाश को ही ले लो । उसे घर छोड़े कितने साल हो गए ? और आजकल तो टेलीफोन है, हवाई जहाज है, दुनिया इतनी सिमट गई है कि दूरियों का पता ही नहीं चलता ।'

घर इस बार भी मेहमानो से भरा हुआ था, पर इस बार माहौल मे वह रौनक नहीं थी । पूरे वातावरण में एक उदासी घुल गई थी । भैया एकदम टूट गए थे । दु ख की इस घडी मे वह एकदम अकेले पड़ गए थे । भाभी रो-रोकर बेहाल हुई जा रही थीं । उन्हे अपनी ही सुध नहीं थी, वह भैया को क्या देखतीं । घर में उनके पीहर वालो का ही जमघट था । वे चौबीसो घटे उन्हीं को घेरे रहते । छाया को भी बच्चो की साज-सँभाल से जितना वक्त मिलता, वह माँ की सेवा-सुश्रूषा में लगा देती । भैया के लिए किसी के पास वक्त नही था, या फिर उनके दुःख का किसी को अंदाजा नहीं था ।

मेरे वहाँ पहुँचने से भैया को बहुत राहत मिली । पम्मी भी आ जाती, तो बहुत अच्छा होता, पर उसका अभी-अभी अपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ था । वह इतना लबा सफर करने की स्थिति में नहीं थी ।

मातमपुरसी वालो का ताँता लगा हुआ था । उनके पास भैया को ही बैठना पडता था । छाया को छोड़कर जीतेंद्र भी अपनी नौकरी पर लौट गए थे । मै पहुँच गई, तो लोगो से मिलने का भार मैंने अपने ऊपर ले लिया । लोगो को सहानुभूति कम और उत्सुकता ज्यादा थी । क्या हुआ ? कैसे हुआ ? क्यो हुआ ? वे लोग प्रश्नो की झड़ी लगा देते । दुःख तो यह था कि इनमे से एक भी प्रश्न का उत्तर हमारे पास नहीं था । हम लोग खुद चित्रा और अंकित की प्रतीक्षा कर रहे थे । उन लोगो ने वहाँ से बस एक बार फोन किया था । सिर्फ अपने सकुशल पहुँचने की सूचना दी थी और कहा था, 'बाकी बाते घर आकर होगी ।'

मतलब यह कि हमारे लिए वे दु ख की घडियाँ भी निरापद नहीं थीं । मन में तरह-तरह की शंकाओं का ज्वार उठता रहता था ।

रोज की डाक में करीब पाँच-छह पत्र आ जाते थे । उनका जिम्मा भी मैंने अपने ऊपर ले लिया । सोच लिया कि एक आभार-पत्र छपवाकर सब दूर भेज दूँगी । इसके लिए भैया को परेशान नहीं करूँगी ।

दो-तीन दिन बाद मैंने भैया से धीरे से पूछा, "दिव्या की ससुराल से कोई नहीं आया ?"

"वे लोग क्यों आएँगे ?"

"क्यों ? अगर यह हादसा अविनाश के साथ होता, तो आप जाते कि नहीं ? छाया बतला रही थी कि उन लोगों ने तो अब तक एक फोन भी नहीं किया ?"

"कहाँ किया ? डीटेल्स जानने के लिए मैंने ही एक बार लगाया था, तो किसी ने ढग से बात भी नहीं की ।"

"अच्छा, ऐसी भी क्या नाराजगी है ?"

"नाराजगी तो है ।"

"क्यों ?"

भैया ने टोह लेने की गरज से इधर-उधर देखा, फिर बोले, "चल, ऊपर छत पर चलते हैं । थोडा खुली हवा में बैठेंगे । यहाँ तो दम घुटने लगता है ।"

"आपको सीढ़ियाँ चढ़ना मना है न ?"

"अरे, कुछ नहीं होता । जब इतना बड़ा घाव झेल गया, तो एकाध बार सीढ़ी चढने से कुछ नहीं होगा ।"

मैं समझ गई कि खुली हवा का तो बहाना है । भैया मुझसे कुछ कहना चाहते हैं । इसलिए फिर मैंने प्रतिवाद नहीं किया । छत पर हमेशा की तरह, दो बेत की कुर्सियाँ पडी हुई थीं । वहाँ बैठकर थोड़ा सुस्ताने के बाद भैया बोले, "यह बात मैंने तुम्हारी भाभी को भी नहीं बताई थी । किसी को भी नहीं बताता, पर अब लग रहा है, इसे मन में रक्खे-रक्खे मेरी छाती फट जाएगी । इसीलिए तुमसे कह रहा हूँ, सिर्फ तुमसे ।"

"आप मेरी ओर से निश्चिंत रहिए भैया, आपकी बात कहीं नहीं जाएगी । सिर्फ मुझ तक ही रहेगी ।"

"इसका विश्वास है, तभी तो" भैया कुछ देर चुप रहे, फिर बोले, "एक बार उनका फोन आया था ।"

"किसका ? दिव्या के ससुर का ?"

"हाँ बोले अविनाश वापस आना चाहता है । आकर यहाँ अपना नर्सिंग होम

खोलना चाहता है। मुझे पहले से पता नहीं था। मैंने तो अपनी सारी पूँजी अभिलाष को दे दी। अब मेरे पास कुछ भी नही है।"

"अभिलाष कौन ? उनका बडा बेटा ?"

"हाँ, पति-पत्नी दोनो डॉक्टर है। दोनो ने सरकारी नौकरी छोडकर अपना नर्सिंग होम शुरू किया है। तीन मजिला बिल्डिग बना ली है।"

"आपने क्या जवाब दिया ?"

"मैंने कहा, देखिए, मुझसे जो भी बन पड़ेगा, मदद करूँगा, पर मेरे पास एकमुश्त इतनी रकम कहाँ है कि नर्सिग होम बन सके। तीन-तीन बेटियों की शादी कर चुका हूँ, तो तपाक से बोले, हमने तो आपसे कुछ नहीं लिया। न ही शादी मे एक पाई भी खर्च होने दी।"

"तो क्या अब वसूलने का इरादा है ?"

"मैंने उनसे कहा कि यह आपका बड़प्पन है कि आपने इतनी सादगी से शादी की, पर मेरे पास हार्ड कैश सचमुच बहुत कम है। नाममात्र को है, तो बोले, आपके पास इतना बडा मकान तो है। इसे बेच दीजिए। वैसे भी आप दो प्राणी है। इतने बड़े मकान का क्या करेगे ? कहीं अच्छा-सा फ्लैट ले लीजिए। मैंटेन करने मे भी सुविधा रहती है।"

"फिर आपने क्या कहा ?"

"क्या कहता ? मेरा तो दिमाग सुन्न हो गया था। मैंने कहा, सोचकर बताऊँगा, तो दूसरे दिन फिर उनका फोन आ गया। मैंने कहा, देखिए, यह मकान मेरे अकेले का नहीं है। यह मेरी पुश्तैनी संपत्ति है। इस पर मेरी बहनो का भी हक है और बेटियो का भी। कुछ भी करने से पहले सबकी सहमति लेनी होगी। अगर बेचता हूँ, तो सबको हिस्सा भी देना पडेगा।"

मुझे तो आज पहली बार पता चला कि इस मकान पर मेरा भी हक है। मैंने मन ही मन बाबूजी की दूरदर्शिता को धन्यवाद दिया कि उन्होंने जमीन वेचकर शहर में यह हवेलीनुमा मकान खरीद लिया था। उनकी नौकरी में तो यह कभी भी सभव नहीं था। मुझे खुशी भी हुई कि भैया इस पर हमारे हक को स्वीकार कर रहे है। खुशी के उस आवेग मे मैंने कहा, "भैया, औरो की बात तो मै नहीं जानती, पर मैंने अपना हक आपको दिया।"

भैया सूखी हँसी हँसकर बोले, "अब तो खैर उसकी कोई जरूरत ही नहीं है, पर तुम्हारे विषय में मैं उस समय भी निश्चित था, पर और लोग अपना हक कैसे छोड़ देते, और क्यों छोड़ते ? पम्मी को तो मैंने शादी पर भी कुछ नहीं दिया था, छाया को तीन बेटिया ब्याहनी है चित्रा का जरूरत नहीं है फिर भी सबको देने के बाद जो बचता

उसमे या तो हमारे सिर पर छत बचती या अविनाश का नर्सिंग होम खड़ा होता ।"

"फिर ?"

"मैने उन्हें अपनी समस्या बताई, तो बोले, देखिए, वह मेरा बेटा है. उसके लिए मै तो कुछ न कुछ करूँगा ही, चाहे मुझे पत्नी के गहने ही क्यो न बेचने पडे । आपके कान में बात डालने का मकसद सिर्फ इतना था कि वह आपका भी कुछ लगता है । इसलिए आपका भी कुछ फर्ज बनता है । इस समय वहाँ बहुत रिसीशन चल रहा है । बाहर वालो को जबरदस्ती रिटायर करके स्वदेश भेजा जा रहा है । इसलिए वह बहुत इनसिक्योर फील कर रहा है । मै उसे आश्वस्त करना चाहता हूँ । कहने को तो घर मे भी एक नर्सिंग होम है, पर वहाँ उसका काम करना ठीक नही होगा । वह हमेशा अपने आपको भाई का मातहत समझेगा । इस समय उसकी मन स्थिति इतनी विचित्र है कि जरा-से मे उसका ईगो हर्ट हो सकता है ।"

"भैया, मुझे तो यह सारा प्रोजेक्ट ही विचित्र लग रहा है ।"

"फिर उन्होंने एक और सुझाव दिया, आप ऐसा क्यो नही करते कि ऊपर अपने लिए दो कमरे बनवा ले । नीचे का हिस्सा बच्चों के लिए छोड़ दे । वे अपने हिसाब से उसे डेवलप कर लेंगे ।"

"भैया, मुझे लगता है, उनका शुरू से ही यह मकसद रहा होगा । वे बडी चतुराई से, धीरे-धीरे असली बात पर आना चाहते थे ।"

"क्या पता, मुझे अगर पता होता कि यह सवाल दिव्या की जिदगी से जुडा है, तो एक मिनट मे मकान खाली कर देता । भले ही सारी जिदगी सड़क पर गुजारनी पड़ती ।"

"आपने दिव्या से तो बात की होगी ?"

"हॉ, मैने डॉक्टर साहब से सोचने के लिए थोड़ा और वक्त मॉग लिया और दिव्या को फोन किया । सुनकर वह तो जैसे आसमान से गिरी । उसे तो कुछ भी पता नही था । तुम्हें तो मालूम है, वह जो भी काम करती थी, लगकर करती थी । उस समय भी वह अपनी रिसर्च मे मशरूफ थी । उसकी दुनिया लैब में ही सिमटकर रह गई थी । बाहर कैसी हवा बह रही है, उसे मालूम नहीं था । उसने कहा, पापा, आप परेशान न हों । मै दो दिन बाद फोन करती हूँ ।"

"फिर किया ?"

"हॉ, पूरे छह दिन बाद किया । बताया कि किसी गलत इजेक्शन के कारण अविनाश के एक मरीज की मृत्यु हो गई थी । उसे सस्पैड कर दिया गया है । उस पर डी०ई० चल रहा है । उसे अपना लाइसेंस छिन जाने का डर है । इसीलिए वह जल्द से जल्द भारत लौटना चाहता है ।"

"इतनी बडी घटना हो गई और दिव्या को, उसकी पत्नी को कुछ पता नहीं था ?"

"यही तो । वैसे इसमें दिव्या का भी दोष है । उसे भी थोडा चौकस रहना चाहिए था । पति की हर बात का ध्यान रखना चाहिए था । मेरे फोन के बाद उसने अविनाश से बात की । तब भी उसने कुछ नहीं बताया । यह तो उसने बाहर से पता लगाया । जब उसने अविनाश से सफाई माँगी, तो वह उलटे उस पर ही बरस पडा कि तुम मेरी जासूसी करती हो ?"

"यह कब की बात है ?"

"यही कोई तीन महीने हुए होंगे । उसने कहा था, पापा, अब आप फोन मत करना । मै ही कर लिया करूँगी । हमेशा बाहर से ही करती थी, क्योंकि अविनाश पूरे समय घर मे ही रहता था, फिर एक दिन समधीजी का फोन आया । बहुत नाराज थे । बोले, यह तो हमारी आपस की बात थी । आपने बच्चो तक क्यो जाने दी ? अब बेटा मुझ पर बिगड़ रहा है कि मैने उसके ससुराल वालों के सामने हाथ फैलाकर उसे जलील किया है । यह उनका आखिरी फोन था ।"

"और दिव्या का ?"

"पद्रह दिन पहले आया था । बस, कुशलक्षेम से ज्यादा कुछ नहीं बोली । इन दिनो वैसे भी वह बडी डाउन लग रही थी । उसकी आवाज की वह खनक गायब हो गई थी ।"

"अब तो चित्रा वगैरह आएँगे, तभी कुछ पता लगेगा ।"

"क्या पता लगना है ? मेरी अतरात्मा जानती है कि उसने आत्महत्या की है । उस जैसी खुद्दार लड़की अपमान और जिल्लत की जिंदगी जी ही नहीं सकती थी ।"

"काश, वह यहीं लौट आती ।"

जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे । मातमपुरसी करने वालो की भीड छँट रही थी । हम लोग भी बार-बार वही सब दोहराने की ऊब से बच गए थे ।

जिस दिन आलोक आया, हॉल एकदम खाली था । उसे देखकर मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ । जानती थी, जहाँ भी होगा, खबर लगते ही दौड़ा चला आएगा ।

पर उसने बताया कि यह मात्र सयोग था । वह बहन की शादी मे घर आया था । दिव्या के बारे में यहीं आकर पता चला । बताया कि वह आजकल असम में है, कलेक्टर है ।

"बहन की शादी है, तो पत्नी भी साथ आई होगी न ?" मैने पूछा । जानना चाहती थी कि अब तक कुँआरा बैठा है या शादी कर ली ?

"पत्नी आई तो है. पर उसे यहाँ नहीं ला सका । घर मे मागलिक कार्य है न । माँ

मातमपुरसी पर आने की इजाजत नहीं देतीं । मै तो खुद बिना बताए आया हूँ । जाने से पहले एक बार फिर आऊँगा, तो आरती को भी साथ लेता आऊँगा ।"

भैया पूरे वक्त गुमसुम बैठे रहे । उन्होंने आलोक को देखकर भी अनदेखा कर दिया । मै ही पूरे वक्त बात कर रही थी, पर अदर से मुझे बहुत अटपटा लग रहा था । ऐसी भी क्या नाराजगी । वह शख्स शादी वाले घर से छुपकर आपके दु ख मे हिस्सा बॅटाने चला आया है । आप उससे दो बाते भी नहीं कर सकते ? कुछ नहीं तो हालचाल ही पूछ लेते ।

मै ही एक तरह से अपराधबोध से ग्रसित हो गई । जानबूझकर उसे छोडने गेट तक गई । मैने कहा, "आलोक, भैया के बर्ताव का बुरा मत मानना, प्लीज । अभी वे इस धक्के से उबर नहीं पाए है । दरअसल यह आघात ही इतना जबरदस्त है कि हम सबकी मति कुठित हो गई है, फिर वे तो उसके पिता है ।"

वह कुछ क्षण मुझे एकटक देखता रहा, फिर बड़े ही तरल स्वर में बोला, "बुआजी, आपका तो इतना बड़ा परिवार है । आप है, दीदी लोग है, सर है ! क्या आपमे से कोई ऐसा नहीं था, जिससे वह मन की बात कह सकती ? सकट के समय, जिस पर भरोसा कर सकती ? उसका इस तरह चुपचाप चले जाना, क्या जरूरी था ?"

और बात करते-करते उसकी ऑखें छलछला आई थीं । कस्बे की उस शाम अपने रिजल्ट के बारे मे बोलते हुए, वह अपनी इस चोट को, इस दर्द को छिपा गया था, पर आज उसने ऐसा कोई प्रयास नहीं किया ।

भीतर आकर देखा, दोनों मुट्ठियॉ छाती पर कसे हुए भैया निस्पद बैठे है । मै तो एकदम घबरा गई, "क्या हुआ भैया ? तबीयत तो ठीक है न ?"

"कुछ नहीं रे, इस लडके को देखकर छाती मे एक बगोला-सा उठा था । उसी को दबा रहा हूँ ।"

मै आश्चर्य से उन्हें देखती रही ।

"कितना सुदर लड़का ! कितना होनहार, कितना सुशील ! दिव्या पर जान छिडकता था । अगर शादी हो जाती, तो उसे देवी बनाकर पूजता । उस दिन उसकी बात रख ली होती, तो दिव्या आज हमारे बीच होती । पराए देश में, अजनबी लोगो के बीच यूँ छटपटाकर प्राण न दे देती, पर क्या करूँ । तुम्हारी भाभी को यह सब रास ही नहीं आया ।"

उत्तर मे मौन ही बनी रही मै । इसके बाद कहने को था ही क्या ?

माँ तुझे सलाम

दोपहर की डाक से वह संक्षिप्त-सा पोस्टकार्ड आया था—

आंटी,

हफ्ते-भर की छुट्टी आप लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ। अगर एतराज न हो तो फोन कर लें।

अनुराग

नीचे एस०टी०डी० कोड और फोन नंबर था, बस। न शहर का नाम, न तारीख। एक औपचारिक अभिवादन तक नहीं। दिन-भर वह कार्ड उपेक्षित-सा सेंटर टेबल पर पड़ा रहा। लड़कियाँ स्कूल से लौटीं, तो आते ही उनकी नजर पड़ी, "माँ, यह अनुराग कौन है ?" मीनल ने पूछा।

"जनाब आना चाहते हैं, पर अपना पता-ठिकाना नहीं दे सकते। अब इनके लिए हम एस०टी०डी० के पैसे खर्च करेंगे ?" सोनल भुनभुनाई।

"तुमने फोन किया था ?"

"नहीं," मैंने कहा, "पापा को आ जाने दो, तब सोचेंगे।"

शाम को बच्चों के पापा लौटे, तो उन्होंने भी यही प्रश्न किया, "यह अनुराग कौन है ?"

"लड़कियों ने यही प्रश्न पूछा था, जो कि स्वाभाविक था, पर आप तो इतने अनजान मत बनिए। क्या आपको अपने बेटे का भी नाम याद नहीं रहा।"

"ओह बेटा ! लेकिन उसे इस नाम से कब पुकारा था ? हमेशा चीनू कहकर ही तो बुलाया है।"

चीनू। इस नाम के लेते ही स्मृतियाँ छत्ते की सारी मधुमक्खियों की तरह मुझ पर टूट पड़ीं। गोरा-चिट्टा, गदबदा चीनू। मुझे देखते ही गले में झूल जाता। कभी टॉफी के लिए मचलता, कभी पेंसिल के लिए। कभी कहानी की फरमाइश होती, कभी गीत की। उसके साथ अकसर ही क्रिकेट खेलना पड़ता था। पार्क में, पिक्चर में, पिकनिक में, वह सीमा आंटी की पूँछ बनकर ही घूमता था।

हम दोनों की दोस्ती से उसकी माँ भी खुश थी। उतनी देर को उन्हें उसकी शरारतों

से राहत मिल जाती थी । उन दिनो वह पी-एच०डी० कर रही थी । घर-गृहस्थी और नौकरी के बाद अध्ययन के लिए बहुत कम समय मिल पाता था । इसीलिए उस घर मे मेरा स्वागत बड़ी गर्मजोशी से होता था । मै केवल बच्चे को ही नहीं देखती थी, शाम के चाय-नाश्ते के झझट से भी उन्हे मुक्ति दिला देती थी । ढेरो बार मैने उनके लिए फुलके भी सेक दिए थे । धीरे-धीरे वह घर जैसे मेरा ही हो गया था ।

और शायद यही बात वीणा दी को खतरे की घटी की तरह सचेत कर गई हो । बहुत धीरे ही सही, उनके व्यवहार में एक ठंडापन आने लगा । मुझे लगा कि वे बेवजह खिंची-खिची-सी रहने लगी हैं । उनकी रसोई मे मेरी दखलदाजी उन्हे अच्छी नही लग रही । उनके मन में जैसे एक ज्वालामुखी-सा धधकता रहता था । मै विस्मयविमूढ-सी सोचती ही रह जाती कि आखिर यह एकाएक उन्हे क्या हो गया है ?

फिर एक दिन विस्फोट हो ही गया ।

उस पहली तारीख को मै हमेशा की तरह ढेर सारी टॉफी और आइसक्रीम का फैमिली पैक लेकर उनके यहाँ पहुँची । पता चला, वहाँ भी पहली तारीख मन रही है । चीनू पापा के साथ सर्कस देखने गया है । मम्मी पढ़ाई के लिए घर पर रुक गई है ।

"अरे, उनके लौटने तक तो आइसक्रीम पिघल जाएगी," मैने निराश स्वर में कहा, "फ्रिज मे रख दूँ ?"

मै तो उठ भी गई थी पर वीणा दी ने सपाट स्वर मे कहा, "रहने दो ।" और आइसक्रीम मेरे हाथ से लेकर मेज पर रख दी । और कोई दिन होता, तो मै उनसे अनुमति लेती ही नहीं, पर इन दिनो उनकी अवज्ञा करने का सहसा साहस नहीं होता था । मै चुपचाप बैठकर आइसक्रीम को पिघलते देखती रही । यह भी न कह सकी कि वे लोग नहीं है, तो क्या हुआ ? लाओ, हमीं दोनों पार्टी कर ले । उस तरह की अतरंगता पता नहीं कब शेष हो चुकी थी ।

"सीमा ?" सन्नाटे को चीरती उनकी आवाज जैसे बड़ी दूर से आ रही थी, "चीनू को रिश्वत देने की अब कोई जरूरत नहीं है । उसे सीढ़ी बनाकर तुम्हे जो पाना था, वह तो तुम पा चुकी हो ।"

"यह, यह क्या कह रही है ?"

"यही कि तुम्हारा प्यार चीनू तक ही सीमित रहता तो मुझे खुशी होती, पर तुमने तो उसके पापा को भी नहीं बख्शा ।"

मै तो सन्न रह गई, "वीणा दी, आपको कुछ गलतफहमी हो गई है ।"

"काश कि यह गलतफहमी ही होती, पर दुर्भाग्य से यह सच है, बहुत कडवा सच । तुम मेरी गृहस्थी मे आग लगा रही हो सीमा ईश्वर तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा ।"

तब आवेश में आकर मैंने वीणा दी को खूब खरी-खोटी सुनाई थी। दुबारा उस घर मे पॉव न देने का प्रण करके मै घर लौट आई थी।

दो दिन तक मै अपमान की आग मे सुलगती रही, पर तीसरे ही दिन मेरा मन वहाँ जाने के लिए छटपटाने लगा। बडी मुश्किल से मैंने अपने को जब्त किया। घर आते हुए ढेर-सी पत्रिकाएँ खरीद लाई। उन्हीं में डूब जाने का यत्न करने लगी, पर विधाता को यह भी मजूर नहीं था। शाम को दरवाजे की घटी बजी। खोलकर देखा, सामने अविनाश खडे थे।

"दो दिन से दिखाई नहीं दीं। बीमार थीं क्या ?"

"नहीं तो, भली-चगी आपके सामने खडी तो हूँ।"

"तो घर क्यो नही आईं ?"

"मेरा वहाँ आना शायद किसी को पसद नहीं है।"

तभी पीछे से आवाज आई, "कौन, अविनाश बाबू है ? अरे, तो भीतर आइए न, दरवाजे पर क्यो खडे है ? सीमा बिटिया, जाओ, जरा चाय-वाय का इतजाम करो। इनके बहाने हम भी एकाध कप पी लेगे।"

मजबूरन अविनाश को भीतर आना पड़ा। बाबूजी के साथ गपशप करनी पडी, पर मै जानती थी कि वह बहुत बेमन से बैठे है, बार-बार घड़ी देख रहे है। चाय पीते ही उठ खडे हुए, "बाबूजी, अब चलूँगा। चीनू का कल गणित का टेस्ट है। थोडी तैयारी करवानी पडेगी।"

बाबूजी फिर से एक लेक्चर आधुनिक शिक्षा-पद्धति पर देने को थे, पर अविनाश ने उन्हें मौका ही नहीं दिया। उन्हें छोड़ने के लिए बाबूजी उठ ही रहे थे, उन्हें उठने भी न दिया और सीधे फाटक पर जा खड़े हुए। मुझे पीछे-पीछे जाना ही था।

"उस बेवकूफ औरत के लिए तुम घर आना छोड़ दोगी ?"

"घर उनका है।"

"तो मै अपना अलग घर बसा लूँगा, पर अब मै तुम्हे देखे बिना एक दिन भी रह नहीं सकता।" तो यह गलतफहमी नहीं थी, वीणा दी ने ठीक ही समझा था। उसके बाद वाले दिन तो ऑधी-तूफान के दिन थे। सबसे ज्यादा विरोध तो मेरे परिवार वालो ने किया। अविनाश को तरह-तरह की धमकियॉ दी गईं, पर जब मैंने भी विद्रोही तेवर अपना लिए, तो उन्हें भी हथियार डालने पडे। इस आपाधापी के बीच मुझे अपना मन टटोलने का मौका ही नहीं मिला। बस, एक बात तय थी कि अब अविनाश का सुख मेरा सुख था। मेरा भविष्य उनकी सुरक्षा से जुड़ा था।

हम लोग बहुत आशकित थे पर वीणा दी ने जरा भी परेशान नहीं किया। चुपचाप

सारे पेपर्स साइन कर दिए । किसी तरह की सहायता लेने से भी इकार कर दिया, चीनू के लिए भी नहीं । बोली, "यह मेरी जिम्मेदारी है । मै इसे पाल लूंगी । बस, तुम लोग अपना साया इस पर न पड़ने देना ।"

बेचारा चीनू ! वह भला अपने पापा को एकदम कैसे भूल जाता ? तलाक के समय वह छोटा नहीं था । दस साल का था । इस उम्र मे बच्चे माँ से ज्यादा बाप के निकट होते है । घर को इस तरह दो टुकड़ो मे बँटते देख बेचारा बौखला गया था । बड़ी करुण और भावुक चिट्ठियाँ लिखता । उसके बाल-मन का सारा आक्रोश और संताप उनमे होता, पर अविनाश उन चिट्ठियों को पढते भी नही थे, जवाब देना तो दूर की बात है । कहते, 'जब उसकी माँ ने मना कर रखा है, तो मैं क्या करूँ ? वह कल को आरोप लगा देगी कि मैं उसके बच्चे को बरगला रहा हूँ ।'

वे चिट्ठियाँ पढ़ते और फाड़ देते, पर फिर उस दिन रात-रात-भर सो नहीं पाते । दो-तीन साल बाद पत्रों का सिलसिला कम होते-होते अपने आप थम गया । इकतरफा कारोबार था, कब तक चलता ।

उसके बाद पहला पत्र अभी आठ-दस महीने पहले आया था । पत्र क्या था, शोक-सदेश था । काली रेखाओ से घिरे कार्ड में अकित था कि डॉ० वीणा त्रिवेदी अमुक-अमुक तारीख को महाप्रयाण कर गई है । उनकी त्रयोदशी अमुक तारीख को है । नीचे यही हस्ताक्षर थे—अनुराग ।

मैने इनसे पूछा था, "जाओगे नहीं ?"

"जाने लायक कोई रिश्ता बचा भी है ?"

"पर नाम तो वे आपका ही लगाती थीं न ?"

"मेरी बला से ।"

लेकिन मै इतनी आसानी से उस समाचार को खारिज नहीं कर पाई थी । उनकी त्रयोदशी तक मैंने घर में एक भी पार्टी नहीं होने दी । न घर में मीठा बनाया, न बाजार से आने दिया । तेरहवीं वाले दिन देवी-मदिर में जाकर पडितजी को सीधा और दक्षिणा दी । माता को साड़ी, चूड़ी और समस्त सुहाग आभूषण अर्पित किए । यह सब मैंने इनसे छिपाकर किया और यह सब मैंने किसी स्नेह या श्रद्धा के वशीभूत होकर भी नहीं किया । इसके मूल मे डर था । दरअसल उन दिनो अम्मा यहीं थीं । उन्होंने कहा था कि मरी हुई सौत, जिदा सौत से भी ज्यादा खतरनाक होती है ।

उस रात देर तक करवटे बदलते रहने के बाद मैंने पूछा था, "सुनिए, चीनू की चिट्ठी का क्या जवाब देना है ?"

"मुझे क्या पता ? तुम्हे चिट्ठी लिखी है तुम्हीं जवाब दो ।" उनके स्वर मे अपमान

का दश साफ झलक रहा था ।

"वह तो हमेशा आप ही को पत्र लिखता था," मैने याद दिलाया, "पर आपने कभी उनका उत्तर भी दिया है ?"

इस प्रश्न के उत्तर मे वे करवट बदलकर लेट गए । इसका मतलब था, अब जो भी निर्णय लेना था, मुझी को लेना था और कुछ भी निर्णय लेने से पहले लड़कियों को विश्वास मे लेना था । यूँ तो वह जानती थीं कि हमारी शादी आम लोगो से कुछ अलग हुई है । शादी के अलबम जैसी कोई चीज घर मे नहीं थी । न मामा, मौसी या चाचा, बुआ जैसे रिश्तेदारो की घर मे आम-दरफ्त है । कभी-कभार मेरी अम्मा जरूर आ जाती थीं । यह सिलसिला भी बाबूजी की मृत्यु के बाद ही शुरू हुआ था । मेरी भाभियो का वश चलता, तो वे अम्मा को सदा के लिए मेरे पास छोड़ देतीं ।

सुबह सोनल, मीनल की चोटियाँ बाँधते हुए मैने कहा, "बेटे, तुम्हारे बड़े भाई हम लोगो से मिलने आ रहे है ।"

"कौन-से भाई ?" मीनल ने पूछा ।

"वह जो कल पत्र आया था न ।"

"यह हमारे कैसे वाले भाई है, मतलब चचेरे-फुफेरे ?"

"यह तुम्हारे बडे भाई है," मैने सोनल की बात काटते हुए कहा, "मतलब पापा के ही बेटे है । बस, उनकी मम्मी अलग थीं ।" इतनी-सी बात कहते हुए भी मुझे पसीना छूट गया था ।

"ये हमारे भाई साहब अब तक कहाँ थे ?" मीनल के स्वर मे व्यंग्य था ।

"पढ रहे थे । अपने मामा के यहाँ थे । अब शायद जॉब पा गए है ।"

लड़कियों ने एक-दूसरे को देखकर मुँह बिचका दिया और बिना कुछ कहे तैयार होने चली गईं । उनका कुछ न कहना ही उनकी उपेक्षा और उदासीनता का परिचायक था । मुझे तो यही संतोष था कि कम से कम उन्होने मना तो नहीं किया ।

दोपहर तक मैने बड़ी मुश्किल से सब्र किया । घर में वाछित शाति और एकात पाते ही मैने नंबर घुमाया । उधर से जवाब की प्रतीक्षा मे लगा कि जैसे युग बीत गए हो । बडी धीर-गभीर आवाज आई, "हैलो, अनुराग त्रिवेदी हियर ।"

"हैलो चीनू, मै सीमा आंटी बोल रही हूँ ।"

"प्लीज आटी, मुझे अनुराग ही कहिए । चीनू नाम तो मम्मी के साथ ही शेष हो गया ।"

मुझे लगा, जैसे वह कह रहा हो, अपनी औकात में रहो । फोन करने का पछतावा भी हुआ पर अब पीछे लौटना व्यर्थ था । दबी-सी आवाज में कहा "तुम्हारा कार्ड आया

था ।"

"जी ।"

"कब आ रहे हो ?"

"एम आई वेलकम ?"

"तभी तो फोन किया है ।"

"थैंक यू, चलने से पहले फोन करूँगा ।"

उसके पापा इतने कायर निकलेंगे, ऐसी कल्पना नहीं थी । टूर का बहाना बनाकर मजे मे खिसक गए । यह भी न सोचा कि स्थिति का सामना मै अकेले कैसे करूँगी । लडकियों को रोकना चाहा, तो वे भी राजी नहीं हुईं । बोलीं, "जब आ रहे है, तो दो-चार दिन रहेंगे ही । उसके लिए स्कूल क्यो मिस करे ? शाम को मिल लेंगे ।"

फिर अकेले स्टेशन जाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी । उसे पहचानने का कोई उपाय भी नहीं था । यही सोचकर सतोष कर लिया कि जवान लडका है । जिस तरह उसने हमारा पता ढूंढ लिया था, घर भी ढूँढ लेगा । मन में सौ-सौ आशकाओं के तूफान लेकर बरामदे में बैठी रही । हर पाँच मिनट पर इन्क्वायरी मे फोन लगा रही थी । गाड़ी राइट टाइम थी, पर मै मना रही थी घंटा-आधा घंटा लेट हो जाए, तो अच्छा है । उससे मुलाकात का क्षण जैसे-जैसे निकट आता जा रहा था, मेरा मन डूबा जा रहा था ।

आखिर वह क्षण आ ही गया । तेजी से एक ऑटो गेट के भीतर प्रविष्ट हुआ और मै हड़बड़ाकर आशीर्वाद की मुद्रा में उठ खड़ी हुई ।

"हैलो आंटी !" एक कद्दावर नौजवान मुझे विश कर रहा था । मै देखती रह गई । हूबहू अविनाश की प्रतिमा थी । रंग जरूर अपनी माँ की तरह गोरा-चिट्टा था, पर उसने नैन-नक्श अपने पापा के ही लिए थे । स्टेशन चली भी जाती, तो पहचानने मे दिक्कत नहीं होती ।

"सॉरी, स्टेशन नहीं आ सकी । दरअसल ।"

"नेवर माइड," उसने मुझे सफाई का मौका ही नहीं दिया, "हम तो दुनिया घूमे है, भोपाल क्या चीज है ? बस, अब यह बताइए कि अपना यह कबाड कहाँ रख दूँ ?" उसने सामान की ओर इशारा किया ।

मैने गोपाल को आवाज दी, "भैया का मामान गेस्ट रूम मे रख दो और फटाफट चाय चढा दो ।"

"चाय रहने दीजिए आटी, नहाकर सीधे खाना ही खाऊँगा ।" मेरी सारी दुविधाओ को समेटकर वह कमरे से ओझल हो गया ।

नाश्ते के लिए दो दिन लगकर मैंने ढेर सारी चीजें बनाई थीं वे शाम तक के लिए

मुलतवी कर दीं । खाना भी मैने बडे मनोयोग से बनाया था । बेचारा घर के खाने के लिए तरस गया होगा ।

साबुन और पाउडर की मिली-जुली सुगध बिखेरता मेज पर आया, तो दो थालियॉ देखकर चकित हो गया, "यह क्या ? आप भी अभी तक रुकी हुई है ? अरे, इस फॉर्मेलिटी की क्या जरूरत थी ?"

मेरी सारी ममता भीतर ही भीतर जैसे जलकर खाक हो गई । ताव खाकर मैने रुखाई से कहा, "मेरा रोज का टाइम है ।"

"देन इट इज ऑल राइट," उसने डोगो के ढक्कन उठाते हुए कहा, "अरे वाह, भरवॉ करेले ! मम्मी के जाने के बाद पहली बार खा रहा हूँ ।"

"पता नहीं, तुम्हारी मम्मी जैसे बने भी है या नहीं ।" मैने विनय दर्शाया ।

"नहीं, ठीक बने है । बट मम्मी वाज सुपर्ब, यू नो । रसोई मे तो उनकी मास्टरी थी । सब्जी छोंकतीं तो सारा अपार्टमेंट महक जाता । फुलके ऐसे बनातीं, जैसे रेशमी रूमाल । उनके बनाए चावल तो मोगरे की कलियो से खिल जाते थे ।"

उसका स्तुति पाठ लंबा चलता रहा । सामने रखी थाली के रस और स्वाद से वह बेखबर हो गया था । पूरे भोजन के दौरान उसने मेरी प्रशंसा मे एक शब्द भी नहीं कहा । पता नहीं वह यह सब जानबूझकर कर रहा था या कि बहुत दिनों बाद मॉ के विषय मे बोलने का अवसर मिला था । मै लेकिन बहुत नर्वस हो गई । मेरा तो आत्मविश्वास ही जाता रहा । वह जितने दिन रहा, खाना बनाते समय मै एक हीन बोध से भर जाती, फिर कभी दाल मे नमक छूट जाता या सब्जी मे मिर्च तेज हो जाती । मेरी सारी मास्टर डिशेज उन दिनो फ्लॉप साबित हुईं । हर बार उसे अपनी मॉ के पाक नेपुण्य को याद करने का एक सुनहरा अवसर मिल जाता ।

शाम की चाय पर गरम समोसे बनाने का प्लान था, पर दोपहर के खाने के बाद मुझमे न तो उत्साह रहा, न उमंग रही । मन पर एक तनाव भी था । अभी तो उसका लडकियों से भी सामना होना था । पता नहीं, वह भेंट क्या रंग लाएगी । यह बैठे-बिठाए मैने क्या मुसीबत मोल ले ली थी ?

जिस समय लड़कियॉ स्कूल से लौटीं, हम लोग शाम की चाय ले रहे थे । वे हमेशा की तरह चहकती हुई घर मे दाखिल हुईं, पर अपरिचित अतिथि को देखकर दरवाजे मे ही ठिठक गईं । शायद उसके आने की बात इस बीच उनके मन से उतर चुकी थी ।

मै परिचय की रस्म निभाने की सोच ही रही थी कि वह उठ खड़ा हुआ, "हैलो, आई एम अनुराग और आप दोनों, ठहरिए, लेट मी गेस" और उसने अक्कड़-बक्कड बम्बे-बौ की तर्ज पर अंग्रेजी में कुछ बुदबुदाना शुरू किया । कुछ ही क्षणो मे मीनल के

कंधे पर हाथ रखकर बोला, "यू आर मीनल ! एम आई राइट ?"

मुझे डर लगा कि तुनकमिजाज मीनल अभी उसका हाथ झटक देगी, पर वह तो आँखों में आश्चर्य भरकर अपलक उसे देख रही थी, "आपने कैसे पहचाना ?"

"इन्ट्यूशन ! यंग लेडी, हम बिना बताए ही सब कुछ जान लेते हैं ।"

"यह इन्ट्यूशन क्या होता है ?" भोली-भाली सोनल ने पूछा ।

"एक विद्या होती है । चाहो तो तुम लोगों को भी सिखा दूँगा, पर फिलहाल मैं तुम्हारा यह खूबसूरत शहर देखना चाहता हूँ । इसके लिए मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है । मेरी गाइड बनना पसंद करोगी ?"

"ओ श्योर !" दोनों ने एक साथ कहा ।

"तो अपनी यह नामाकूल वर्दियाँ उतारकर इंसानों के वेश में आ जाओ, फिर अपन घूमने चलेंगे ।"

दोनों ने सीधे अपने कमरे की राह ली । उन्हें नाश्ता करने का भी होश नहीं रहा ।

अनुराग ने ये पहला राउंड जीत लिया था । दोपहर-भर मैं अपनी अलबमें दिखाकर उसे बोर करती रही थी । उस जानकारी को उसने सही ढंग से भुना लिया था और मेरी किशोरवयीन बेटियाँ उससे अभिभूत हो गई थीं ।

"आंटी, आप भी चलेंगी ?" उसने पूछा ।

मैं समझ गई कि यह निमंत्रण नहीं है । मात्र औपचारिकता है ।

"तुम लोग हो आओ । मैं रात के खाने का इंतजाम करती हूँ ।"

"पर ज्यादा कुछ मत बनाइएगा । हो सकता है, बाहर कुछ खाने का मूड हो आए ।"

"गाड़ी ले जाओ ।" मैंने स्टैंड से चाबी उतारते हुए कहा ।

"नो थैंक्स । मैं दूसरों की गाडी नहीं चलाता । हम लोग ऑटो ले लेंगे ।"

मैंने कहना चाहा कि यह दूसरों की गाडी नहीं है, पर उसने जिस रुखाई से इंकार किया था, मनुहार की कोई गुंजाइश नहीं थी ।

लौटकर तीनों में से किसी ने भी खाना नहीं खाया । जब मैं खाना खा रही थी, तो पास बैठकर अपने सैर-सपाटे का वर्णन सुनाते रहे । खाने के बाद बच्चों ने मुझे अपने-अपने उपहार दिखाए । मीनल के लिए जापानी कैमरा और सोनल के लिए जर्मनी केसियो । दोनों एक अरसे से इन चीजों के लिए लालायित थीं । इस बार दोनों के जन्मदिन पर मैंने यही उपहार देने का प्लान बनाया था, पर मेरी योजना धरी की धरी रह गई ।

"बहनों का तो बस एक ही काम होता है, भाइयों को लूटना ।" मैंने अपनी नाराजी छिपाने का जरा भी प्रयास नहीं किया ।

"इसमे लूटने वाली क्या बात है, आटी ? यह तो उनका हक है। यह तो मै ही खाली हाथ चला आया था, सो इसलिए कि इन लोगो की पसद-नापसद, शौक और चॉइस के बारे मे मै कुछ नहीं जानता था।"

सोनल बोली, "पता है मम्मी, जब हम जूस पी रहे थे न, तो भैया ने हमसे पूछा कि अगर अभी सांताक्लॉज तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जाए, तो तुम क्या मॉगोगी ?"

और इस बेवकूफ लडकी ने अपनी ख्वाहिश बता दी होगी और भैया उन लोगो के लिए साताक्लॉज बन गया होगा।

और इस तरह यह दूसरा राउंड भी अनुराग ने बड़ी आसानी से जीत लिया था। मेरी समझ मे नहीं आ रहा था कि मुझे इस बात पर खुश होना चाहिए कि बुरा मानना चाहिए।

दूसरे दिन पिक्चर का प्रोग्राम बना। अत्यत कृपावंत होकर मुझे भी शामिल कर लिया गया, पर हॉल मे मैं अलग-थलग ही बैठी रही। तीनो आपस मे ही बतियाते रहे। कभी नायिका के भौडे कपड़ों की मजाक बनाते, कभी नायक के भावहीन चेहरे पर फब्तियॉ कसते, तो कभी बेतुके गानो की पैरोडी बनाते। फिल्म वाकई बकवास थी, पर उसके लिए पैसे खर्च किए गए थे। अपने न सही पर दूसरों के पैसों पर तो तरस खाना चाहिए था।

इटरवल मे मैं सिरदर्द का बहाना बनाकर उठ खड़ी हुई, तो तीनों मेरे साथ हो लिए।

"बहुत ही बकवास फिल्म थी।" मैने कहा।

"मस्ती मारनी हो तो आटी, ऐसी ही फिल्म देखनी चाहिए। अच्छी फिल्मे तो घर मे वीडियो पर अकेले में देखने के लिए होती है।"

लड़कियो ने प्रशसा-भरी नजरों से उसकी ओर ऐसे देखा, मानो उसके मुँह से फूल झर रहे हों। मै तो हैरान थी। ये लडकियॉ उससे इस कदर प्रभावित क्यों है ? कहीं यह लडका सम्मोहिनी विद्या तो नहीं जानता ? मुझे तो डर-सा लगने लगा। बाद में ठडे दिमाग से सोचने पर समझ में आया कि इसमें आश्चर्य करने जैसा क्या है ? उन बेचारियो ने पहली वार पिता के अलावा किसी अन्य पुरुष को इतने निकट से देखा है, तो आकर्षण तो स्वाभाविक ही है, फिर उसके पास आकर्षक व्यक्तित्व है, लच्छेदार बातें है, देश-विदेश के अनुभव है। लड़कियो पर धाक जमाने के लिए इतना काफी है, फिर खून की कशिश भी तो कोई चीज होती है।

दो दिन बाद पिताश्री टूर से लौटे। बाप-बेटे के इस ऐतिहासिक मिलन की मै उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। अपनी कल्पना में उस क्षण को मै कई बार कई तरह

से देख चुकी थी, परतु प्रत्यक्ष मे वह कार्यक्रम बड़ा फुसफुसा-सा रहा ।

मीनल और अनुराग लॉन में बैडमिंटन खेल रहे थे । मै और सोनल प्रेक्षक की भूमिका निभा रहे थे । तभी साहब बहादुर की जीप गेट के भीतर प्रविष्ट हुई । थोड़ी देर को खेल रुक गया । मै सॉस रोककर अगले क्षण की प्रतीक्षा करती रही । पापा उतरे, अपने जवान बेटे को देखा और ठगे-से खड़े रह गए । थोड़ी देर को तो वह पलक झपकाना ही भूल गए ।

फिर अनुराग ने ही पहल की, "हैलो सर," फिर उसने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, "सफर कैसा रहा ?"

"फाइन, थैंक्यू ।" इनकी आवाज गले में फॅसती-सी लगी ।

"आप थोडा रिलेक्स हो ले । तब तक हम यह सेट पूरा करके आते है ।" बस ।

बाद में मुझे भान हुआ कि उसने इन्हें प्रणाम नहीं किया था । बस, हाथ-भर मिलाया था । प्रणाम तो खैर उसने मुझे भी नहीं किया था, पर मैने उसकी अपेक्षा भी नहीं की थी, पर पिता के चरण स्पर्श तो कर सकता था । इस तरह उनकी अवमानना करके वह क्या सिद्ध करना चाहता था । अपना रोष ? या अपनी आधुनिकता ?

बुरा तो इन्हें भी जरूर लगा होगा, पर इन्होंने अपने आपको जाहिर नहीं होने दिया । बेटे से तो खैर अभी परिचय का सूत्रपात ही नहीं हुआ था, पर बेटियॉ भी उनसे दूर छिटक गई थीं । कहॉ तो पापा के लौटते ही उनसे झूल जाती थीं । अपनी फरमाइशो की शिकायतो का पुलिदा खोलकर बैठ जाती थीं, पर आज उन्हें भी फुरसत नहीं थी । बस, 'हाय पापा' का स्वागत वाक्य बोलकर भैया के साथ व्यस्त हो गई थीं ।

खाने की मेज पर मैंने देखा कि ये अतृप्त नजरो से बेटे को निहार रहे है । कुछ कहने को उनके होंठ फड़फडा रहे थे, पर शब्द थे कि जैसे जम गए हों और वह इस सारी कशमकश से बेखबर बहनों को चुटकुले सुना रहा था । पहेलियॉ बूझ रहा था ।

तीनो का एक अलग गुट-सा बन गया था ।

हालॉकि इन लोगो की उम्र मे बारह-चौदह साल का अतर था, पर वह जैसे बेमानी हो गया था । वह अपनी उम्र से चार-पॉच सीढ़ियॉ नीचे उतर आया था और लड़कियॉ भी अपना लड़कपन छोड़कर एकदम प्रगल्भ हो गई थीं । उन तीनो में गहरी छन रही थी । मुझे अच्छा भी लग रहा था, पर हम दोनों को उसने जिस तरह हाशिए पर कर दिया था, वह बेहद खल रहा था ।

खाने की मेज पर वही तिकडी चहकती रहती । हम बस श्रोता बनकर रह जाते । शाम के सैर-सपाटे में तो हमारी भागीदारी थी ही नहीं । पिक्चर का कटु अनुभव मेरे पास था इसलिए पिक्चर जाने का सवाल ही नहीं था एक-दो बार पिकनिक का प्रोग्राम

बनाया। उसने मना नहीं किया, पर खास एजॉय भी नहीं किया। पूरे समय बँधा-बँधा-सा बैठा रहा, और तो और लड़कियाँ भी गुमसुम हो गई। लगा कि व्यर्थ ही इतनी दौड़-धूप की।

हम लोगो ने कुछ परिचितों को अपने यहाँ आमत्रित किया। कुछ लोगों के यहाँ हम उसे ले गए, पर हर बार उसकी जबान पर जैसे ताला पड़ जाता था। उसके ठहाके कहीं गुम हो जाते थे। एक-दो बार मैंने कुरेदा, तो बोला, "क्या करूँ आंटी, अजनबियो के सामने मै खुल नही पाता। हर किसी से मेरी वेव लेन्थ नहीं मिलती। जिसके साथ ट्यूनिंग नहीं होती, उससे दोस्ती भी नहीं होती।"

"तो हम लोग किस केटेगरी मे आते है ?"

उत्तर मे वह केवल मुस्करा दिया।

एक हफ्ता, हाँ, उसे कुल जमा एक हफ्ता ही तो यहाँ रहना था। जब आने वाला था, तो यही एक हफ्ता मन पर भार-सा था। लगता था कि इस मुँहफट लड़के को आठ दिन तक कैसे झेल पाऊँगी। अपनी बेटियों के साथ उसका तालमेल कैसे बिठा पाऊँगी, पर आठ दिन फुर्र से उड़ गए और मुझे पता ही न चला।

उसके जाने से एक दिन पहले की बात है। घर मे हम दोनों अकेले थे। मैंने बात छेडी, "अनुराग, तुम्हारी उम्र क्या होगी ?"

"छब्बीस। क्यो ?"

"शादी के बारे मे क्या सोचा है ?"

"शादी ?"

"हाँ, कई लोग पूछ रहे थे। तुम तो जानते हो, शादी लायक लड़का देखते ही रिश्ते ऐसे बरस पड़ते है, जैसे गुड़ पर मक्खियाँ। तुम जैसा हीरा दामाद पाने को तो हर कोई तरसता है।"

"थैंक्स फॉर द कॉम्प्लीमेंट आटी, पर मुझे लगता है, इन लोगो को निराश होना पडेगा ?"

"क्यो, कहीं तय कर रखी है क्या ?"

"नहीं, शादी करने का खयाल तो कभी आया ही नहीं। शायद भविष्य में भी नहीं आएगा। आई हेव लॉस्ट फेथ इन दिस इस्टीट्यूशन।"

"क्यो ?"

"कारण आप अच्छी तरह से जानती है।"

मन पर एक करारा झटका-सा लगा, फिर भी अपने को संयत कर मैंने कहा, "एक ही कारण सबके लिए लागू नहीं होता अनुराग, हर बात को इस तरह जनरलाइज नहीं

करना चाहिए । परिस्थितियाँ हरेक के साथ अलग हो सकती है । वैसे भी इन बातों को समझने या इस तरह के निर्णय लेने के लिहाज से तुम बहुत छोटे हो ।"

"पर मै वेटा तो उन्हीं का हूँ न । मुझमे भी तो वे ही जीन्स है । इस बात की क्या गारटी है कि शादी करूँगा, तो आखिर तक निभा ले जाऊँगा, फिर व्यर्थ में किसी को दु ख क्यों दूँ ?"

उसने जो भी कहा अपने पिता के लिए कहा । उसका सारा आक्रोश पिता के लिए था । मुझ पर उसने कोई आरोप, कोई लांछन नहीं लगाया, फिर भी मैं शर्म से गड गई । अपमान से मेरे आँसू निकल आए ।

वह अपनी जगह से उठकर मेरे पास आ गया, "सॉरी आंटी, आपको हर्ट करने का मेरा इरादा नहीं था, पर मैंने अपनी माँ को तिल-तिलकर मरते देखा है । बाप के होते हुए भी मैंने एक अनाथ बचपन गुजारा है और मै उस इतिहास को दोहराना नहीं चाहता ।"

मुझे अविनाश पर दया हो आई । बेचारे किस ललक से दोस्तों के बीच बेटे की नुमाइश कर रहे थे । उसकी बारात मे दूल्हे के बाप की ठसक से जाने का सपना देख रहे थे । बेटे ने तो उनके सारे अरमानो की धज्जियाँ उड़ा दी थीं ।

जब इसके मन मे इतनी कटुता, इतना रोष था, तो यहाँ आने की जरूरत क्या थी ? बरसों से टूटी हुई कड़ियो को फिर से जोड़ने का प्रयोजन क्या था ?

मैंने सोचा था कि माँ की मृत्यु से उसके जीवन मे एक शून्य भर गया होगा । घर की ममता-भरी छाँव के लिए वह तरस गया होगा ।

इसीलिए स्नेह की ऊष्मा से भरकर मैंने उसका स्वागत किया था । मै उसे अपने आँचल में भर लेने को भी उद्यत थी, पर वह हर बार छिटककर इस तरह दूर खड़ा हो जाता था कि मन पर एक चोट-सी लगती थी ।

लड़कियो का वश चलता, तो उसे ऐसा धमाकेदार फेयरवेल देतीं कि स्टेशन पर एक हंगामा हो जाता, पर मैंने उन्हे प्यार से पास बुलाकर कहा, "देखो, यही आखिरी मौका है । पापा के साथ उसे थोडी देर को अकेले रह लेने दो । घर में तो कभी इतनी फुरसत ही नहीं मिली । हमीं लोग उसे घेरे रहते थे ।"

बेमन से ही सही, लड़कियाँ मान गईं । उपहार, बुके, फोटो, आँसू, सारे आयोजन घर पर ही हो गए । "नोबडी कमिग टू सी मी ऑफ ?" उसने पूछा । लड़कियो ने मेरी ओर इशारा कर दिया । जैसे कह रही हों, यह जो दुष्ट मम्मी है न । मना कर रही हैं । मैंने भी कोई प्रतिवाद नहीं किया । अविनाश के लिए उतनी-सी बुराई मुझे स्वीकार थी ।

उसके जाते ही घर में एक सन्नाटा-सा खिंच गया । एक आदमी के चले जाने से घर इतना सूना हो जाता है मै कभी सोच ही नहीं सकती थी ' अपनी उपस्थिति से वह

घर को कितना गुलजार किए हुए था, इसका अहसास अब हुआ ।

वे सूनी घड़ियाँ मैंने लड़कियो के साथ बाँटनी चाहीं, पर वे तो कब से अपने कमरे मे गुम हो गई थी । उनके पास जाने की हिम्मत नहीं पड़ी । मन मे एक अपराध-बोध-सा था ।

उस रात खाने की मेज पर भी एक चुप्पी-सी छाई रही । हमेशा चहकने वाली मेरी बुलबुले भी खामोश थीं । उनके पिता भी गुमसुम से भोजन की औपचारिकता निभा रहे थे । टेबल पर केवल मेरी और बर्तनो की आवाज आ रही थी, क्योंकि मै तो गृहिणी थी, पत्नी थी, माँ थी । मुझे तो अपना कर्तव्य निभाना ही था ।

खाना खाने के बाद पूरा घर फिर से द्वीपो मे बँट गया था । मुझे देर रात तक नीद नहीं आई । पानी पीने के लिए उठी तो देखा, बच्चों के कमरे की बत्ती जल रही है । शायद उन लोगों को भी नींद नहीं आ रही थी । सोचा, थोड़ी देर चलकर उनके पास बैठूँ । उनके भैया की बाते करूँ ताकि मन कुछ हलका हो । बेचारी इतनी-सी तो है । जीवन मे पहली बार किसी का इतना निकट सामीप्य मिला था । पहली बार किसी अपने से बिछड़ने का दर्द झेला था ।

मैने धीरे-से कमरे में प्रवेश किया । दोनो जाग रही थीं और बीच वाली मेज पर अच्छी-खासी फोटो प्रदर्शनी लगी हुई थी ।

"ये कहाँ की फोटो हैं ?"

"भैया के साथ खींची थीं न ।"

मैने पास बैठकर मुआयना किया । सचमुच वडी सुदर तस्वीरे थीं, पर उन ढेर-सी तस्वीरों मे हम दोनो की एक भी नहीं थी । मन में एक टीस-सी उठी ।

"भैया कितने क्यूट लग रहे है न ?"

"भैया इज सो हैडसम ।"

"ही इज सो स्मार्ट ।"

भैया का प्रशस्ति-गान जैसे रुकना ही नहीं चाहता था कि एकाएक सोनल ने पूछ लिया, "मम्मी, बड़ी मम्मी बहुत फेयर थीं न ?"

"हाँ, क्यों ?"

"तभी तो भैया का रंग भी एकदम साफ है । बच्चे अपने मम्मी-पापा से ही तो इनहेरिट करते है । काश, मम्मी आप भी इतनी फेयर होतीं !" मीनल एकदम बोल पडी

किसी जमाने मे छत्रपति शिवाजी ने यही बात एक अद्वितीय सुदरी से कही थी कि 'काश, मेरी माँ भी आपकी तरह सुदर होतीं ।' शिवाजी का यह वाक्य इतिहास बन गया पर मीनल का यह वाक्य मेरा उपहास कर रहा था ।

अपने साँवले रग को लेकर मैने कभी शर्म महसूस नही की । कॉलेज में तो मुझे कृष्णकली का लुभावना खिताब मिला हुआ था । अपने बच्चो मे भी मैने कभी किसी तरह का कॉम्प्लेक्स पनपने नही दिया, पर अनुराग का दमकता रग उनमे एक हीन बोध भर गया था । इसे दूर करने में मुझे पता नहीं कितने दिन लग जाएँगे । इस नाज़ुक उम्र मे हर बात बच्चो के मन मे गहरे पैठ जाती है ।

"मम्मी, क्या आप बडी मम्मी को जानती थीं ?"

"हाँ, हम लोग एक ही कॉलोनी मे रहते थे ।"

"आपने जब पापा से शादी की, तब क्या वे जिदा थीं ?"

मै अवाक् । मीनल यह सब क्या पूछ रही है ? क्यो पूछ रही है ?

"वो क्या है न मम्मी कि हमारी क्लास में एक कविता है । उसकी एक दीदी भी है, सविता । जब सविता दीदी की मम्मी की डेथ हो गई न, तब उसके डैडी ने कविता की मम्मी से शादी की, लेकिन भैया बता रहे थे ।"

"भैया क्या यही सब बताने के लिए यहाँ आए थे ?" मुझे सचमुच ताव आ गया था । सामने होता, तो मै अनुराग का मुँह नोंच लेती, लेकिन उसकी दोनो बहनें परोक्ष मे भी उसकी आलोचना सुनने के लिए तैयार नहीं थीं ।

"क्या बात करती हो मम्मी ? भैया बेचारे तो हम लोगो से मिलने आए थे । उन्होने ऑस्ट्रेलिया मे नया जॉब ले लिया है न ! जाने से पहले सारे रिश्तेदारो से मिलने जाएँगे । पूरे दो महीने का टूर प्रोग्राम है ।"

और मै समझ रही थी कि कुल जमा आठ दिन की छुट्टी लेकर वह केवल हमसे मिलने आया है । मन खट्टा हो गया । ऑस्ट्रेलिया वाली खबर से भी मन आहत ही हुआ । इतनी बडी बात उसने इन टुइयाँ-सी लड़कियो को बता दी और हमसे जिक्र तक नहीं किया ।

"और मम्मी, उन्होने अपने से हमे कुछ नहीं बताया," सोनल अब भी उसकी सफ़ाई दिए जा रही थी, "मीनल ने पूछा कि आप मम्मी को आंटी क्यो कहते हो, तब उन्होने बताया कि पुरानी आदत है । आसानी से छूटती नहीं है ।"

मुझे बहुत ताव आया । जनाब पुरानी आदत की बात कर रहे है । हमे तो बड़े साफ शब्दों मे समझा दिया था कि चीनू न कहा करे । बेचारे अविनाश ! उन्होंने एक दिन भी उसे नाम लेकर नहीं पुकारा । अनुराग जबान पर चढ़ता नहीं था और चीनू कहते डर लगता था । क्या पता सबके सामने ही टोक दे ।

"मम्मी, आपने यह अच्छा नहीं किया ।" मीनल धीर गंभीर आवाज मे कह रही थी ।

"क्या अच्छा नहीं किया ?"

"आपने उनसे पापा को छीन लिया ।"

मैं सन्न रह गई । अपने ही बच्चे कभी इस तरह कटघरे मे खडा कर देंगे, सोचा भी नही था । इसके बाद वहाँ बैठना असभव ही था । किसी तरह अपनी रुलाई रोककर मै कमरे में चली आई ।

"सुना आपने ? आपका लाडला बच्चों के मन में कैसा जहर बो गया है ?"

कमरे मे जाते ही मैने गुहार की, पर उस गुहार की, उस शिकायत की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई । कमरा खाली था । मै इन्हे अच्छा-भला सोता छोड़ गई थी । मै इसीलिए उठ गई थी कि मेरे बार-बार करवटे बदलने से उनकी नींद उचट सकती थी । अब लग रहा है कि शायद वह मेरे लिए ही दम साधे पड़े होगे । यह लड़का तो पूरे घर की नींद चुराकर ले गया है ।

सोचा, शायद हॉल मे होगे । हेड फोन लगाकर देर रात तक टी०वी० देखने की उनकी आदत है, पर वे हॉल मे भी नहीं थे । मैं स्टडी रूम में भी झाँक आई । कई बार रात-रात जागकर फाइले निबटाते रहते है, पर मेज बिलकुल खाली थी । कहीं छत पर तो नहीं चले गए । कहीं ठंड खा गए, तो आठ दिन तक खाँसते रहेंगे । तेज-तेज कदमो से मै दो-चार सीढ़ियाँ चढ़ भी गई, फिर एक विचार मन में कौंधा । दबे पॉव नीचे उतरकर मैने गेस्ट रूम मे झाँका । मेरा अदाज बिलकुल सही था । वह पलग पर अधलेटे-से निस्पद बैठे थे ।

"यहाँ क्या कर रहे है ?" मैने पूछा, पर अपना ही प्रश्न मुझे बड़ा बेतुका-सा लगा ।

"तुम वहाँ अपनी बेटियो के पास थीं । मैने सोचा, मै भी थोड़ी देर अपने बेटे के पास बैठ लूँ ।" उन्होने सूखी-सी हँसी के साथ कहा, "कल तुम इस कमरे की सफाई करवा दोगी । शायद ये चादरे, ये गिलाफ भी धुलवा दोगी । इसीलिए सोचा कि उसकी साँसो की थोडी-सी महक अपनी साँसो मे बसा लूँ । उसके स्पर्श का जरा-सा अहसास पा लूँ ।"

वे एकदम भावुक हुए जा रहे थे । मुझे तो रुलाई छूटने लगी । मैने उठकर बत्ती जला दी । नीम अँधेरे का जो तिलिस्म था, टूट गया । वह अपने मे लौट आए, फिर हसरत-भरी आवाज में बोले, "कितना अच्छा लगता है घर में एक जवान बेटे का होना । कितना सुकून, कितना विश्वास, कितनी आश्वस्ति देता है । वह था, तो घर कैसा भरा-भरा लगता था । अब चला गया है, तो लगता है, सारी रौनक अपने साथ समेटकर ले गया है ।"

मै चुपचाप बैठी, उनका एकालाप सुनती रही और क्या करती ?

"बस, एक ही मलाल रह गया । इतने दिन रहा, पर घड़ी-भर भी पास आकर नहीं

बैठा । मुझसे खुलकर दो बातें भी नहीं कीं । कितना कुछ कहने-सुनने को था । सब मन ही मे रह गया ।"

"क्या स्टेशन पर भी कोई बात नहीं हुई ?"

"कहाँ हो पाई ? वह तो मुझे सामान के पास खड़ा करके बुक स्टॉल पर निकल गया था, ट्रेन के अनाउसमेंट होने के बाद ही लौटा ।"

"अरे, मैंने तो खास इसी उद्देश्य से लडकियो को रोक लिया था । वे इसके लिए मुझे कभी माफ नहीं करेगी । ये तीनों साथ होते है, तो किसी और को बोलने का मौका ही नहीं मिलता ।"

"मौका तो खैर वैसे भी नहीं मिला," इन्होंने एक फीकी-सी हँसी के साथ कहा, "ठीक भी है, जब उसे मेरी जरूरत थी, तो मैने उसकी उपेक्षा की । कारण चाहे जो भी रहा हो, पर परिणाम तो उसे ही भुगतना पड़ा । दो बडो के अहं की टकराहट में बेचारा मासूम बच्चा पिस गया । आज वह अपने पैरो पर खडा है । उसे किसी की परवाह नहीं है, पर आज मुझे उसकी जरूरत है, लेकिन उसके पास फुरसत नहीं है । ही इज पेइंग मी, इन द सेम कॉइन । शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं है ।"

उनका स्वर एक थके हुए, हारे हुए आदमी का था । मैंने सात्वना मे कुछ नहीं कहा । बस, उनका हाथ थाम लिया । मेरे हाथो को सहलाते हुए वे बोले, "चलो, एक बात अच्छी हुई । इसी बहाने उसकी सोनल-मीनल से दोस्ती हो गई । अब मुझे उनकी चिंता नहीं रहेगी । मै नहीं भी रहा, तो उनके सिर पर भाई का साया रहेगा ।"

मेरा आशावाद इतना प्रबल नहीं था । मैं उन्हें भी किसी भ्रम में रखना नहीं चाहती थी । इसलिए सपाट स्वर मे सूचित कर दिया, "वह अगले महीने ऑस्ट्रेलिया जा रहा है, हमेशा के लिए ।"

"क्या ?" उनकी ऑखे आश्चर्य से फैल गईं, फिर उन ऑखो मे उदासी तिर आई, "क्या उसने मुझे इस लायक भी नहीं समझा कि इतने बड़े निर्णय की सूचना देता ।"

"उसने तो मुझे भी कुछ नहीं बताया था । मुझे तो यह खबर लड़कियो से मिली है, अभी । उसने सोचा होगा कि हमे बताएगा, तो हम लोग उसे रोकने की कोशिश करेगे या कि वहाँ के डीटेल्स पूछेगे । अपना पूरा पता भी तो वह हमे देना नहीं चाहता, फिर भविष्य की योजनाएँ क्यों बताने लगता ?"

"उसे जब हमसे कोई सरोकार ही नहीं है, तो यहाँ आने की जरूरत क्या थी ? उसे किसने निमत्रण भेजा था ?"

"जाने से पहले वह सबसे मिलना चाहता था ।"

"पर क्यों ? क्या जरूरत थी ? बडी मुश्किल से मैंने उसके बिना जीने की आदत

डाली थी । उसकी माँ ने मुझसे कहा था, 'खबरदार, मेरे बेटे पर अपना साया भी न पड़ने देना ।' कलेजे पर पत्थर रखकर मैंने वह चुनौती स्वीकार कर ली थी । अपने कलेजे को पत्थर ही बना डाला था मैंने । मन का एक कोना सील कर दिया था मैंने । उसे जबरदस्ती खुलवाने की क्या जरूरत थी ? कम्बख्त एक घाव देकर चला गया । अब यह जिंदगी-भर रिसता रहेगा । टीसता रहेगा ।"

बोलते-बोलते उनकी आवाज भरभरा गई थी । उन्होंने दोनों हाथो से अपना चेहरा ढॉप लिया और आर्त स्वर में कह उठे, "चीनू रे, तू क्यो आया था यहाँ ? क्यो ? क्यो ?"

मैंने उनके ऑसू पोछने की अनधिकार चेष्टा नहीं की । उन्हे अपने बेटे के साथ, उसकी स्मृतियो के साथ अकेला छोड दिया और दबे पाँव बाहर निकल आई, पर उनका वह आर्तनाद बिस्तर तक मेरा पीछा करता रहा, 'चीनू रे, तू क्यो आया था यहाँ ?'

उनके इस कातर प्रश्न का उत्तर मेरे पास था । वह मेरे मन की शांति छीनने आया था । वह आया था मेरे बच्चों के मन मे जहर बोने । वह अपने पिता को अनुताप की भट्ठी मे झोंकने आया था । मेरी हँसती-खेलती गृहस्थी में आग लगाने आया था ।

अपनी माँ का सच्चा सपूत था वह । अपनी माँ का ऋण चुकाने आया था ।

अवसान एक स्वप्न का

बैक से लौटकर देखा, दीदी शरबत के गिलास समेट रही है। और गिलास भी उस महँगे वाले सेट के थे, जो खास-खास मेहमानों के लिए ही निकलता था।

"कोई आया था ?"

"हाँ, दादा भाई आए थे।"

"क्या" ," और मै बेहोश होने की मुद्रा मे सोफे पर लुढ़क गई, फिर निहायत सजीदगी से पूछा, "दीदी, दादा की तबीयत तो ठीक है न ?"

"तू कभी ठीक से बात करना सीखेगी ?"

"सॉरी दीदी, बेअदबी के लिए माफी चाहती हूँ, पर वो क्या है कि यह बात एकदम से हजम नहीं हो रही थी। मै तो सोचती थी कि भाई साहब इस घर का पता तक भूल गए है।"

"वक्त पड़ने पर सब कुछ याद आ जाता है।"

"हाय राम ! उन पर ऐसा बुरा वक्त आन पड़ा है ?"

"हॉ, बुरा वक्त ही समझो। हिंदुस्तानी भाषा मे लडकी वैसे ही आफत की पुड़िया होती है, फिर जब वह शादी के लायक हो जाती है, तो बाप का बुरा वक्त आया ही समझो ?"

"यू मीन, हमारी छटकी स्वीटी शादी के लायक हो गई है ? आई काट बिलीव।"

"तुम किस दुनिया मे रहती हो भारती, तुम्हें यह भी पता नहीं कि स्वीटी तीन साल से एम०ए० करके घर मे बैठी है और उसके लिए ताबड़तोड़ लडके ढूँढे जा रहे है।

"थैक्स फॉर द इफॉरमेशन, अब यह बताइए कि उन्हे एकाएक हमारी याद कैसे आ गई ? देर से ही सही, शायद उन्हें यह खयाल आया हो कि पहले घर की इन दो लड़कियो को निबटा देना चाहिए, फिर अपनी बेटी के बारे मे सोचना उचित होगा।"

"माई डियर भारती, क्या तुम उन लोगो से इस तरह की सदाशयता की आशा कर सकती हो ? जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मुझे तो उन्होंने कब से इस लाइन से खारिज कर दिया है, क्योकि भाभी जिस-तिस से कहती फिरती है कि अब इत्ती बड़ी लडकी के लिए कोई जूते थोडे ही चटखाता है। वह तो अपना दूल्हा खुद ढूँढ लेती हैं "

"हॉ, और आप मे उतने गट्स नहीं है और जब तक बडी बहन बैठी हुई है, छोटी के लिए तो सोचा ही नहीं जा सकता । हाऊ सैड ।"

और मै झूठमूठ मुॅह लटकाकर बैठ गई । दीदी बेचारी खुद मेरे लिए चाय बनाकर ले आई, "ए लड़की, अब नाटक बद । हाथ-मुॅह धोकर कपड़े बदलो ।"

मैने चाय का कप हाथ मे लेते हुए कहा, "दीदी मणि, गम गलत करने का और कोई उपाय आपके पास नहीं है ? जब देखो बस चाय ।"

दीदी ने इस बार मुझ पर एक चपत जड दी और हॅसती हुई किचन मे चली गईं । हम दोनो के बीच एक अलिखित समझौता है । दीदी का कॉलेज सुबह का है, इसलिए सुबह घर मै देखती हूॅ । शाम को मेनू दीदी तय करती है । वह बड़ी तन्मयता से सब्जी की डलिया टटोल रही थीं । सावित्री को शाम के खाने के निर्देश दे रही थीं और मै सोच रही थी कि क्या ये सचमुच उतनी ही निर्लिप्त है, जितनी ऊपर से दिखाई देती है । क्या उनके मन पर जरा-सी भी खरोंच नहीं आई है ? जबकि स्वीटी की शादी की बात सुनकर मै भीतर तक तिलमिला उठी थी । मै दुखी होने का सिर्फ नाटक नहीं कर रही थी । मन मे सचमुच कुछ चुभ रहा था ।

चाय पीकर मै नहाने चली गई । नहाने से जी कुछ हलका हुआ । मेरा पुराना खिलदड़ापन लौट आया । एक हलका, ढीला-सा चोगा पहनकर मै दीवान पर पसर गई और मैने कहा, "तो आरती जी, आपने यह तो बताया ही नहीं कि परम पूज्यनीय भ्राताश्री हमारे गरीबखाने पर क्यूॅ तशरीफ लाए थे ? हम उनकी क्या मदद कर सकते हैं ? वैसे उनकी कृपा से शादी-ब्याह के मामले में हम लोग तो एकदम सिफर है । उन्हे तो किसी अनुभवी बल्लेबाज से सलाह लेनी चाहिए ।"

"देवीजी, भ्राताश्री को न तो हमारी मदद की जरूरत है, न सलाह की । उनका वश चलता तो हमारे पास सीधा शादी का कार्ड ही पहुॅचता ।"

"तो फिर उनकी बेबसी का कारण क्या है ?"

"इस बार जो आई०ए०एस० लड़का उन्होने तलाश किया है, उसकी बहन मेरे कॉलेज में ही पढ़ाती है ?"

"कौन ?"

"कुजलता प्रसाद । तुम नहीं जानतीं । इसी साल अपॉइंटमेंट हुआ है । पिता रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज है । कुजलता के पति भी तिलहन सघ मे कोई बड़ी तोप है । बड़ी हाई-फाई फैमिली है । तो दादा भाई ने सोचा होगा, एक जैक और लगा लिया जाए । वे लोग कल लखनऊ से आएॅगे । परसों सुबह लड़की देखने का कार्यक्रम है । तो दादा की इच्छा है मै भी उस समय वहॉ उपस्थित रहूॅ ।"

"दीदी, इस कुजबाला का जरा पता तो देना ।"

"कुजबाला नहीं कुजलता । उसका पता लेकर क्या करोगी ?"

"उसे आगाह कर दूँगी कि अगर अपने माँ-बाप की खैर चाहती हो, तो यह रिश्ता मत होने देना । उनका बुढ़ापा तो बिगड़ेगा ही, तुम्हारा पीहर भी छिन जाएगा ।"

"कैसी बाते करती हो ?"

"ठीक ही तो कह रही हूँ । उस धरती मे अच्छा बीज कभी पनप ही नहीं सकता ।"

"देख बिन्नो, दादा ने चाहा है कि मै उनकी थोडी-सी सिफारिश कर दूँ । अगर हम वह नहीं कर सकते, तो कम से कम चुप तो रह सकते है । किसी भी बहन-बेटी की शादी मे विघ्न डालने से पाप लगता है, जानती हो, फिर यह तो अपनी ही बेटी है ।"

"और मित्र को धोखे मे रखना पाप नहीं है ? कम से कम उसे इतना तो समझा दो कि अपनी अम्मा के गहने समेटकर अपने लॉकर मे रख ले । नहीं तो उड़न-छू हो जाएँगे ।"

"भारती, यू आर रियली इम्पॉसिबल ।" मुझे पता था दीदी मुझे उस कुजविहारिणी का पता कभी नहीं बताएँगी । बता भी देतीं, तो क्या मै चली जाती । बस, वह तो अपना गुबार निकालने का एक प्रयास-भर था । सच, बड़ा मन होता है कभी-कभी कि इन लोगो की असलियत लोगों पर जाहिर की जाए । बड़े सोफिस्टीकेटेड बनते है, पर भीतर से क्या है, यह हमसे बेहतर कौन जानता है ?

आज अपने मतलब से बहन की चौखट पर आए है । नहीं तो कई बार राखी-भाईदूज भी सूने निकल जाते हैं । साल में यही दो दिन थे, जब हम उनके आलीशान बँगले पर जाते थे । एक बार हमने भाभी को कहते सुन लिया, "लो, आ गई देवियाँ चौथ वसूलने ।"

उस दिन के बाद वहाँ जाना छोड़ दिया । दीदी तो शायद भैया को इस बात का पता भी न लगने देतीं, पर मैने फोन पर साफ-साफ कह दिया । यह भी जता दिया कि मन हो तो हमारे गरीबखाने पर चले आया करे । हम यथाशक्ति-यथाभक्ति टीका कर देगे । अगर न आ सके, तब भी कोई मलाल नहीं है । दुनिया मे कइयो के भाई नहीं होते, पर वे भी जी लेती है, हम भी जी लेगी ।

विडंबना तो यह है कि हमारे एक नहीं, दो-दो भाई है । बड़े के ये हाल है और छोटा तो सालो से दुबई मे जमकर बैठा है । वहाँ से कमा-कमाकर ससुराल वालों को भेज रहा है । वे उसके लिए महल तामीर कर रहे है, पर जिसने उसे इस लायक बनाया है, उसकी सुध लेने के लिए उसके पास फुरसत नहीं है । दु ख तो यही है कि दीदी ने ऐसे नालायक

के लिए अपने सारे सुख ताक पर रख दिए, अपना जीवन होम कर दिया।

एक जमाना था, जब लोग हमारे परिवार की मिसाल दिया करते थे। लगता है, उन्हीं की नजर लग गई और वे सुहाने दिन सपना होकर रह गए।

पापा रेवेन्यू मे क्लास वन ऑफीसर थे। माँ सुघड गृहिणी थीं। दो भाई, दो बहने। दादा इजीनियर बन गए थे। दीदी एम०ए० कर रही थीं। गगन को उसी साल बगलौर मे दाखिला दिलवाया था। मै शायद आठवीं या नौवीं में थी।

दादा भाई के इंजीनियर होते ही रिश्तों की बाढ़-सी आ गई थी। रिश्ते भी ऐसे-ऐसे कि मुँह मे पानी आ जाए। एक सज्जन तो जबरदस्ती लड़की दिखा गए। लड़की क्या थी, सोने का टुकडा था। भैया को तो रीझना ही था, माँ-पापा भी मना नहीं कर सके।

नानी ने दबी जबान से कहा, “पहले बड़ी को निबटा लेते। बाद मे लड़कों का मन कैसा हो जाएगा, कोई कह नहीं सकता।”

पापा बोले, “उसकी भी हो जाएगी। पहले एम०ए० तो कर लेने दो और यहाँ लडके की परवाह किसे है। अभी तो मै बैठा हूँ।”

बेचारे पापा। उन्हे क्या पता था कि उनकी इसी गर्वोक्ति को विधाता चुनौती के रूप मे ले लेगा। दीदी का रिजल्ट आने को था। भाभी प्रसव के लिए पीहर गई हुई थीं। पूरा घर प्रतीक्षारत था, पर एक तीसरी ही खबर ने सबको पत्थर बना दिया। पापा, जो हमेशा की तरह हँसते हुए टूर पर गए थे, कभी वापिस नहीं लौटे। लौटा उनका निश्चेतन शरीर।

भाभी को ताजिदगी यह मलाल रहा कि श्वसुर की असामयिक मृत्यु ने उनके पुत्र के जन्मोत्सव का उल्लास छीन लिया था। इम अपराध के लिए उन्होने पापा को कभी क्षमा नहीं किया। कितने ही वर्षों तक वे उसका जन्मदिन पीहर जाकर मनाती रहीं। बाद के वर्षों मे उन्होंने यह परहेज भी छोड़ दिया। कहतीं, “मरे हुए को कोई कितने दिन रोएगा। आखिर बच्चो के भी कुछ अरमान होते है।”

दु ख और आघात से माँ एकदम जड़ हो गई थीं। कच्ची गृहस्थी थी और भविष्य सामने मुँह बाए खडा था। उसकी पहली झलक महीने-भर के भीतर ही मिल गई।

श्राद्धकर्म आदि से निवृत्त होने के बाद गगन बगलौर जाने की तैयारी कर रहा था। एक दिन खाना खाते हुए उसने पूछ लिया, “दादा, इस सोमवार का रिजर्वेशन करा लूँ ? पढ़ाई का काफी नुकसान हो रहा है।”

दादा ने एक बार हम सबकी ओर देखा और फिर गला खखारकर बोले, “अच्छा हुआ जो तुमने खुद ही यह विषय छेड़ दिया। मै तुमसे बात करने ही वाला था कि अब यह बंगलौर वाला प्रोजेक्ट छोड दो यहीं रहकर बी०एस-सी० वगैरह कर लो पापा थे

तब बात और थी, पर मै तुम्हारा बगलौर का खर्च नहीं उठा सकता ।"

हम सब लोग सकते मे आ गए। दादा यह क्या कह रहे है। छोटे का कैरियर क्या यूँ ही अधर मे छोड़ देगे ? और जो चालीस हजार डोनेशन के दिए है, उसका क्या होगा ? आजकल तो लाखो मे बात होती है, पर उन दिनो चालीस-पचास हजार मे काम हो जाता था ।

बडी देर बाद माँ ने हिम्मत की, "बेटा समीर, तुम यह कैसी बातें कर रहे हो ? आखिर तुम्हे भी तो हमने पढाया था । क्या बिना पैसे खर्च किए ही तुम इंजीनियर बन गए थे ?"

"माँ, खर्च तो सबकी पढाई पर होता है, पर यह वाजिब हो तो अच्छा लगता है । मेरे एडमिशन के लिए आपको इतने रुपए नहीं लुटाने पड़े थे । मै अपनी मेरिट के बल पर ही प्रवेश पा गया था । गगन की जिद पर पापा ने इतना बड़ा जुआ खेला । मैं तो तब भी इसके खिलाफ था, पर उस समय पापा खर्च कर रहे थे । मुझे बोलने का कोई हक नहीं था, पर अब तो यह सब मुझे ही भुगतना है और साफ बात है कि यह मेरे वश का नहीं है ।"

"बेचारे," भाभी बोल पड़ी थीं, "इतनी बड़ी गृहस्थी और कमाने वाले एक अकेले । बेचारे कहाँ तक करेंगे ।"

माँ का चेहरा फक पड गया । बहूरानी ने खतरे की पहली घंटी बजा दी थी । गगन भैया का भी मुँह इतना-सा निकल आया था ।

तब दीदी ने पहल की थी, "भैया, छोटू की फिक्र मत करो । आज से उसका जिम्मा मैंने लिया । पापा ने मेरी शादी के लिए कुछ रुपए रख छोड़े है । आज से वे मैंने गगन के नाम पर दिए । रुपयों के अभाव में मेरी शादी न हो सकी, तो कोई बात नहीं, पर उसकी पढ़ाई नहीं रुकनी चाहिए और भाभी, आज या कल मुझे नौकरी जरूर मिल जाएगी । तब मैं भरसक दादा का हाथ बॅटा सकूँगी, लेकिन मेहरबानी करके मेरी माँ की गृहस्थी को मत कोसिए ।"

दीदी फर्स्ट क्लास एम०ए० थीं । मेरिट होल्डर थीं । नौकरी मिलने मे जरा भी दिक्कत नहीं हुई । वेतन भी अच्छा था, जिसे वे लाकर दादा के हाथ पर रख देती थी, लेकिन फिर जरा-जरा-सी बातों के लिए उन्हीं के आगे हाथ पसारना पडता । वह खुद तो कुछ नहीं कहते थे, पर जो कुछ भाभी से कहलवाते थे, उसे सुनकर कलेजा छलनी हो जाता था । इतने दिनो बाद पता चला कि जिसे हम सोने का टुकड़ा समझकर घर मे लाए थे, वह तो आग का गोला थी । तन-मन को राख करने की क्षमता उसमें थी ।

माँ की पेंशन स्वीकृत होने में चार-छह महीने लग गए । वे दिन बडे कसाले मे

कटे। माँ, दीदी के वेतन का हश्र देख चुकी थी। इसलिए उन्होंने अकलमदी का काम यह किया कि पेंशन अपने पास ही रखती रहीं। किसी को हाथ नही लगाने दिया। अपने और बच्चों के छोटे-मोटे खर्चे उसी मे से चलाती रही। अपना पैसा हाथ मे रहने से उनमे एक आत्मविश्वास-सा आ गया था और वह अत समय तक दबग बनी रहीं। यह जरूरी भी था। किसी सीधी-सादी औरत को तो भाभी खा ही जातीं।

अब माँ के सामने बस एक ही चिंता थी, दीदी की शादी। जैसे-जैसे दीदी की उम्र बढती जा रही थी, माँ का धैर्य चुकता जा रहा था। उधर भाभी पर दिन-ब-दिन निखार आता जा रहा था। उसके लिए वह सौ-सौ जतन भी कर रही थीं। इधर दीदी दिन-पर-दिन बुढ़ा रही थी। पहनने-ओढ़ने का उन्हे जरा भी शौक नही रहा था। सजने-सँवरने के प्रति भी वह उदासीन होती जा रही थीं। कभी मै जिद करती, तो कहतीं, "रहने दे रे, यह सब करके मुझे अब किसको रिझाना है ?"

भरी जवानी मे उनका यह जोगन-सा बाना माँ को सौ-सौ दश देता था।

छोटे भैया जब भी छुट्टियो मे आते, माँ को आश्वस्त करते, "माँ, तुम चिंता मत करो। बस, मेरी नौकरी लग जाने दो। साल-भर के अदर दोनों बहनो के हाथ पीले कर दूँगा। बड़े आँखो पर पट्टी बाँधकर बैठे है, तो बैठने दो, मै तो हूँ।"

छोटे की बात से माँ को बहुत दिलासा मिलती, पर पढ़ाई थी कि खत्म ही नहीं हो रही थी। हर बार एक-दो विषय रह जाते। तब लगता, दादा ठीक ही कह रहे थे। लडके की कुव्वत जाने बिना पापा ने जबरदस्ती उसे यह कोर्स दिलवा दिया। अब न तो छोडते बनता है, न खर्च पूरा पड़ता है।

यथावकाश मैंने बी०कॉम कर लिया। एम०कॉम करते हुए मैने बैंक की परीक्षाएँ भी दे डालीं। एक मे सलेक्शन भी हो गया। तब मैंने माँ से कहा, "माँ, अब आप दीदी की शादी की फिक्र कीजिए, आगे की नाव मै खे लूँगी।"

माँ ने दादा से बात की, तो दादा बोले, "शादी कोई हँसी-खेल है, जो आपके कहते ही हो जाएगी ? हाथ मे कुछ होना भी चाहिए कि नहीं ? मोटी हुंडी के बिना तो लडके वाले चौखट पर झाँकने भी नहीं देते।"

माँ ने अपने सारे गहने निकालकर दादा के हाथ पर रख दिए, "इन्हे चाहे बेच दो या गिरवी रख दो, पर अब आरती की शादी हो जानी चाहिए।"

माँ के गहने जो एक बार भैया के लॉकर मे गए, तो दुबारा नजर नहीं आए। शहर से दूर भैया का आलीशान बँगला जरूर बनता रहा। माँ की बरसी के दिन ही उसका उद्घाटन किया गया। नाम दिया था 'मातृछाया'। जब सब लोग गद्गद होकर दादा की मातृभक्ति की प्रशंसा कर रहे थे तो मैने जानबूझकर रिश्तेदारो से कहा "चलो इन लोगो

ने इतनी ईमानदारी तो बरती है, माँ की पूँजी से बने मकान को माँ का नाम तो दिया।"

भाभी का चेहरा उस समय देखने काबिल हो गया था।

छोटे भैया माँ को बड़े टमखम के साथ आश्वासन देते रहते थे। माँ बिलकुल आस लगाए बैठी थीं कि एक दिन मेरा यह परम-प्रतापी पुत्र आएगा और मुझे इन राक्षसो के चगुल से मुक्त कराएगा, पर वे सारे दावे खोखले साबित हुए। सात साल लगाकर उन्होंने बी०ई० पास किया, फिर एक साल तक नौकरी के लिए भटकते रहे। तभी उनके एक सहपाठी ने उन्हे लपक लिया और अपनी इकलौती बहन के साथ शादी का प्रस्ताव रख दिया।

माँ इस शादी के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। माँ ही क्यो, हम मे से कोई भी मानसिक रूप से इसके लिए तैयार नहीं था। इस शादी का मतलब था—दादा पर एक और बोझ डालना। इस शादी का मतलब था—दीदी की शादी और दो-चार साल के लिए टल जाना।

इधर हम लोग इस ऊहापोह मे व्यस्त रहे। उधर ये दोनो प्रेम की पींगे बढाते रहे। लडकी वालो ने जानबूझकर उन्हे छूट दे रखी थी। यह एक तरह से अरेञ्ज्ड लव मैरिज थी। शादी बिना किसी की रजामदी के, बिना किसी लेन-देन के सपन्न हो गई। उन लोगो को मुफ्त मे इजीनियर दूल्हा मिल गया।

शादी करके लौटे, तो भैया बहुत शर्मिदा थे। बोले, "चिता मत करो माँ, अब हम दोनो मिलकर तुम्हारा घर भर देगे।" पर जिसके दम पर उन्होने यह आश्वासन दिया था, वह पहले दिन से ही मुँह फुलाए रही। हम लोगो ने इस शादी का विरोध किया था, इस बात को उसने सही रूप में नहीं लिया। वह जितने दिन रही, अनमनी ही रही। उन्हीं दिनो गल्फ से एक मोहक प्रस्ताव आया, यह भी उनके ससुराल वालों की कोशिश थी। मना करने का प्रश्न ही नहीं था।

और एक दिन सुमुहूर्त में दोनो दुबई रवाना हो गए।

फिर क्या था, भाभी को खुलकर बोलने का मौका मिल गया, "अरे, यह तो मै ही थी, जो इतने बरस तक इतने बड़े परिवार को झेलती रही, और किसी का बूता थोड़े ही है। छह महीने मे ही भाग खडे हुए।"

छोटे के जाने के बाद भाभी की वाणी में और धार आ गई थी। मन तो होता था, सब कुछ छोड-छाडकर कहीं भाग जाएँ, पर माँ के कारण पैर बँधे हुए थे। वह घर की लड़ाई को सड़क पर लाना नहीं चाहती थीं। वैसे भी वह शरीर और मन से इतनी टूट गई थीं कि उन्होंने खाट ही पकड़ ली। हम दोनो बहने शात मन से उनकी मुत्यु की प्रतीक्षा करती रहीं। जब जीने योग्य कुछ न बचा हो तो मृत्यु भी वरदान लगती है।

मॉ की तेरही में छोटे भैया, आखिरी बार आए थे । जाते समय बोले, "एक मॉ का ही आकर्षण था, जो घर आने के लिए मजबूर करता था । अब तो मै इस घर में पॉव भी न दूँगा । आप लोगो का जब मन हो मेरे पास आती रहना ।"

वे केवल शब्द थे । उस निमत्रण मे ऊष्मा नहीं थी, आग्रह नही था । बाद के वर्षो मे उसे दोहराया भी नही गया ।

हम लोगो को पता भी न था, पर मॉ मरने से पहले एक बड़ा काम कर गई थी । मकान वह हम दोनो के नाम कर गई थीं । यह भी व्यवस्था थी कि मकान केवल शादी के खर्च के लिए ही बिकेगा अन्यथा नहीं । जिस बहन की शादी होगी, केवल उसका ही हिस्सा बिकेगा ।

मॉ की तेरही के बाद छोटे भैया ने तुरत ही जाने का प्रोग्राम बना लिया था । इसलिए वकील साहब भागे-भागे आए और उन्होंने यह वसीयत सुना दी । व तो मॉ की दूरदर्शिता की दाद दे रहे थे, पर बाकी सबके मन खट्टे हो गए थे । छोटे भैया तो घर के प्रति अपनी नफरत जता चुके थे, इसलिए कुछ नही कह सके । छोटी भाभी ने मुँह बिचकाकर कहा, "वह जीते जी हमे क्या दे गई, जो मै मरने के बाद आशा लगाती ।" बड़ी भाभी तो अपना दिखावे का रोना भी भूल गई । अपनी इमेज का खयाल न होता, तो वह वहीं मॉ को कोसना शुरू कर देती ।

दादा का चेहरा लेकिन ऐसा हो गया था कि देखकर दया आ रही थी । भरे गले से बोले, "इसका एक ही अर्थ निकलता है कि मॉ को मुझ पर विश्वास नहीं रहा । इतने दिनों तक इतना सब किया । उसका अगर यही फल है, तो यही सही ।"

साल बीतते न बीतते वे अपने बॅगले मे रहने चले गए । महानगरो मे चौदह-पद्रह किलोमीटर की दूरी, दूरी नही लगती, पर जो दूरी, जो फासला दिलो के बीच आ गया था, वह अखरने वाला था ।

इतने दिनो बाद दादा भाई को आज बहन की याद आई है । वह भी इसलिए कि शिवानी के लिए आई०ए०एस० दूल्हा तजवीज करना है । इस लड़की का नाम दीदी ने बडे चाव से अपनी प्रिय लेखिका के नाम पर रखा था, पर वह नकचढ़ी बिलकुल अपनी मॉ की बेटी है । कभी सीधे मुँह बात नहीं करती । अपनी कायनेटिक पर पूरे शहर का चक्कर लगाती रहती है, पर कभी इधर झॉकने भी नहीं आती ।

ऐसी लड़की के लिए मै कोई सिरदर्द नहीं लेती, पर दीदी तो हमारी सौजन्य की प्रतिमूर्ति है । नियत दिन, नियत तिथि पर ईमानदारी से तैयार हो गईं । मुझसे भी कहा कि चली चलो, पर मैं राजी नहीं हुई ।

"तुम तो जानती हो दीदी कि मुझे जबान को लगाम देना नहीं आता कुछ

उलटी-सीधी बात मुँह से निकल गई, तो सारा शो बिगड जाएगा ।"

"जरा अपनी जबान पर काबू रखना सीखो ।"

"खैर, यह तो अब अगले जनम मे सभव होगा, पर तुमको भी मैं इस तरह सिलबिल-सी नहीं जाने दूँगी । वे लोग क्या कहेगे ?"

"कोई वे मुझे देखने आ रहे है ?"

"तो क्या हुआ । लोग पूरे परिवार को देखते है, परखते है । ऐसा न होता, तो भ्राताश्री तुम्हे कष्ट क्यो देते । मुझे बस पंद्रह मिनट दो । मै अभी तुम्हारा कायाकल्प करती हूँ ।"

और दीदी के लाख मना करने के बावजूद मैंने उनका जूडा खोल दिया । जूडा क्या था, बस लबे बालों को हाथ पर लपेटकर गठान-सी डाल ली थी । मैंने बहुत सुदर कलात्मक-सा जूडा बनाया । उस पर एक पीले गुलाब का फूल टॉक दिया । अपनी एक पोचमपल्ली पहनने को दी । उनके वार्डरोब मे तो चन्देरी के सिवा कुछ था ही नहीं । हैदराबादी मोतियो का एक पतला-सा सेट उन्हें पहनाया । हलका-सा मेकअप भी कर दिया । पर्स और चप्पल तक अपनी निकालकर दी ।

जब मै सतुष्ट हो गई, तो मैने कहा, "अब आईने मे देखो, खुद को भी पहचान नहीं पाओगी ।"

दीदी ने आईने मे देखा और अपने प्रतिबिब पर खुद ही लजा गई ।

"सच दीदी, आज इतनी सुदर लग रही हो कि बस, कहीं दूल्हे मियाँ स्वीटी को छोडकर तुम्हे ही न घूरने लगे ।"

"बकवास मत कर, कहीं ऐसा हो गया न, तो भाभी मेरा मुँह नोच लेंगी ।"

तब मुझे क्या पता था कि मेरे मुँह से होनी ही बोल रही है ।

तैयार होकर दीदी बाहर निकलीं, तो मुझे होश आया, "दीदी, अब यह आशा करना तो व्यर्थ है कि भ्राताश्री आपके लिए गाड़ी भेजेगे, पर मै आपको पद्रह किलोमीटर स्कूटर पर नहीं जाने दूँगी । मेरी सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा । पाँच मिनट रुको, मै अभी ऑटो लेकर आती हूँ ।"

आश्चर्य, दीदी ने मेरा प्रतिवाद नहीं किया । इतना सज-सँवरकर स्कूटर पर जाते उन्हे खुद संकोच हो रहा होगा ।

वहाँ से लौटने के बाद लेकिन खूब बिगड़ीं, "मुझे कितना लेट करवा दिया आज । पता है, वे लोग मुझसे पहले पहुँच गए थे और सबके सामने मैने ऐसे प्रवेश किया, जैसे मै ही गेस्ट ऑफ ऑनर हूँ ।"

"यही तो मै चाहती थी ।"

"क्या ?"

"कि सब लोग तुम्हें देखें, एप्रिशिएट करे ।"

"और लोग तो जैसे देख रहे थे, ठीक ही था, पर भाभी तो एकदम ऑखे फाड़कर देख रही थीं ।"

"तुम्हारी सज्जा उनसे इक्कीस थी न, जलकर खाक हो गई होगी, बेचारी ।"

"और पता है, बाद मे स्वीटी ने क्या कहा ? बोली, बुआ आपको कनफ्यूजन हो गया लगता है । आज कोई मेरी सगाई थोड़े ही है । आज तो वे लोग सिर्फ मुझे देखने आए है ।"

"उससे कहना, हमारी बद्दुआएँ लगती रहीं, तो तेरी सगाई कभी होगी भी नहीं ।"

"चुप कर, कुछ भी बके चली जाती है । वे लोग क्या हमारे दुश्मन है ?"

"उन्हे दोस्त भी तो नहीं कहा जा सकता । हाँ, उनका एक ही प्लस पॉइंट है । वे भी उसी मॉ की कोख से पैदा हुए है ।"

तीसरे ही दिन शायद रविवार था । मै सोफे पर पसरकर टी०वी० देख रही थी कि फाटक के पास गाडी रुकने की आवाज आई । खिड़की से झॉककर देखा, दादा भाई मय भाभी पधार रहे है । लगता है, स्वीटी की शादी तय हो गई है, तभी तो भाभी भी साथ आई है । नहीं तो वह इस घर का रास्ता ही भूल गई है ।

मैंने खूब घूर-घूरकर देखा, पर उन लोगो के हाथ मे मिठाई का कोई पैकेट नजर नहीं आया । भाभी पर इतना गुस्सा आया । कंजूस कहीं की । अरे, जरा मुँह मीठा करवा देती, तो क्या खजाने में कोई कमी आ जाती ।

मैने भरसक प्रसन्न मुद्रा मे दोनों का स्वागत किया । दोनो मातमी सूरत बनाकर घर मे घुसे और मुँह लटकाकर सोफे पर बैठ गए ।

दीदी अभी-अभी नहाकर निकली थीं और पीछे ऑगन मे बाल सुखा रही थीं । मैने कहा, "आरती जी, आरती का थाल सजाकर बाहर लाइए । लक्ष्मीनारायण आए है ।"

"मतलब ?"

"दादा-भाभी आए है ।"

"अरे वाह !" दीदी का चेहरा खुशी से चमक उठा । गीले बालो को तौलिए में लपेटकर वह बाहर जाने को उद्यत हुईं, फिर रुककर बोलीं, "आज सावित्री की छुट्टी है । चाय बना दोगी प्लीज ।"

"मन तो नहीं है, पर तुम कहती हो, तो बना दूँगी ।" मैने मुँह बनाकर कहा । दीदी आश्वस्त होकर बाहर चली गई । दस मिनट बाद जब मै चाय लेकर बाहर गई, तो देखा, कमरे मे सन्नाटा पसरा हुआ है और तीनो अपनी-अपनी कुर्सियों मे सिर झुकाकर

बैठे हुए है ।

मेरी कुछ समझ मे नहीं आया, पर चुप रहना भी मेरी फितरत मे नहीं है । इसलिए चाय लगाते हुए मैंने कह ही दिया, "लगे हाथ आपको बधाई दे दूँ ।"

"बधाई अपनी दीदी को दो ।"

"उन्हे तो खैर दूँगी ही । उन्हीं की सिफारिश से काम बना है, पर बधाई के असली हकदार तो आप है । वैसे हम सब एक-दूसरे का अभिनदन कर सकते है । इस पीढ़ी की यह पहली शादी होगी न ।"

"नही, अभी तो पिछली पीढ़ी का ही हिसाब चल रहा है ।"

"अरे वाह ! मै तो सोच रही थी कि वह खाता बंद हो गया है । फाइल क्लोज्ड ।"

"भारती, थोड़ी देर चुप रहोगी ?"

दीदी मुझसे इस स्वर मे बोलेंगी, मैंने कभी सोचा भी न था । अपमान मे मेरे तो ऑसू निकल आए । ये लोग सामने न होते तो मै रो देती ।

कमरे मे एक असहज मौन छा गया था । बडी देर बाद दादा ने ही उसे तोडा । बोले, "उन लोगो ने अपने एक तलाकशुदा भाई के लिए आरती का हाथ मॉगा है ।

तलाकशुदा शब्द सुनकर मुझे तो जैसे आग लग गई । दीदी की परवाह न करते हुए मैंने कसैले स्वर मे कहा, "अरे वाह ! यह तो बडा ही शुभ समाचार है, फिर आप लोगों के चेहरे इतने उदास क्यो है ?"

"उन लोगो ने स्वीटी को रिजेक्ट कर दिया है ।" दादा डूबती-सी आवाज मे बोले ।

"ओह, सो सैड ! कोई वजह तो बताई होगी ।"

"वजह अपनी दीदी से पूछो ।" भाभी एकदम फट पडीं ।

"आपका मतलब है, दीदी की वजह से यह शादी टूटी है । इम्पॉसिबल, दीदी के दुश्मन भी उन पर इस तरह का इलजाम नहीं लगा सकते ।"

"यही तो मै भी कह रही हूँ," दीदी रुँआसे स्वर मे बोलीं, "आई एम वेरी सॉरी अबाउट स्वीटी, पर मुझे पता तो चले कि मेरा कसूर क्या है ?"

"अब इतनी भोली भी मत बनो आरती, तुम्हे मिसेज प्रसाद के लदन पलट चाचा के बारे मे सब कुछ मालूम था । तभी तो पूरी तैयारी के साथ वहाँ पहुँची थीं ।"

"मै अपनी मर्जी से नहीं गई थी भाभी, दादा खुद आकर निमत्रण दे गए थे ।"

"और तुमने उस निमत्रण का पूरा लाभ उठाया । ऐसे बन-सॅवरकर पहुँची थीं, जैसे वे लोग तुम्हे ही देखने आए हो । अरे, इतना ही शौक था, तो हमसे कहतीं । हम तुम्हारे लिए अलग से प्रोग्राम अरेंज कर देते, पर इस तरह स्वीटी के भविष्य से खिलवाड़ करने की क्या जरूरत थी ?"

दीदी ने असहाय भाव से मेरी ओर देखा, समझ गई कि यह बमबारी झेलना उनके वश का नहीं है । फौरन भाभी की सुपर फास्ट को बीच मे रोक लिया, "एक मिनट भाभी, प्लीज मुझे इतना बता दीजिए कि दीदी ने स्वीटी के भविष्य के साथ क्या खिलवाड किया है ? मेरी समझ मे यह नहीं आ रहा कि दीदी चाहे जितना बन-सॅवर ले, उससे स्वीटी को क्या खतरा हो सकता है ? बहुत से बहुत यह शिवानी की चचिया सास बन जाती, पर यह तो कोई खौफ खाने वाली बात नहीं है । उनके जैसी निरीह सास तो दुनिया मे ढूँढे नही मिलेगी । खैर, आपको एक बात बता दूँ, उस दिन दीदी को मैंने ही तैयार किया था । यह तो हमेशा की तरह सिलबिल-सी चली जा रही थीं । मैंने ही कहा कि दादा की प्रेस्टिज का सवाल है । वहाँ बड़े-बडे लोग आएँगे । तुम ऐसे लस्टम-पस्टम चली जाओगी, तो क्या इम्प्रेशन पड़ेगा ?"

"अरे, इम्प्रेशन तो उसने खूब जमाया था, पॉलिटिक्स, लिटरेचर, म्यूजिक, स्पोर्ट्स कोई विषय हो, हर विषय पर अपना ज्ञान बघारती रही । धुआँधार बोलती ही रही । स्वीटी को तो मुँह खोलने का मौका ही नहीं दिया ।"

मुझे तो हॅसी आ गई । स्वीटी बेचारी मुँह खोलती भी, तो क्या बोलती ? माइकल जैक्सन, अलिशा चिनॉय, सिडनी शेल्डन और बोल्ड एड ब्यूटीफुल के आगे तो उसकी दुनिया ही नहीं है । उस आई०ए०एस० लड़के ने जरूर उसकी औकात परख ली होगी । तभी तो

पर प्रकट रूप से मैने अत्यत गंभीर स्वर मे कहा, "भाभी, मै आपसे यही कहना चाहती थी, दीदी के पास अपनी ग्रेस है, गरिमा है, प्रतिभा है । दूसरों को इम्प्रेस करने के लिए वह किसी साज-शृगार की मोहताज नहीं है । वैसे भी इस उम्र मे रूप-सज्जा कोई मायने नहीं रखती । वह तो मेरी जिद थी, जो उन्होंने पूरी की । दोष अगर देना है, तो मुझे दीजिए ।"

भाभी कुछ नहीं बोली । मुँह फुलाए बैठी रहीं । कमरे मे फिर एक चुप्पी पसर गई । कुछ देर बाद मेरा तो दम घुटने लगा । सोचा कि इस बैठक का अब समापन ही कर देना चाहिए । इसलिए बड़े ही नाटकीय अदाज मे कहा, "स्वीटी के लिए सचमुच बडा दु:ख हो रहा है । बेटर लक नेक्स्ट टाइम । हो सकता है, उसके भाग्य में इससे भी अच्छा दूल्हा हो, पर इस समय आपकी जो मन:स्थिति है उसे मै समझ सकती हूँ, पर इसके बावजूद आप यह संदेश देने यहॉ तक आए, सचमुच यह आपका बडप्पन है ।"

भाभी एकदम भडक गईं, "हम कोई सदेश-वदेश देने नहीं आए है, समझीं । ऐसे महात्मा नहीं है हम । हम तो सिर्फ यह बताने के लिए आए है कि तुम लोगों ने हमारे साथ कितनी घटिया हरकत की है और यह भी कह देते है कि कल के गए अगर शादी करे

तो हमें कन्यादान का न्यौता मत देना। हम नहीं आएँगे।"

"भाभी प्लीज, जरा मेरी बात तो सुनिए।"

"तुम चुप रहो दीदी, हर बात पर क्षमा-याचना की मुद्रा में खडे होने की जरूरत नही है," इस बार मैंने दीदी को डपट दिया और फिर भाभी से मुखातिब हुई, "हाँ, तो किस दान की बात कर रही थीं आप ? दीदी कोई आलू-बैगन है कि उन्होंने माँगा और आपने उठाकर दे दिया। वैसे भी आपको कन्यादान का हक कहाँ पहुँचता है। यह अधिकार तो उसका होता है, जो कन्या का पालन-पोषण करता है। कम से कम आप लोग तो इसका दावा नहीं कर सकते।"

"सुना आपने, इतने दिनों तक जो किया है, उसका यह फल मिल रहा है।"

"इतने दिनो तक आपने क्या किया है, इसका लेखा-जोखा अकेले मे अपने आप से माँगिएगा। कम से कम अपने आप से तो आप झूठ नहीं बोल पाएँगी।"

"इनफ ऑफ इट।" भाभी एकदम उठकर खडी हो गईं। उनके साथ-साथ दादा भी उठ गए। इतनी देर बाद अहसास हुआ कि दादा कब से चुप बैठे हुए हैं। इस गरमागरम बहस में उन्होंने जरा भी हिस्सा नहीं लिया है। समझ गई कि दादा आज अपनी मर्जी से नहीं आए है। अपनी भड़ास निकालने के लिए भाभी उन्हें यहाँ खींचकर ले आई है।

भाभी तो दनदनाती हुई बाहर निकलकर गाड़ी के पास खड़ी हो गई थीं। दादा जूतों के तसमे बाँधने के बहाने थोडी देर रुके रहे। जाते हुए अस्फुट स्वर में जैसे अपने आप से बोले, "शिवानी बहुत नर्वस हो गई है। शो हैज टेकन इट वेरी बैडली। हम सभी इस रिश्ते से बहुत आस लगाए थे।"

उन लोगों के जाते ही मुझ पर जैसे हँसी का दौरा पड़ गया। दीदी ने कोई चार-पाँच बार डाँट लगाई होगी, तब जाकर मेरा दिमाग दुरस्त हुआ।

"दीदी, अब आया ऊँट पहाड़ तले। भगवान् ने इन्हे इसीलिए बेटी दी है कि ये माँ-बाप का दर्द समझ सके। अब इन्हें समझ में आएगा कि माँ कितना तडपी होंगी। कितना तरस-तरस कर मरी हैं माँ। उनकी आत्मा का श्राप इन्हे जरूर लगेगा, देखना।"

"चुप कर, अब एक भी शब्द बोली, तो ठीक नहीं होगा। बत्तीसी है कि आफत। जो कहती है, वही सच हो जाता है।"

"वो इसलिए दीदी कि मै जो कहती हूँ, सच्चे मन से कहती हूँ। मेरी अतरात्मा से वह आवाज निकलती है। अब उस दिन तुम्हें तैयार करते हुए मैंने सोचा था'''।"

"बस कर, अब उसकी याद भी मत दिला। सोचकर भी शर्म आ रही है। आज तक किसी से इतनी कड़वी बातें नहीं सुनी थीं। तुम्हारी कृपा से आज वह भी सुन लीं।"

"उन बातो पर मत जाओ दीदी, वे तो अपनी भड़ास निकाल रही थीं । किसी का गुस्सा किसी पर उतार रही थीं । तुम्हीं तो बता रही थीं कि स्वीटी के लिए तीन साल से दूल्हा ढूँढा जा रहा है, फिर इतने दिन बात क्यों नही बनी ? तब तो तुम बीच में नहीं थीं न ?"

"पर अब यह बेकार का बवाल हो गया । हमेशा के लिए सबंध खराब हो गए ।"

"पहले कौन से अच्छे थे ?"

"फिर भी भारती, उस दिन थोड़ी अति ही हो गई । मुझे ही थोडा अकल से काम लेना था । बेकार तुम्हारी बातो मे आ गई ।"

"नहीं दीदी, जो कुछ हुआ है, बिलकुल ठीक हुआ है । ये लोग जो तुम्हे खारिज किए बैठे है, तो मै भ्राताश्री को दिखा देना चाहती थी कि तुम्हारी शादी की उम्र अभी बीती नहीं है । यू कैन स्टिल गेट प्रपोजल्स ।"

"वाट ए प्रपोजल्स ?" दीदी ने कहा और चाय के बर्तन समेटकर भीतर चली गईं ।

'वाट ए प्रपोजल्स ?' दीदी का यह रिमार्क उनकी नाराजगी व्यक्त कर रहा था । यूँ तो पहली बार दादा के मुँह से 'तलाकशुदा' शब्द सुनकर मुझे भी ताव आ गया था, पर अब बैठकर ठडे दिमाग से सोचती हूँ, तो लगता है कि इसमे गलत क्या है ? इस उम्र में दीदी को कुँआरा पति तो मिलने से रहा, फिर परिस्थितियों से समझौता करने मे क्या हर्ज है । इतनी समझदार है दीदी, फिर इतनी सीधी-सी बात क्यो नहीं समझतीं ।

ऐसा नहीं है कि दीदी के लिए अच्छे प्रस्ताव आए ही नहीं । बहुत आए थे । दादा की उदासीनता के बावजूद आए थे । कई लोगों ने तो व्यक्तिगत रूप से पेशकश की थी, पर दीदी ने किसी को लिफ्ट नहीं दी । उनके सामने एक ही समस्या थी, 'मै', जो अब भी बरकरार है ।

मेरा प्रण है कि मै दीदी से पहले शादी नहीं करूँगी और दीदी यह ठानकर बैठी है कि पहले मुझे बिदा करेगी । लगता है, इस पहले आप वाले चक्कर में हम दोनो का बुढापा आ जाएगा ।

उसकी कल्पना से ही मेरी रूह कॉप उठती है । खाना खाते समय मै बहुत अनमनी-सी हो रही थी । दीदी की पैनी नजरों से यह बात भला कैसे छिपती । बोलीं, "बेबी, क्या बात है ?"

"कुछ भी तो नहीं ।"

"फिर खाना क्यों नहीं खा रही हो ?"

"खा तो रही हूँ ।"

"क्या खाक खा रही हो ? बस, घंटे-भर से दाल में चम्मच घुमाए जा रही हो। तुम तो यह भी बता नहीं पाओगी कि आज सब्जी क्या बनी है, क्योंकि अभी तुमने थाली की ओर झाँका भी नहीं है।"

"सॉरी दीदी," मैंने हार मान ली। "दरअसल आज मेरा मूड बहुत ऑफ हो रहा है।"

"क्यों ?"

"मुझे उन लोगों पर रश्क आ रहा है, जो दूसरी शादी के लिए तैयार खड़े हैं, और घरवाले उनके लिए भी रिश्ते ढूँढ रहे हैं। काश ! हमारे भी सिर पर कोई होता।"

"यह तुमसे किसने कह दिया कि तुम्हारा कोई सरपरस्त नहीं है। अभी तो मैं बैठी हूँ। तुम हाँ तो करो, रिश्तों की लाइन लगा दूँगी। ऐसी शादी करूँगी कि लोग बरसों तक याद रखेंगे, पर तुम तो हाथ ही नहीं धरने देती।"

"नहीं मैडम, आपको अकेले छोड़कर जाने का तो सवाल ही नहीं उठता। इसीलिए सोचती हूँ, पहले आपका कोई ठिकाना हो जाए। वैसे आज का प्रपोजल भी कोई बुरा नहीं है।"

"इस प्रपोजल के बारे में तुम क्या जानती हो ?"

"यही कि डायवोर्सी है, पर इससे क्या फर्क पडता है ?"

"जानती हो, उसके दो बेटियाँ हैं, जिन्हें वह हमेशा के लिए बीबी के पास छोड आया है।"

"यह तो और भी अच्छा है। बच्चों का कोई झंझट नहीं है।"

"वह अपनी अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर आ गया है और अब यहाँ हाथ-पाँव मार रहा है।"

"तो क्या हुआ। उसकी नौकरी के बिना तुम कौन-सी दाल-रोटी के लिए मोहताज हो जाओगी। तुम खुद उसे जिंदगी-भर बैठकर खिला सकती हो।"

"भारती," दीदी ने बेहद गंभीर स्वर में कहा, "मैं इतने दिनों तक क्या इसलिए अनब्याही बैठी रही कि कोई हारा हुआ, टूटा हुआ आदमी मेरी चौखट पर आए और मैं उसे बाँहों में भर लूँ, फिर जिंदगी-भर उसके जख्म सहलाती रहूँ ?"

दीदी का यह भारी-भरकम वक्तव्य सुनकर थोड़ी देर को तो मैं सकते में आ गई, फिर धीरे से पूछा, "अब तुम्हीं बता दो कि तुमने क्यों इस तरह से सन्यास धारण कर लिया है ?"

"वो इसलिए कि मैंने माँ को वचन दिया था कि सदा तुम्हारे साथ रहूँगी। तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ूँगी।"

"माइ गॉड ! इसका मतलब तो यह हुआ कि कल को अगर गलती से मेरी शादी हो गई तो तुम ससुराल तक मेरे साथ जाओगी । ना बाबा, यह नहीं चलेगा । इससे तो अच्छा है, तुम स्वीटी की चचिया सास बन जाओ । वहाँ जाकर लड़की की सिफारिश कर देना । दादा-भाभी जिंदगी-भर के लिए तुम्हारे गुलाम बन जाएँगे ।"

मैंने तो यह बात मजाक में कही थी, पर दीदी एकाएक गंभीर हो गई । बोली, "दादा आज शायद ऐसे ही किसी इरादे से यहाँ आए थे, पर भाभी की बदजबानी ने सारी बात बिगाड़ दी । देखा नहीं, जाते समय कैसे भावुक हो गए थे ।"

उस प्रसंग की याद में दीदी भी भावुक हो उठीं । अब वह दाल के चम्मच घुमा रही थीं और मैं उन्हें अपलक देखे जा रही थी । मुझे लगा कि हम दोनों सदियों से इसी तरह मेज पर बैठकर खाना खा रही हैं । हमारे बाल सन की तरह सफेद हो गए हैं । मुँह में दाँतों का नया सेट लगा हुआ है । हड्डियों का हर जोड़ चरमरा उठा है । किचन में जो खटर-पटर कर रही है, वह सावित्री नहीं, सावित्री की बहू है । सावित्री तो कब से इस दुनिया से कूच कर चुकी है ।

सोचते-सोचते मन इतना खराब हो गया कि मैं थाली छोड़कर उठ गई । दीदी मुझे देखती ही रह गई ।

उस रात मुझे ठीक से नींद नहीं आई । हाथों से फिसलती उम्र का खौफ मुझे सोने नहीं दे रहा था । मेरा खिलदड़ापन, मेरी शरारतें, मेरी मसखरी सब एक ऊपरी आवरण था । भीतर से मैं बेहद डरी हुई थी । बढ़ती उम्र का अहसास इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं हुआ था । दीदी मुझे अकसर प्यार से बेबी कहती थीं और बैंक की नौकरी के बावजूद मैं अंतर्मन से बेबी ही बनी हुई थी, पर स्वीटी की शादी की चर्चा ने मुझे बौखला दिया था । लग रहा था कि मैं एकदम सीनियर बैच में आ गई हूँ और यह खयाल बड़ा डरावना था ।

विवाह मेरे लिए सिर्फ शारीरिक आवश्यकता नहीं थी । वह एक मानसिक भूख भी थी । एक स्थिर और सुरक्षित जीवन की चाह मेरे भीतर करवट ले रही थी । माँ ने मुझे एक घर दिया था, पर वह अपना कभी नहीं लगा । अपने घर की लालसा मन में बराबर बनी रही । मैंने अभी सपने देखना बंद नहीं किया था । मैं दीदी की तरह नितांत बिरागी बनकर जी नहीं सकती थी ।

मुझे लगा कि दीदी बहुत ज्यादती कर रही है, अपने साथ भी और मेरे साथ भी । आज इस किस्म के ही सही, प्रस्ताव आ तो रहे हैं । कल को वे भी नहीं आएँगे, तब ? क्या उन्हें इस बात का डर नहीं लगता ?

उन जैसी संवेदनशील नारी तो किसी के भी जख्मों पर मरहम लगा सकती है फिर

पति के दु ख बाँटने मे क्या हर्ज है ?

आज मेरे लिए भी सभावनाओ के द्वार खुले हुए हैं । बहुत देर हो गई, तो वे भी बद हो जाएँगे । तब मुझे भी गलत समझौते करने के लिए मजबूर होना पडेगा ।

दीदी तो वीतराग हो गई है । उन्हे कुछ नही व्यापता, पर मै तो कभी-कभी भविष्य की चिता से कॉप-कॉप उठती हूँ ।

पता नहीं यह मेरा पागलपन था या उत्सुकता, दूसरे दिन दोपहर बारह बजे मे कुजलता प्रसाद के घर की घटी बजा रही थी । नौकर ने दरवाजा खोला और बड़े अदब के साथ बताया कि साहब टूर पर गए है, मैडम जी कॉलेज गई है । घर में मम्मी-पापा जी है, उनसे मिलना चाहेंगी ?

मैने स्वीकृति मे सिर हिला दिया । मैडम जी कॉलेज गई होगी, यह तो मालूम ही था । इसीलिए तो यह बेतुका समय चुना था । इस समय हमारी दीदी रानी भी कॉलेज मे होगी । उन्हे तो इस बात का इल्म भी नहीं है कि मैने आज छुट्टी ले ली है । घर पर होती, तो सौ-सौ प्रश्न पूछकर बेजार कर देतीं । यहाँ आने के बारे में तो बताना ही बेकार था । वह कभी इजाजत नहीं देतीं ।

मुझे बाइज्जत ड्राइगरूम मे बिठाया गया । थोड़ी देर बाद पति-पत्नी कमरे मे प्रविष्ट हुए । जज साहब का व्यक्तित्व बड़ा भव्य और प्रभावशाली था । उनकी पत्नी घरेलू किस्म की महिला लगीं । सीधे पल्ले की साड़ी, सिर ढका हुआ, खिचड़ी बाल करीने से बाँधे हुए, ममता छलकाती ऑखें, मुझे एकदम मॉ की याद आ गई । उस पीढ़ी की सभी महिलाएँ शायद ऐसी ही ममतामयी होती थीं ।

मैने उठकर नमस्ते की । अपना असमजस छिपाने के लिए यूँ ही पूछ लिया, “आप मिसेज प्रसाद के मम्मी-पापा है ?”

“जी हॉ, पर आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ ।”

“पहचानेंगे कैसे ? आज पहली बार ही तो देख रहे है । मैं समीर कुमार टडन की बहन हूँ, भारती टडन । पिछले दिनो आप उनकी बिटिया को देखने गए थे ।”

“ओह, तो आप आरती की छोटी बहन है, तभी चेहरा पहचाना-सा लग रहा था ।”

“जी चेहरे पर मत जाइए । मै दीदी की तरह शांत और सुशील नहीं हूँ ! थोड़ी मुँहफट हूँ ।”

“बोलिए ।”

“दरअसल मै आपसे लड़ने आई हूँ ।”

“लड़िए ।”

मैने देखा, उनकी ऑखें शरारतन हँस रही थीं । मतलब वह मुझे बिलकुल भी

सीरियसली नहीं ले रहे थे । उनके इस रवैऐ से मेरा सारा आवेश ठंडा हुआ जा रहा था । कितना कुछ सोचकर आई थी, पर अब कुछ भी याद नहीं आ रहा था ।

"आप कुछ कहना चाहती थी न ?"

"जज साहब," मैंने हिम्मत बटोरकर कहा, "आप तो इतने विद्वान् व्यक्ति है । आपसे तो ऐसी उम्मीद न थी ।"

"कैसी ?"

"मतलब आपने तो लडकियो को बिलकुल सब्जी मार्केट मे ही तबदील कर दिया कि गोभी नहीं चाहिए, आलू दे दो । कद्दू नही चाहिए, लौकी पकडा दो । यह तो कोई बात नही हुई । आपको जो लड़की दिखाई गई है, उसे देखिए । पसद आ गई तो ठीक है, वरना छुट्टी कीजिए । यह क्या बात हुई कि हमे बेटी नहीं चाहिए, बहन दे दीजिए !"

"तो इसलिए आप नाराज है, तो आप यह बताइए कि इस समय आप किसकी पैरवी कर रही है ? बहन की या बेटी की ?"

"यह मजाक की बात नहीं है सर, पता है, आपकी इस पेशकश ने भाई-बहन के बीच कितनी बड़ी दरार पैदा कर दी है ?"

"मै उसके लिए माफी चाहता हूँ । देखिए, लड़के की पसद-नापसद पर तो हमारा वश नहीं था । आपकी बहन हम लोगो को बहुत अच्छी लगी, इसलिए माँग ली ।"

"यही ना, अरे, आपके माँगने से ही हो जाएगा क्या ? हमारी भी तो कोई पसद-नापसंद हो सकती है ?"

"बिलकुल हो सकती है, होनी ही चाहिए । इसीलिए तो हमने फोन करके अपने भाई को बुलवा लिया है । अपनी दीदी की ओर से आप मुआयना कर लीजिए ।"

और उन्होंने भीतर की ओर मुँह करके भारी-भरकम स्वर मे आवाज दी, "सनातन !"

"आया भाई साहब ।" दूर किसी कमरे से उत्तर आया । मै एकदम सकपका गई । इस प्रसग के लिए मै बिलकुल तैयार नहीं थी । मै तो सिर्फ यह देखने आई थी कि इस प्रस्ताव मे कितना दम है । क्या सचमुच ये लोग इतने सीरियस है ?

कमरे मे जो व्यक्ति प्रविष्ट हुआ, उसका व्यक्तित्व जज साहब की तरह भारी-भरकम नहीं था । वह लंबा, गोरा और छरहरा था । बाल घुँघराले थे और सुनहरे फ्रेम के भीतर से झाँकती आँखें सम्मोहक थीं । कुल मिलाकर वह व्यक्ति अपनी उम्र को मुगालता-सा देता लगा ।

"अरे भई, बिटिया के लिए कुछ चाय-वाय तो मँगवाओ," जज साहब ने पत्नी को आदेश दिया और फिर मुझसे मुखातिब होते हुए बोले "माई यगर ब्रदर सनातन यू०के०

मे था । अब रिटायरमेंट लेकर स्वदेश लौट आया है ।"

"वहाँ तो सुना है कि रिटायरमेंट एज सिक्सटी फाइव है, फिर आप·· ?"

"आई एम फोर्टी एट," उन्होने तपाक से उत्तर दिया, "मैने वॉलेंटियरी रिटायरमेंट ले लिया है ।"

"स्वदेश की याद खींच लाई या वहाँ से जी ऊब गया ?"

"ये दोनो बातें एक साथ भी तो हो सकती हैं ?"

"आपने वहाँ की नागरिकता ले ली थी ?"

"जी नहीं, मैं अब भी भारतीय नागरिक हूँ, एंड आई एम प्राउड ऑफ इट ।"

"आपके बच्चे ?"

"वे ब्रिटिश नागरिक है और रहेंगे, और भी कुछ पूछना है ?" मैने देखा, चश्मे के भीतर से उनकी आँखें शरारतन हँस रही थीं । इस पूछताछ के दौरान वे आँखें बराबर मुझ पर टिकी हुई थीं और मुझे असहज बना रही थीं ।

"इजाजत हो तो मै भी कुछ पूछ लूँ । मसलन आपका नाम ?"

"ओह सॉरी," जज साहब एकदम बोल पडे, "मै इनका परिचय देना तो भूल ही गया । यह मिस टंडन है । क्या करती है, यह तो मुझे नहीं मालूम । हम लोग सुबोध के लिए इनके भाई की बेटी को देखने गए थे ।"

"सुबोध को तो बिटिया पसद नहीं आई," जज साहब की पत्नी चाय लगवाकर ले आई थीं, "पर हमे उसकी बुआ बहुत भा गई ।"

"बुआ से मतलब मेरी दीदी से है । कृपया किसी गलतफहमी मे न रहे ।" मैने सनातन को सचेत किया ।

"भारती जी, हमें तो आप भी बहुत भा गई है," जज साहब बोले, "काश ! मेरा एक और भाई होता ।"

"तलाकशुदा ?"

"तलाकशुदा क्या ? तुम्हारे लिए तो··।"

"तलाकशुदा पसद हो, तो मै भी प्रस्तुत हूँ ।" सनातन ने कहा ।

"नो यंग मैन, हम तुम्हें इसकी इजाजत नही दे सकते । बिजलियो से बहुत खेल चुके हो तुम । अब तुम्हें एक शात, सौम्य, सुशील पत्नी की जरूरत है और हमने वैसी ही लड़की ढूँढ़ ली है । सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह खुद भी मोहभंग का दु ख झेल चुकी है, तो तुम्हारी पीडा को अच्छी तरह समझ सकेगी ?"

"यह आप किस मोहभग की बात कर रहे है ?" मैने हैरत से पूछा ।

"आपके भाई साहब से ही मालूम हुआ था ·"

"क्या ?"

"यही कि कोई एक अफेयर था, जो परवान नहीं चढ सका । तब से वे जोगन बन गई है । शादी का नाम तक लेने से उन्हें चिढ होती है ।"

दु ख और आवेश से मेरा चेहरा एकदम लाल हो गया । होठ थरथरा उठे । जज साहब ने जरूर इसे लक्ष्य किया होगा । बोले, "क्या मै कुछ गलत कह गया हूँ ? आई एम रियली सॉरी । बट···।"

"नहीं, आप गलत क्यों कहेंगे ? गलत तो उन्होंने कहा है, जो दीदी के अविवाहित रहने के लिए जिम्मेदार है । अपनी गलती छिपाने के लिए उन्होने यह कहानी गढ ली है । यह घर की बात थी, घर में ही रह जाती, तो अच्छा था, पर दीदी के बारे मे ऐसा कुप्रचार हो और मै चुप रह जाऊँ, यह तो नहीं हो सकता, तो सुन लीजिए, दीदी शादी नहीं कर सकीं, क्योंकि छोटे भैया की पढ़ाई बाकी थी और बडे भाई ने साफ इंकार कर दिया था । वह अनब्याही रह गईं, क्योकि घर मे बूढ़ी-बीमार माँ थी और उन्हे देखने वाला कोई नहीं था । वह अविवाहित रह गईं, क्योंकि मेरी परवरिश करनी थी और सबसे बडी बात यह है कि उनकी शादी के लिए आज तक किसी ने पहल नहीं की और खुद अपना दूल्हा ढूँढने के सस्कार हमारे परिवार में नहीं थे । इसीलिए उनकी शादी नहीं हो सकी," बात करते-करते मेरा गला भर आया था । मै एकदम उठ खडी हुई, "अच्छा, अब मुझे इजाजत देंगे । थैक्स फॉर द टाइम यू गेव मी ।"

"अरे बिटिया, चाय तो पीती जाओ ।" जज साहब की पत्नी बोलीं । गृहिणियो को हमेशा मेहमानों को खिलाने-पिलाने की ही पडी रहती है, और बातो से उन्हें कोई सरोकार नहीं होता, पर जज साहब मेरी बात समझ रहे थे । दोनों भाई मेरे साथ ही उठ खड़े हुए और मुझे छोड़ने बाहर तक आए ।

पोर्च मे एक नीली मारुति खड़ी हुई थी । डॉ० सनातन ने उसका दरवाजा खोलते हुए कहा, "लेट मी हैव द प्लेजर ।"

"नो थैक्स, मै ऑटो कर लूँगी ।"

"चली जाओ बेटी, इसी बहाने यह भी तुम्हारा घर, तुम्हारी दीदी को देख लेगे ।" जज साहब बोले । अब कोई चारा ही न था । चुपचाप जाकर गाडी मे बैठ गई । अपनी सनी न लाने का बेहद पछतावा हो रहा था । दरअसल सनी पर बैठकर घर ढूँढना मुझे बेहद उबाऊ लग रहा था । ऑटो रिक्शा मे यह सुविधा रहती है कि पूछताछ का काम ड्राइवर कर लेते है । काफी देर तक मै गुमसुम बैठी रही । जब मुझे होश आया, तो देखा, गाडी शहर के पश्चिमी छोर पर चली जा रही है ।

"हम लोग कहाँ जा रहे है ?" मैने घबराकर पूछा ।

"मुझे क्या मालूम, कहाँ जा रहे है। जब तक आप अपने घर का अता-पता नहीं बताएँगी, मैं इसी तरह निरुद्देश्य घूमता रहूँगा।"

मै झेप गई। मैंने उन्हे जरूरी दिशा-निर्देश दिए और कहा, "आप घर चल तो रहे है, पर एक बात मन से बिलकुल निकाल दीजिए कि वहाँ भी दादा के घर की तरह शाही सरजाम होगा। एक तो हम उतने बड़े लोग नहीं है। दूसरे पहले से कोई सूचना भी नहीं थी।"

"पहली बात तो यह कि मै आपके दादा के यहाँ की दावत मे शरीक नहीं था। इसलिए उस शाही सरजाम के बारे मे कुछ नहीं जानता। दूसरी बात यह है कि आप भी अपने मन से यह खयाल निकाल दे कि मै वहाँ आपकी दीदी को देखने जा रहा हूँ।"

"तो फिर आप ?"

"मैंने तो यह पेशकश इसलिए की है कि इसी बहाने आपका साथ थोडी देर और मिल जाएगा।"

"मतलब ?"

"अब आप इतनी भी बच्ची नहीं है कि मतलब न समझ सके।"

मै कानो तक लाल हो आई। वह स्वर, वे शब्द, वह दृष्टि तन-मन को पुलक से भर दे रहे थे। मै जानती थी कि पश्चिम में पुरुषो के लिए यह भाषा आम हैं। डॉ० सनातन भी स्त्री दाक्षिण्य का प्रदर्शन कर रहे है, पर मेरे लिए तो यह अनुभव नया था। अपनी बौखलाहट छिपाते हुए मैंने कॉपते स्वर मे कहा, "जनाब, शायद आप यह भूल रहे है कि आपके लिए मेरी दीदी का इतखाब हुआ है।"

"पर आप मुझे अपनी दीदी से ज्यादा अच्छी लगी है, इसका क्या करूँ ?"

"यह आप कैसे कह सकते है ? मेरी दीदी को देखे बिना आप यह कम्पेरेटिव स्टेटमेट कैसे दे सकते है ?"

"भारती जी, जब से स्वदेश आया हूँ, रिश्तों की जैसे बाढ़-सी आ गई है। अब तक दर्जनों लडकियाँ देख चुका हूँ, पर आपको देखकर लगा कि मेरी तलाश पूर्ण हो गई है।"

मेरा दिल इतनी जोर से धडका कि लगा उछलकर बाहर आ जाएगा। यह व्यक्ति तो किसी भी युवती का स्वप्न पुरुष हो सकता है और यह कह रहा है कि मै उसकी तलाश का अंतिम बिंदु हूँ। आनद-गंगा में मैं जैसे नहा उठी।

पर भीतर ही भीतर मन कचोटने लगा। यह तो दीदी के साथ सरासर बेइमानी होगी। क्या मैं इसीलिए इतनी ललक के साथ वहाँ गई थी ? क्या मेरे अतर्मन मे यह इच्छा पहले से छिपी बैठी थी ? फिर मै इतनी हर्षविभोर क्यों हो रही हूँ ?

"दीदी को देखे बिना ही खारिज कर देना तो एक तरह से अन्याय होगा न ?"

"उन्हें देखने का तो सवाल ही नहीं उठता ।"

उन्होने ट्रैफिक पर नजरे गड़ाए हुए कहा, "आई वाट ए वूमन विथ क्लीन स्लेट ।"

मेरे कान एकदम झनझना उठे ।

"प्लीज, एक मिनट गाडी रोकिए ।" मैने कहा ।

उन्होने आश्चर्य से भरकर मुझे देखा और फिर सड़क के एक किनारे लेकर गाडी रोक दी, "एनी प्रॉब्लम ?"

"कुछ नहीं, अभी आपने जो कहा था, उसे ठीक से सुन नहीं सकी थी । विल यू प्लीज रिपीट इट ।"

"मैने कहा कि आई वाट ए वूमन विथ क्लीन स्लेट । हिंदी में अनुवाद कर दूं । मै ऐसी पत्नी चाहता हूँ, जिसका कोई इतिहास न हो । मेरी पहली पत्नी रोज नया इतिहास रचती थी । इसीलिए मै उसे छोड़ आया हूँ ।

क्रोध से मेरा पूरा शरीर जैसे जल उठा । मुझे लगा कि अभी इसी वक्त इस आदमी का गला दबा दूँ, ताकि वह ऐसी गंदी बात दुबारा न कह सके । आवेश के कारण बडी देर तक मेरे मुँह से कोई बात ही नहीं निकली । बडी मुश्किल से अपने ऊपर काबू पाने के बाद मैंने कहा, "डॉ० सनातन, मेरे बड़े भाई ने मेरी दीदी के कुँआरेपन को इतनी बड़ी गाली दी कि उसे सुनकर मेरा पूरा वजूद ही हिल गया था, पर आपकी बात सुनकर तो मै एकदम राख हो गई हूँ । आप खुद तलाकशुदा है, दो बच्चों के बाप है, पर अपनी भावी पत्नी का तथाकथित अफेयर भी आपसे हजम नहीं हो रहा है । आश्चर्य है !"

"इसमें आश्चर्य की तो कोई बात नहीं है भारती जी, मै विशुद्ध भारतीय सस्कारो मे पला हुआ व्यक्ति हूँ । विदेश में पद्रह वर्ष रहने के बाद भी मै गर्व से कह सकता हूँ कि मुझमें वे संस्कार अब भी मौजूद है ।"

"इसमें तो कोई शक ही नहीं है । आप में भारतीय पुरुष के सस्कार कूट-कूटकर भरे हुए है । भारतीय पुरुष, जो खुद तो एक के बाद एक शादी रचाता जाता है, पर पत्नी ऐसी चाहता है, जो दूध की धुली और गगाजल-सी पवित्र हो । थैंक यू डॉक्टर, आपने मुझे अपना असली चेहरा दिखा दिया । थैंक्स एड गुडबाय ।"

मैने उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा नहीं की और गाड़ी से उतर पड़ी । एक ऑटो को हाथ देकर रोका और उसमें चढ़ गई । उसे पता-ठिकाना बताया और ऑख बद करके सीट पर टिक गई । मेरा दिमाग बुरी तरह भन्ना रहा था । एक घटे के भीतर मैने पुरुष के दो घिनौने और कुत्सित रूप देख लिए थे और मुझे सारी पुरुष जाति से घृणा हो गई थी ।

इन दो मे से एक तो मेरे पितृतुल्य बडे भाई थे। दूसरा पुरुष मेरा बहुत कुछ हो सकता था। यह झटका न लगता, तो मै मोहाविष्ट-सी उसकी ओर खिंची चली जा रही थी। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि मै बाल-बाल बच गई।

घर पहुँचकर देखा, दीदी कॉलेज से अभी-अभी लौटी थीं। अभी उन्होंने कपड़े भी नहीं बदले थे। मुझे टैक्सी से उतरते देखा, तो एकदम बाहर आ गई।

"आज इतनी जल्दी कैसे आ गई ? तबीयत तो ठीक है न ? मै यही सोच रही थी कि आज गाड़ी क्यो नहीं ले गई, लेकिन अगर जी ठीक नहीं था, तो जाने की क्या जरूरत थी ? किसी को दिखाया भी या ?"

"ओफ्फो दीदी," मै एकदम फट पड़ी, "मुझे घर में भी आने दोगी या थानेदार की तरह सवाल ही किए जाओगी ?"

दीदी बेचारी सहमकर एक किनारे हो गईं। मै तीर की तरह भीतर घुसी और सोफे में धँस गई। मेरा दिमाग घूम रहा था। सिर दर्द से फटा जा रहा था। कमरे में बेहद घुटन हो रही थी। लगता था, जैसे हवा का एक कण भी कहीं शेष नहीं है।

तभी ठडी हवा का एक झोका तन-मन को सहला गया। ऑख खोलकर देखा, किसी ने पंखा फुल स्पीड पर चला दिया था। इतनी सोच और समझ दीदी के सिवा और किसके पास हो सकती थी ?

दस मिनट बाद सेंटर टेबल पर एक गिलास आ गया था। उसमे तैरते बर्फ के टुकड़े देखकर ही मन में ठंडक पड़ गई। गिलास उठाकर मै एक सॉस में ही पूरा गटक गई। मेरी खास पसद का पेय था, नीबू का ताजा शरबत। उसे पीते ही मै तरोताजा हो आई। मन अब जरा सम पर आने लगा था। आते ही सोफे पर निढाल होकर पड़ गई थी, अब उठकर बैठ गई।

किसी ने मेरे हाथ से गिलास लेकर मेज पर रख दिया था। और कौन होता, दीदी ही थीं। मेरा मूड ठिकाने पर आया देखकर वह मेरे पास आकर बैठ गई थीं और मेरे बालो मे उँगलियाँ पिरोते हुए बोलीं, "अब बता, किससे लड़कर आई है ?"

दीदी तो पूरी जासूस है। उनसे कुछ भी छिपाना असंभव है, फिर भी मैने मुँह बनाकर कहा, "क्या मतलब ? मै क्या जिस-तिस से लड़ती ही रहती हूँ ?"

"तो बताओ कहाँ गई थी ? क्या करने गई थी ?"

"तुम्हारा रिश्ता तय करने गई थी।"

"आई सी, तो फिर ? बात जमी नहीं, यही न, इसीलिए लड़कर आई हो ?"

"न, उनसे भला क्यो लड़ूँगी ? लडाई तो मुझे भगवान् से करनी है।"

"हाय राम ! उस बेचारे ने क्या बिगाडा है ?"

"अरे, इतनी बड़ी दुनिया मे एक भी पुरुष ऐसा नहीं बनाया, जो तुम्हारी ऊँचाई को छू सके । सबके सब बौने है । यह भी कोई बात हुई ?"

"सो सैड," दीदी ने मेरी नकल उतारते हुए कहा, "देख लिया न बेबी, बेटी ब्याहना कितनी टेढ़ी खीर है । बरसो जूते चटखाने पड़ते है और तुम हो कि एक ही दिन में पस्त हो गई ।"

और मेरे गाल मे चुटकी भरकर वह हँस दी । वही दूधिया चाँदनी-सी स्वच्छ, उज्ज्वल हँसी, जो देखने वाले को बरबस बाँध लेती है ।

इस भुवन मोहिनी हँसी पर तो मैं सैकड़ों सनातन वार सकती हूँ ।

स्मृति कल्प

पूरी दोपहर बिस्तर मे गुजार दी थी, पर थकान से शरीर अब भी निढाल हो रहा था। और यह थकान सिर्फ सफर की थकान नहीं थी। स्वदेश लौटे दो हफ्ते हो गए थे, पर मिलने वालो का ताँता लगा हुआ था और हर रात हम लोग बाहर खाने जा रहे थे। छुट्टी की प्लानिंग करते समय हम लोगों ने सर्दी, गर्मी और बरसात का ही विचार किया था। यह भूल ही गए थे कि इस देश मे एक और मौसम होता है, शादी का मौसम। और अपनी इस भूल को अब हम भुगत रहे थे।

इसीलिए मै भागकर भैया-भाभी के पास चली आई थी। सोचा था, तीन-चार दिन खूब आराम कर लूँगी। अतुल के आने के बाद तो फिर निमंत्रणो का दौर शुरू हो जाएगा, या तो भैया किसी को डिनर पर बुलाएँगे, या फिर हमे कहीं जाना पडेगा। साढे पाँच बजे भैया की गाड़ी को गेट के अदर दाखिल होते हुए मैने खिडकी से देख लिया था, फिर भी बिस्तर में दुबकी रही।

“रेणुजी,” भाभी ने दरवाजे मे खड़े होकर आवाज दी, “आज रात भी होने वाली है। बाकी की नीद तब पूरी कर लेना। अब उठकर चाय पी लो। तुम्हारे भैया इतजार कर रहे है।”

मुँह पर पानी के छींटे देकर आँचल से पोछते हुए मै बाहर आई, तब तक सचमुच भैया इतजार मे बैठे हुए थे। मेज पर लगा नाश्ता अनछुआ था और वह नाश्ता था कि गजब। ब्रेड के पकौड़े, गाजर का हलुवा, सेव, मठरी और मेरे साथ आई हुई मिठाइयाँ।

“बाप रे। आप लोग रोज इतना हैवी नाश्ता करते है ?”

“अरे, हमे तो तुम्हारी भाभी बिस्कुट पर टरका देती है। यह सब तो तुम्हारे सम्मान मे हो रहा है।”

“मै कोई मेहमान हूँ ?” मैने मुँह फुलाकर कहा।

“बहन-बेटी तो हमेशा ही मेहमान होती है। वैसे आज नाश्ता इसलिए हैवी बनाया है कि रात खाने मे देर हो सकती है।” भाभी ने सूचना दी।

“क्यो, कोई खाने पर आ रहा है ?” मैने धडकते दिल से पूछा।

“नहीं हम लोग जाएँगे चलोगी न ?”

"ओह नो," फिर मैंने मरी-सी आवाज में पूछ लिया, "किसके यहाँ जाना है ?"

"अरे, अपने रजनीश भाई के यहाँ । उनके बेटे का रिसेप्शन है !"

"बेटे का मतलब अपूर्व का ? वह इतना बड़ा कब हो गया ? अभी तो उसका इजीनियरिंग मे एडमिशन हुआ था ।"

"उसे इजीनियर बने भी दो साल हो गए है । तुम क्या सोचती हो, जब तुम यहाँ नही थीं, तो समय थम गया होगा ?"

काश ! ऐसा हो सकता ! छह साल बाद आई हूँ, तो सब कुछ कितना बदला-बदला लग रहा है । कई चीजो ने तो अपनी पुरानी पहचान ही खो दी है । कई जाने-पहचाने चेहरे खो गए हे । कई नए उग आए है । इस बदलाव को एकदम पचा पाना मेरे लिए मुश्किल हो गया है । पहली बार इतने अतराल के बाद आई हूँ, शायद इसीलिए । बाद मे शायद आदत हो जाएगी ।

"क्या सोच रही हो ? चलोगी न ?" भाभी ने व्यग्रता से पूछा ।

"और कहीं जाना होता, तो सचमुच मना कर देती । बाहर खा-खाकर एकदम थक गई हूँ मै, पर रजनीश भाई के यहाँ, नो प्रॉब्लम ।"

मैंने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि भाभी ने राहत की साँस ली है । मै मना कर देती, तो वह सचमुच धर्मसकट में पड जातीं । उन्हे मजबूरन मेरे लिए खाना बनाना पडता और चार दिन पाहुन आई बहन-बेटी को कोई खिचड़ी तो नहीं परोसी जाती । पूरा सरजाम करना पड़ता ।

फिर रजनीश भाई के यहाँ जाने मे मुझे सचमुच कोई आपत्ति नहीं थी । उस परिवार से पुराने सबध थे । रजनीश भाई भैया के घनिष्ठ मित्रो मे से थे । उनकी छोटी बहन आभा और मैं हाईस्कूल से एम०एस-सी तक साथ पढ़े थे । बडी वाली शोभा दीदी से भी मेरी खूब पटती थी । वह आभा की तरह मुझे भी लाड़ करती थीं और मनीष भाई ! इस नाम के याद आते ही मन मे एक टीस-सी उठी, जैसे कोई पुराना जख्म छू गया हो । आभा के घर उन्हे पहली बार देखा था और तब से ही वह मन पर छा गए थे । वह उम्र ऐसी ही होती है, जब बराबर वाले लडके बचकाने लगते है । बड़ो के प्रति एक अबोध आकर्षण होता है और मनीष भाई तो पुरुष सौदर्य के प्रतीक थे ।

मनीष भाई ने उस तरह से मेरा कभी नोटिस नहीं लिया । नवीं कक्षा मे पढ़ने वाली सिलबिल-सी लड़की थी मै । वह क्यों मुझे तवज्जो देते । बस, आभा की तरह कभी मेरी चोटी खींच देते, या पीठ पर धौल जमा देते । मै उतने से स्पर्श से धन्य हो जाती थी । अब सोचती हूँ, तो अपने बचकानेपन पर हँसी आती है, पर उस समय तो मेरे लिए यही सबसे बड़ा सच था । बच्ची ही तो थी ।

जिस समय उनकी शादी हुई, मै फर्स्ट इयर में थी । खबर सुनते ही जैसे मेरे सपनो के संसार में भूचाल आ गया था । मै एकदम गुमसुम हो गई थी । घंटो खिडकी के पास बैठी सडक को निहारा करती थी । मेरा रूठना-मचलना, गाना-गुनगुनाना सब बद हो गया था । भैया तो एकदम चिंतित हो उठे थे, पर मॉ ने समझा दिया, "अरे, कुछ नही हुआ है । इस उम्र में लड़कियॉ इसी तरह बेवजह उदास हो जाया करती है । बस, समझ लो कि अपनी गुडिया अब सयानी हो रही है ।"

मनीष भाई का रिश्ता बहुत बड़े घर में तय हुआ था । आभा से उनकी अमीरी के किस्से सुन-सुनकर मेरे कान पक गए थे । उसे तो यही खुशी थी कि अब बड़ी भाभी की नाक थोडी नीची हो जाएगी । अपने आगे किसी को कुछ गिनती ही नहीं है ।

आभा तो नई भाभी के रूप-लावण्य पर भी मुग्ध थी, पर मुझे उसकी बातो पर विश्वास नहीं था । मुझे यकीन था कि पैसे की चमक से सब अंधे हो गए है । उन लोगो ने रुपयों से तौलकर अपनी काली-मोटी भैंस इनके पल्ले बॉध दी है ।

पर ईश्वर ने मेरा यह मनोरथ भी निष्फल कर दिया । दुलहन इतनी सुदर थी कि उस पर से ऑखें हटती ही न थीं । मेहमानो के होंठों पर बस एक ही बात थी, "इतना सुदर जोड़ा आज तक नहीं देखा ।" जोड़ा सचमुच बहुत सुदर था । मै बुके लेकर स्टेज पर गई, तो ठगी-सी देखती रह गई । मनीष भाई ने हमेशा की तरह मेरी चोटी खींचते हुए पूछा, "ए छटंकी, भाभी पसद आई ?"

अपमान से मेरे तो ऑसू निकल आए । आभा ने पता नहीं क्या समझकर उन्हे घुडक दिया, "कितनी जोर से चोटी खींचते है आप । बेचारी की सारी हेयर स्टाइल खराब कर दी । एकाध बार भाभी के बाल खींचिए, तब मजा आएगा ।" और मेरा हाथ पकडकर वह धीरे से मुझे नीचे उतार लाई और कान मे फुसफुसाकर पूछा, "भाभी खूब सुदर है न ?"

मैंने बेवजह मुँह बिचका दिया ।

शाम को तैयार होते हुए वे सारी बाते स्मरण हो आईं और पता नहीं क्यो मै बडे मनोयोग से सजने लगी । जयपुर में रहते हुए मैंने पंद्रह दिनों मे कोई आठ शादियॉ अटेंड की थीं । हर बार सास और जिठानी अपनी भारी साडियॉ और गहनो की पेटियॉ लेकर आ जातीं । उनका मन रखने के लिए मैं सब पहन भी लेती थी, क्योंकि वहॉ मेरा अपना वजूद तो कुछ भी नहीं था । मैं तो उन लोगो की बहू थी और परिवार की प्रतिष्ठा के अनुरूप मेरा पहनना-ओढना जरूरी था ।

पर आज तो मुझे ही ललक हो आई थी । भाभी के साथ बडे चाव से मैंने अलमारी खँगाल डाली और एक गहरे नीले रंग की पोचमपल्ली का चुनाव कर डाला । नीला रग तो केवल सतह पर था । ऑचल और किनारी पर इंद्रधनुष के सारे रगों से चित्रकारी की

गई थी । गले और कान मे भाभी का ही एक जड़ाऊ सेट और हाथो मे मेल खाते कगन । दर्पण मे देखा, तो अपनी ही छवि पर मै मुग्ध हो गई और भाभी के सामने जाकर खडी हो गई ।

"भाभी, मै ठीक लग रही हूँ ?"

भाभी ने प्यार से मेरे ललाट पर एक हलका-सा चुबन जड दिया और बोलीं, "आज माँ जी होतीं, तो कितनी खुश होतीं ।"

"क्यो ?"

"उन्हे हमेशा शिकायत रहती थी कि आजकल की लडकियो को पहनने-ओढ़ने का जरा शौक नहीं है । बस, चिंदा-सा लपेटकर चल देती है । आज तुम्हे देखतीं, तो सारे गिले-शिकवे दूर हो जाते ।"

माँ की याद से मेरा भी मन गीला हो आया । शादी के तुरंत साल-भर बाद उनकी तेरहवीं पर आना हुआ था । उसके बाद अब आई हूँ, पूरे छह साल बाद । माँ जीवित होतीं, तो शायद यह अतराल इतना लबा न होता, क्या पता ?

"माई गुडनेस," भैया की आवाज ने मुझे एकदम चौका दिया, "दुलहन तो यहाँ बैठी है, फिर वहाँ रिसेप्शन किसका हो रहा है ?"

"प्लीज भैया, आप ऐसा कहेगे, तो मै सलवार-सूट पहनकर चली चलूँगी ।"

"हमारी गुडिया रानी तो सलवार-सूट में भी उतनी ही गार्जीयस लगती है ।"

"क्या कहने हैं ।"

"सच कहता हूँ । कुछ देवियों को सूट पहने देखता हूँ न !"

"अब बस भी कीजिए । औरतो पर कमेंट्स करते हो, तो आपकी जबान पर जैसे सरस्वती विराजमान हो जाती है ।"

भाभी की घुडकी से भैया बेचारे चुप हो गए । मैंने विषय बदलने की गरज से कहा, "भाभी ने अपना पूरा वार्डरोब ही मेरे सामने खोलकर रख दिया । नेचरली, आई सिलेक्टेड द बेस्ट । बहुत भोंडा तो नहीं लग रहा न ? नहीं तो बदल लेती हूँ ।"

"लग भी रहा हो तो क्या है ? हम लोग शादी मे जा रहे है । कोई मातमपुरसी में नहीं ।"

भाभी बोलीं, "वैसे रेणु पर यह साड़ी इतनी अच्छी लग रही है कि मेरी तो दुबारा पहनने की हिम्मत ही न होगी ।"

"तो उसे ही दे डालो न ।" भैया ने कहा ।

"नई साड़ी लाने का खर्च बच जाएगा ।" भाभी ने फिर उन्हे घुडक दिया । भैया बेचारे हँसते हुए तैयार होने चले गए । मै समझ गई, दोनो बच्चे बाहर है । अब ये लोग

इसी तरह अपना मन बहलाते होंगे ।

हम लोग जब रिसेप्शन में पहुँचे, तब नौ बज चुके थे, पर कार्यक्रम अपने पूरे शबाब पर था । फर्लांग-भर दूर से ही रोशनी की जगमगाहट ऑखो को चौंधिया रही थी । डिस्को का कर्ण-कटु सगीत कानो से टकरा रहा था ।

जीवन मे इतनी शादियाँ देखी है कि जिनका कोई हिसाब नही है, पर उन पर गभीरता से कभी सोचा नहीं था, पर इस बार सब कुछ तटस्थ भाव से देख रही हूँ, तो मन आदोलित हो उठता है । लगता है, जैसे एक होड-सी लगी हुई है कि किसका रिसेप्शन ज्यादा खर्चीला, ज्यादा भड़कीला, ज्यादा शानदार होगा । सिर्फ मडप की सजावट और रोशनी मे लोग इतना रुपया फेक देते है कि उतने मे एक गरीब की कन्या का (या कन्याओ का) ब्याह हो सकता है और खाना, उसका वर्णन तो साक्षात सरस्वती भी नही कर सकती । पहले लोगो का बडप्पन इस बात से ऑका जाता था कि उनके यहाँ कितने किस्म की मिठाई परोसी गई । अब तो रोटियो की कई किस्में चल पड़ी है । एक लबा-सा काउंटर सिर्फ उसके लिए होता है, फिर पॉच तरह के अकुरित अनाज, छह तरह के अचार, दस तरह की सब्जियाँ । खाने मे पंजाबी, उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, चाइनीज, रशियन, कॉन्टिनेंटल और आइसक्रीम । हॉ आइसक्रीम इज ए मस्ट । चाहे कडकड़ाती ठड हो, आइसक्रीम जरूर होगी और लोगो की भीड़ उस स्टॉल पर जैसे टूटी पडती है ! हॉ, अब तो स्टॉल लगते है, जिसकी जो मर्जी हो खाए और चलता बने और स्टॉल भी कितने, कोई नौसिखिया हो तो गिनते-गिनते ही बौरा जाएगा ।

समझ मे नहीं आता कि क्या सब लोग इतनी हैसियत वाले हो गए है, या कि लोक-लाज के लिए करना पड़ता है ?

रजनीश भाई और भाभी स्वागत की मुद्रा मे द्वार पर ही खडे थे । मुझे देखा, तो एकदम गद्गद हो आए, "अरे वाह, गुडिया भी आई है । भई, मजा आ गया ।"

"अब यह मुँह देखी तो रहने दीजिए भाईसाहब, आपसे तो एक कार्ड तक नहीं डाला गया । डर रहे होगे, कहीं सचमुच आ गई, तो नेग देना पड़ेगा, पर आपकी चाल चली नहीं । देखिए, मै साड़ी वसूलने आ ही गई ।"

"अरे छटकी, कैसी बाते कर रही है । तेरे भतीजे की शादी है । तू एक तो क्या, चार साडी ले लेना । तेरी भाभी तो इस समय इतने टॉप मूड मे है कि पूरी दुकान ही सामने रख देगी ।"

मैने भाभी की ओर देखा । पति की बात के समर्थन मे वह पाव इच मुस्करा-भर दीं । वह हमेशा से अपने आभिजात्य के प्रति बडी सजग रही है मैने कभी उन्हें खुलकर

हँसते हुए नहीं देखा ।

भाभी से अपना ध्यान हटाकर मैंने रजनीश भाई से कहा, "भाईसाहब, ईश्वर के लिए मुझे अब छटंकी कहना छोड दीजिए । प्लीज, मेरा वेट कार्ड देखेंगे न, तो आपको पता चलेगा ।"

'और तू अपनी सहेली को देखेगी न, तो पता चलेगा कि तू छटॉक तो क्या, तोला-भर भी नहीं है । अरे, आभा को बुलाओ भई, अभी तो यहीं कहीं थी ।"

आभा शायद आसपास ही थी । खबर मिलते ही दौड़ी चली आई और मुझसे लिपट गई । बाप रे, ऐसा लगा, जैसे मक्खन का एक ढेर मेरे ऊपर गिर पड़ा हो । भैया ने सावधान किया, "ए लड़की, जरा सँभल के । मुझे रेणु को वन पीस मियॉं को सौंपना है, नहीं तो वह केस कर देगा ।"

आभा के पति उसके मुकाबले एकदम छरहरे और मासूम लग रहे थे । बोले, "अपने स्लिम और टिम होने का राज अपनी सखी को भी बतलाइए न ।"

"अरे, यह क्या बतलाएगी, मै बताती हूँ । आजाद पंछी है न, इसीलिए अपना रख-रखाव कर पाती है । जरा एक-दो पुछल्ले जुड जाने दो, फिर देखना ।"

मै मुस्करा-भर दी । शादी को आठ साल हो चले है । हर कोई उत्सुक है । सब जगह एक ही प्रश्न, एक ही फरमाइश । उत्तर में मै बस मुस्कराकर रह जाती हूँ । ढाई साल पहले एक हादसा हुआ था । आने वाला अधबीच से ही लौट गया था, पर मै यह बात किसी को बताती नहीं हूँ । लोगों की सहानुभूति मै झेल नहीं पाती ।

"सिक्स इयर इज टू मच यार, अब तो कुछ करो ।"

"करने का सोच ही रही थी, पर तेरा हाल देखकर तो हिम्मत जवाब दे रही है । अच्छा, पहले चलकर मुझे दूल्हा-दुलहन से मिलवा तो दे । देखूँ, मुझे अपूर्व पहचानता भी है या नहीं ।"

हम लोग भीतर की ओर चले । भैया-भाभी तो कब के आगे बढ़ लिए थे । शामियाने मे पॉव देते ही सामने एक सुसज्जित जूस बार नजर आया । इतनी ठंड मे भी वहॉं भीड थी । ज्यादातर भीड़ महिलाओं की ही थी । पास जाने पर उसका कारण समझ मे आया । काउंटर पर जोधपुरी सूट में खुद मनीष भाई खडे थे और मुस्कराकर अतिथियो की अभ्यर्थना कर रहे थे । उनके अगल-बगल कामदार सूट पहने दो सुदर्शनाऍं थीं, जो मेहमानो के लिए गिलास भर रही थीं । बड़ा ही खुशनुमा माहौल था ।

"मनीष भाई, देखिए तो मेरे साथ कौन है ?" आभा ने कहा ।

अपने प्रशंसको से पल-भर के लिए विरत होकर उन्होंने मुझे देखा और ठगे-से देखते ही रह गए ।

"आभा, कहीं यह तेरी सिलबिल-सी सहेली तो नहीं है ? बाई जोव्ह ! अमेरिका ने तो इसकी एकदम कायापलट कर दी है । कब आई ?"

"आज सुबह ।"

"व्हाट ए ब्यूटीफुल सरप्राइज रेणु, ये मेरी कन्याएँ है, शुभा और श्वेता । छोटी उज्ज्वल यहीं-कहीं घूम रही होगी और लड़कियो, यह है आभा बुआ की पक्की सहेली रेणु ।"

लड़कियाँ बेवजह शरमा गईं, मानो मै उन्हें अपने बेटे के लिए पसंद करने आई हूँ, लेकिन वाकई अगर मेरे पास ब्याहने लायक बेटा होता, तो एक को तो मै ले ही जाती ।

"मनीष भाई, आपकी बेटियाँ बहुत सुदर है । एकदम भाभी पर गई है ।"

"क्या मतलब ? हम क्या लगूर है ? जनाब, हमारे सफेद बालो पर मत जाइए । किसी जमाने में हमे लेडी किलर कहा जाता था । अब यह बात मुझे आपसे मालूम करनी होगी ?"

"मनीष भाई, न तो आपके बाल सफेद हुए है, न आपका लेडी किलर होना इतिहास हुआ है । यू आर स्टिल एक्स्ट्रीमली पॉपुलर ।"

"व्हाट ए कप्लीमेंट । इस मेहरबानी का आपको क्या सिला दूँ । यह मत समझो कि मै सिर्फ फलों के रस परोस रहा हूँ । मेरे पास और पेय भी है । क्या पियोगी ?"

"नो, थैंक्स ।" कहते हुए मै बाहर निकल आई । भाभियों और आटियों के हुजूम ने फिर उन्हें घेर लिया और कहकहो के दौर फिर शुरू हो गए । अगल-बगल दोनो बेटियाँ खड़ी थीं और वह बिंदास फ्लर्ट कर रहे थे । लड़कियाँ खिलखिला रही थीं ।

जमाना कितना बदल गया है । अपने पिता के सामने इस तरह हँसने की हमारी कभी हिम्मत ही नहीं थी । पिता भी तो उस जमाने के थे । उन्होंने भी इतने बेलौस अंदाज मे यह कभी नहीं कहा होगा कि किसी जमाने में हमे लेडी किलर कहा जाता था ।

"शोभा दी नहीं दिखाई दीं । जीजाजी फिर पड़ गए क्या ? वैसे भी दिसंबर का महीना तो उनके लिए कसाले का ही होता है ।"

चलते-चलते आभा एकदम रुक गई । मुझे घूरते हुए बोली, "तुझे कुछ भी पता नहीं ?"

"क्या ?"

"जीजाजी नहीं रहे ।"

"क्या ?" मेरा तो जैसे खून ही जम गया ।

"हाँ, इसी फरवरी मे उनका देहांत हुआ है । अभी साल-भर भी नहीं हुआ है ना, इसीलिए दीदी नहीं आईं ।"

"तुम लोग इतने दकियानूसी कब से हो गए रे ? फिर यह तो घर की शादी थी। यहाँ आने मे क्या हर्ज था ?"

"कोई इसरार करके बुलाता तब तो ? यहाँ तो किसी को फुरसत ही नहीं है। जो आ गए है, उन्हीं की कोई पूछ-परख नहीं है। तुम्हीं बताओ, अगर यह जोर देकर कहतीं तो दीदी मना कर देतीं ? उनका भी तो आने का मन कर रहा होगा ? लड़के की यही एक शादी तो है। मनीष भाई के तो तीनो लड़कियाँ ही है।"

"तुम्हीं जबरदस्ती ले आती।"

"मेरा घर होता, तो जरूर ले आती। दूसरो के काम में अपना दखल नहीं देते।" उसने मुँह फुलाकर कहा।

"खैर, तुम्हारी बड़ी भाभी तो हमेशा से अलूफ रही है, पर सविता भाभी तो मनुहार करके ला सकती थीं, उनका भी हक बनता है।"

"रेणु, किस दुनिया में रहती है तू ? तुझे किसी बात की खबर नहीं है ?"

"क्या मतलब ? क्या सविता भाभी भी ''ओ गॉड।" पल-भर को जैसे मेरी साँस ही रुक गई।

"नहीं रे, सविता भाभी मरी नहीं है, पर इससे तो मर जातीं, तो अच्छा था।"

मतलब मृत्यु से भी कोई भयकर बात है ? क्या हो सकती है ? क्या वह घर छोडकर किसी के साथ''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। कम से कम मनीष भाई को देखकर तो ऐसा नहीं लगा कि कोई अनहोनी हो गई है। वह उतने ही फक्कड़, मस्तमौला नजर आ रहे थे।

आभा से सारी बाते खुलासेवार जानने की इच्छा थी। सोचा था, कहीं एक तरफ कुर्सियाँ लेकर बैठ जाएँगे। तभी किसी ने उसे आवाज दी, "सॉरी यार, मुझे जाना पड़ेगा। ससुराली रिश्तेदार है। उन्हे ठीक से अटेंड करना पड़ेगा। खातिरदारी मे जरा भी कसर रही तो रिपोर्ट सीधे हाईकमान तक यानी कि मेरी सास तक पहुँच जाएगी। चलती हूँ, एन्जॉय योर सेल्फ।"

अब क्या खाक एन्जॉय करूँगी मै। दो-दो बॉम्बशेल डालकर खुद तो हवा हो गई और कहती है, एन्जॉय योर सेल्फ।

माँ की कही एक बात याद आई। वे कहती थीं, शादी के मंडप में मृत्यु की चर्चा कभी नहीं करनी चाहिए। अपशगुन होता है। अपशगुन तो क्या होता होगा, हाँ, मूड जरूर चौपट हो जाता है।

भैया-भाभी पर इतना गुस्सा आ रहा था। दो-दो हादसे हो गए और मुझे खबर भी नहीं। खैर, गलती मेरी ही है। पत्राचार तो इन दिनो छूट ही गया है। कभी-कभार मै ही

फोन कर लेती हूँ। उस समय जो ताजा समाचार होता है, वह मिल जाता है, फिर चाहे वह सन्याल साहब के टाइगर की मृत्यु हो, महरी की बबली की शादी हो या धोबी की चौथी कन्या का जन्म हो। और इतने महत्त्वपूर्ण समाचार सिर्फ इसलिए छूट गए कि उस दौरान मैंने फोन नहीं किया होगा।

मुझसे तो घर पहुँचने तक भी सब्र नहीं हुआ। गाड़ी में बैठते ही पूछा, "शोभा दीदी के पति नहीं रहे, मुझे तो पता ही नहीं था।"

"अरे," भैया बोले, "तुम्हे पता नहीं था ?"

इतना ताव आया। मेरा प्रश्न मुझी को लौटा रहे थे। यह भी कोई बात हुई। किसी तरह अपने को जब्त कर मैंने पूछा, "और यह मनीष भाई की बीवी का क्या चक्कर है ?"

"चक्कर क्या है, बस समझ लो, शनि का फेरा है। बेचारी तीन साल से खटिया पर पड़ी है।"

"क्यों ? कैसर है ?"

"नहीं रे," भाभी ने बताया, "बहुत भयानक एक्सीडेंट हुआ था। मनीष की भी दो पसलियाँ चटक गई थीं। कुहनी में फ्रेक्चर हो गया था, घुटने पर चोट आई थी, पर सविता की हालत तो यह समझ लो कि मर ही गई थी।"

"मर ही जाती तो अच्छा था।" भैया ने आभा की बात दोहराई।

"पूरे दो महीने कोमा मे पडी रही। अब होश मे भी है तो किस काम की। न किसी को जानती है, न पहचानती है। बस, बिटर-बिटर ताकती रहती है। न भूख-प्यास का होश है, न किसी और चीज का। सारा शरीर लुजपुज हो गया है।"

"दरअसल उसे सिर में चोट लगी है," भैया ने खुलासा किया, "मेडीकल टर्मिनोलॉजी तो मै नहीं जानता, पर जो तंत्रिकाएँ अपने सारे कार्यकलापो को सचालित करती है, वही डैमेज हो गई हैं, बियांड रिपेयर।"

"तो अब ?"

"अब क्या ? जितने दिन उसके लिखे होंगे, जिएगी। तीन साल तो हो ही गए है और तीन साल या तीन महीने या तीन दिन, क्या कह सकते है।"

"बेचारी !"

"बेचारा मनीष कहो," भाभी बोली, "उसकी बेचारे की तो जिदगी ही तबाह हो गई है।"

"अब ये सब लोग शादी मे आ गए हैं, तो उनके पास कौन होगा ?"

"उसकी माँ है न, एक आया भी रखी हुई है।"

"चलो, अच्छा है। घर मे नानी के होने से लड़कियो को कुछ सहारा तो है।"

"लडकियाँ कौन-सी घर पर है ? बड़ी तो दोनो होस्टल मे है। छोटी भी घर में बोर हो जाती है। कभी रजनीश भाई के यहाँ, तो कभी शोभा के यहाँ चली जाती है। सविता की माँ बेचारी बहुत दुखी है। एक दिन बाजार मे मिली थीं, तो रो रही थी।"

'क्यो ?"

"उनके लिए तो उम्रकैद ही हो गई है। पता नहीं कितने दिन रहना है। तिस पर मनीष आजकल उखडा-उखडा रहने लगा है। उनसे ढग से बात नहीं करता। लडकियाँ अपने मे मगन है। कोई घडी-भर भी उनके पास नही बैठती। नौकर भी बदतमीजी से पेश आते है। वह आया अलग हुक्म चलाती है। कह रही थी, बेटी के लिए सारी जिल्लते सह रही हूँ। नहीं तो कब की घर चली जाती।"

"वे लोग तो इतने अमीर है न, फिर यहाँ क्यो पडी हुई है ? उन्हें तो चाहिए कि भाभी को लेकर अपने घर चली जाएँ और शान से रहे।"

"गगु, तुम भी अभी तक बस बच्ची ही बनी हुई हो। बूढ़ी माँ और मृतप्राय बहन, यह दोहरा भार भला कौन उठाना चाहेगा ? पिता जीवित होते तो और बात थी।"

सारी रात मै सो नहीं सकी। सविता भाभी की रिसेप्शन वाली छवि ऑखों मे तैरती रही। उसके बाद भी उन्हे कई बार देखा था। अपनी जुड़वा कन्याओ के साथ वह अकसर ही बाजार में, सिनेमा मे, समारोहो मे नजर आ जाती थीं। हमेशा चुस्त-दुरुस्त, स्मार्ट और सलीकेदार। ऐसी महिला असहाय अवस्था मे बिस्तर पर पडी हुई है, यह सोचकर ही झुरझुरी हो आई।

और शोभा दीदी, उन बेचारी का तो सारा जीवन पति की तीमारदारी करते ही कटा है। अपार सपत्ति और इकलौता लड़का। लड़की ब्याहते समय माँ-बाप ने बस इतना ही देखा। यह तो बाद मे पता चला कि लड़का रोग की पुड़िया है। स्नोफीलिया, ब्रॉकोअस्थमा, सर्वाईकल, स्पाडेलायटिस जैसे शब्द तो मैने उनके ही सदर्भ में पहली बार सुने थे, पर वाह रे शोभा दीदी ! भाग्य के लेख को उन्होंने चुपचाप स्वीकार कर लिया। माथे पर एक शिकन तक न आने दी। इग्लिश में एम०ए० थीं, सगीत की विशारद थीं, बैडमिंटन की चैंपियन थीं, पर अपनी सारी उपलब्धियो को उन्होने ठडे बस्ते मे डाल दिया और केवल पति की नर्स होकर रह गईं। पति की लंबी बीमारियो ने उन्हे समाज से, परिवार से काट दिया था, पर उन्होने कभी इसका मलाल नहीं किया। सच हिंदुस्तानी औरत को ईश्वर पता नहीं किस मिट्टी से गढ़ता है।

मैने दो दिन प्रतीक्षा करने के बाद आभा को फोन किया । सोचा, अब तो वह शादी के माहौल से उबर ही चुकी होगी । पता चला, वह कल रात ही सपरिवार कानपुर के लिए चल पडी है । मुझे मालूम है, बडी भाभी का आतिथ्य उसे ज्यादा दिन रास नहीं आया होगा, पर एक बार मुझसे मिल तो लेती, पर मिलना तो दूर, बदी ने फोन भी नहीं किया । बहुत बुरा लगा ।

फिर मैंने भाभी की चिरौरी की, "भाभी, कल तो अतुल आ ही जाएँगे, फिर कही जाना नहीं हो पाएगा । आज मेरे साथ सविता भाभी को देखने चलेगी ?"

"वहाँ देखने लायक अब क्या है ? वह तो बेजान-सी पड़ी हुई है । अपन जाते है, तो उसकी मम्मी अपनी रामायण लेकर बैठ जाती है, फिर नौकर लोग मनीष से चुगली लगाते है । अच्छा नहीं लगता ।"

"तो शोभा दीदी के यहाँ चले । मेरी अकेले जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही है ।"

"दरअसल मै तो तुम्हे अपने साथ क्लब ले जाना चाहती थी," भाभी ने कुछ पसोपेश के साथ कहा, "वहाँ सब लोग तुम्हे देखने को बहुत उत्सुक है ।"

पर मै वहाँ जाने के लिए जरा भी उत्सुक नही थी । मैने बडी नम्रता से अपनी अनिच्छा जाहिर कर दी । भाभी ने भी शायद औपचारिकतावश ही कहा होगा, क्योकि मेरे एक बार मना करते ही वह मान गई । हम दोनों ने शायद एक साथ ही राहत की साँस ली होगी ।

"एक काम करते है," भाभी बोली, "मेरा रास्ता उधर से ही है । मै जाते-जाते तुम्हे ड्रॉप कर दूँगी, चलेगा ?"

"दौडेगा ।" मैने कहा ।

अकेले जाने की सचमुच हिम्मत नहीं पड़ रही थी, पर भाभी इतनी सजी-धजी थीं और इतना महक रही थीं कि मैने उनसे उतरने का आग्रह नहीं किया ।

इस घर में कई बार आ चुकी हूँ । पर अकेले आने का यह पहला अवसर था । और अवसर भी कैसा ? मुझे आभा पर नए सिरे से गुस्सा आने लगा ।

धड़कते दिल से मैंने बटन दबाया । दरवाजा उन्होने ही खोला । वही सौम्य-शात मुद्रा । बड़े सहज भाव से पूछा, "अकेले आई है ?"

"भाभी छोड़ गई है । उन्हे कहीं और जाना था ।" मैने जानबूझकर क्लब का नाम नहीं लिया ।

हाथ पकड़कर वह मुझे सोफे तक ले आई, फिर इत्मीनान से बैठते हुए कहा, "अपूर्व ने बताया था कि तुम आई हुई हो ।"

"अपूर्व आपको कहाँ मिला ?"

"वहू को लेकर आया था न, कह रहा था, रिसेप्शन मे तुम आई थीं । अपूर्व की बहू सुदर है न ?"

"बहुत ।" मैंने कहा और बातो का क्रम चल पड़ा । दुनिया-जहान की बाते । सब कुछ कितना सहज-स्वाभाविक था । और यहाँ आते हुए मै कितना डर रही थी, क्या बोलूँगी, कैसे बोलूँगी ? अगर वह रोने बैठ गई, तो कैसे सात्वना दूँगी । रास्ते-भर रिहर्सल करती आ रही थी, पर उस नाटक की जरूरत ही नहीं पड़ी । मैंने मन ही मन शोभा दीदी को बहुत धन्यवाद दे डाले ।

बात करते-करते अचानक उनकी घड़ी पर नजर गई, "चार बज रहे है । चल, चाय पीते हैं ।" माँ कहती थी कि कहीं मातमपुर्सी पर जाते हैं, तो चाय नहीं पीते, पर यहाँ तो ऐसा कोई माहौल ही नहीं था । वह उठीं तो मैंने कहा, "मै आ जाऊँ ?"

"चप्पल उतारकर आना पड़ेगा ।"

शोभा दी का किचन हमेशा की तरह जगर-मगर कर रहा था । हर चीज साफ-सुथरी, करीने से लगी हुई । कतार के कतार चमचम करते स्टील के डिब्बे, अचार की बर्नियाँ, उन पर लगे झालरदार कपड़े, पर्लपेट के डिब्बो में नाश्ते की चीजें, झकाझक धुली क्रॉकरी, पिरामिड की शक्ल में गिलास, कटोरियाँ, पतीलियाँ, मसाले के डिब्बे, घी-तेल की बर्नियाँ । हर चीज बड़े कायदे से, सलीके से अपनी जगह पर थी ।

"दीदी, माँ और भाभी हमेशा आपके किचन की खूब तारीफ करती थीं । मुझे तो हैरत है, आप यह सब कैसे मैनेज करती है । मेरा मतलब है, अब भी आप इतनी मेहनत करती है ?"

"अब भी से तुम्हारा क्या मतलब है भई ? क्या मै साठ साल की बूढ़ी हो गई हूँ ?"

"नहीं, मेरा मतलब था कि ।"

"तुम्हारा मतलब समझ रही हूँ मै, पर लाडो मेरी, ये सारे काम हमेशा मै ही करती आ रही हूँ । कोई मेरा हाथ बँटाने वाला नहीं था ।"

"फिर भी मुझे 'मेरा मतलब है' ।"

"तुम्हारा यह मतलब भी मै समझ रही हूँ । तुम्हें हैरत है कि अब भी मुझमे इतना उत्साह क्यो है ? तो रेणुजी, यह तो मेरे व्यक्तित्व का हिस्सा है । मेरे खून में है ।"

पता नहीं क्या सोचकर उन्होंने गैस बद की और हाथ पकडकर मुझे बेडरूम मे ले गई । मैं चकित होकर देखती ही रह गई । उस परिदृश्य मे जरा भी बदलाव नहीं आया । बडे से डबल बेड पर कढा हुआ पलगपोश बिछा था । उससे मेल खाते चार

तकिए थे । पलग के दोनो ओर दो पॉव पोश थे । बाथरूम के पास वाले पॉव पोश पर बडे आकार के स्लीपर्स, टॉवल, रेल पर जनाने-मर्दाने टॉवेल । दीदी की ड्रेसिंग टेबल पूर्ववत् सजी हुई । खिडकी के पास लगे वॉश बेसिन पर शेविंग का सामान धुला-पुॅछा ।

पश्चिम वाली बालकनी पर दो बेंत की कुर्सियॉ आमने-सामने लगी हुई । दक्षिण वाली बालकनी में एक झूला, जिसकी पीतल की कडियॉ ऐसे दिप-दिप कर रही थीं, मानो कल ही ब्रॉसो किया था । उस बालकनी से मैने हॉल का नजारा किया । सब कुछ धुला-पुॅछा, झकझक करता—मेजपोश, परदे, कुशन कव्हर्स, फर्श से लेकर डाइनिग टेबल तक दर्पण की तरह दमकता हुआ । किताबें करीने से लगी हुई ।

“आप क्या रोज यह अदला-बदली, झाड़-पोंछ करती रहती है ?” मैने मुग्ध होकर पूछा ।

“नहीं रे, वे मैले ही नही होते । मै ही देख-देखकर बोर हो जाती हूॅ, तो बारी-बारी से एक-एक कमरा ठीक करती रहती हूॅ । कहीं भी कुछ बेतरतीब नहीं होता, फिर भी मै तरतीब देती रहती हूॅ । यही तो मेरा पास्ट टाइम है । यही तो मेरा नशा है । जिस दिन यह नशा काम नहीं करेगा न, उनकी एक बड़ी-सी फोटो लगाकर छुट्टी कर लूॅगी ।”

पहली वार मुझे ध्यान आया कि बेडरूम मे मेटलपीस पर रखी शादी की फोटो को छोडकर घर मे जीजाजी की कोई फोटो नहीं है और मै डर रही थी कि घर मे पॉव देते ही बड़ा-सा फोटो नजर आएगा, उस पर मोटा-सा हार होगा, नीचे अगरबत्तियॉ ।

“दीदी, आपने यह अच्छा किया कि कोई फोटो नहीं लगाया । इसलिए यह अहसास ही नहीं होता कि कोई यहॉं से सदा के लिए चला गया है । लगता है, बस, बाजार तक गए है । अभी आते होंगे ।”

दीदी फीका-सा मुस्करा दीं । जैसे कह रही हो, पगली, यह सारा सरजाम मै इसीलिए तो कर रही हूॅ ।

चाय पीते हुए उन्होने अचानक पूछ लिया, “तेरी वह चचेरी ननद थी न, अनब्याही, अब क्या कर रही है ?”

“उनकी तो पिछले साल शादी हो गई । रिटायर्ड मेजर है । जयपुर फुट लगा हुआ है, पर बाकी एकदम चुस्त-दुरुस्त है । हनीमून पर दोनो यूरोप और अमेरिका के दौरे पर गए थे । तभी हमारे पास भी आए थे ।”

“और वह डायवोर्स केस किसका चल रहा था ?”

“मेरी छोटी बुआ सास का । वह केस करना चाह रही थीं, पर जेठ जी ने समझा-बुझाकर वापस भेज दिया । उन्हीं की हमउम्र है वह । ननद ही लगती है । इसीलिए

भाईसाहब की सुन भी लेती है । वह बोले कि मेरी भी लडकियाँ बड़ी हो रही है । अब मै उनकी चिता करूँ, या फिर से तुम्हारे लिए लडका खोजता फिरूँ । छोटे-मोटे झगड़े तो होते ही रहते है । उनके लिए क्या कोई घर छोड देता है ।"

"अरे, तेरे भैया की एक साली थी न, जिसके पैर मे डिफेक्ट था । क्या अब तक कुँआरी है ?"

"कौन, कनक दीदी ? भाभी बता रही थीं कि उन्होंने एक लखपति के मदबुद्धि बालक से ब्याह कर लिया । अब ऐश कर रही है, पर दीदी, आज आपको इन सबकी याद कैसे आ रही है ?"

"अपनी गरज से सब याद आ जाता है ।"

"कैसी गरज ?"

"मनीष भाई के लिए रे, छोटी बहन होकर अब मुझे ही उनके लिए कुछ करना पड़ेगा । बडी भाभी को तो तुम जानती ही हो ।"

"लेकिन अभी तो सविता भाभी मेरा मतलब है, यह सब करने का समय तो आने दो । ऐसी क्या जल्दी है ?"

"सो तो है, पता नहीं बेचारी कितना कष्ट लिखाकर लाई है । खुद भी भोग रही है, साथ मे घरवालो को भी भुगतना पड रहा है । अच्छा सुन, मैंने कहीं पढ़ा था कि मानसिक विकलागता का सर्टिफिकेट हो, तो दूसरी शादी की परमिशन मिल जाती है । क्या यह सच है ?"

"पता नहीं दीदी ।"

"रजनीश भाई कह रहे थे, वह वकील से बात करेंगे । मानसिक तो क्या, ये तो सभी तरह से विकलाग है । कुछ न कुछ रास्ता तो निकालना ही पड़ेगा । ऐसा कब तक चलेगा ?"

"लेकिन दीदी, ऐसा कोई भी कदम उठाने से पहले आपको लड़कियो के बारे मे सोचना होगा । क्या माँ के जीवित रहते वे दूसरी माँ की कल्पना को झेल पाएँगी ?"

"अरे, यह सब उठा-पटक हम लोग लडकियों के लिए ही तो कर रहे है । बेचारी माँ के रहते अनाथ हो गई है । जैसे मनीष भाई, पत्नी के रहते सन्यासी हो गए हैं ।"

मनीष भाई और सन्यासी ! मुझे अनायास ही उस दिन रिसेप्शन वाला रूप याद आ गया ।

"दीदी, आपकी शादी को कितने साल हो गए ?" मैंने एकाएक पूछ लिया ।

"सोलह, क्यों ?"

"इस बीच जीजाजी कितने दिन बीमार रहे ?"

"यह पूछ कि कितने दिन ठीक रहे । उनकी तो साइकिल थी, ऋतुचक्र के अनुसार ही हेल्थ बुलेटिन चलता था । सावन-भादो घर में रहेगे । दीवाली से होली तक, घर मे क्या बिस्तर में ही रहेगे । इसके अलावा सर्दी-जुकाम, लू-लपट चलता ही रहता था । कमजोर आदमी को हर व्याधि बडी जल्दी पकड़ लेती है ।"

"और जितने दिन वह बीमार रहते, आप घर मे कैद हो जाती थीं ?"

"वह सब तो तू जानती ही है ।"

"आपको कभी ऊब नहीं हुई ? खीज नहीं आई ?"

"पागल, एक बार जिसे अपना कह दिया, उससे ऊब कैसी ? खीज क्यो होगी ? वह और सोलह साल जीते तब भी मै उनकी इतनी ही लगन से सेवा करती, पर क्या करूँ ? ईश्वर को मंजूर ही नहीं था ।" उन्होने एक सॉस भरकर कहा । इतनी देर में पहली बार उनके मुँह से एक अवसाद भरा वाक्य निकला था ।

"और दीदी, मनीष भाई तीन साल में ही इतना ऊब गए है कि हर कोई उनके लिए ऊपर-नीचे हो रहा है ।"

"वह पुरुष है रे, औरतों का-सा सब्र वह कहाँ से लाएँगे ।"

"अच्छा, मान लो, यह हादसा अगर उलटा हो जाता, मनीष भाई बिस्तर पर होते और भाभी ठीक-ठाक होतीं, तो क्या वह उनकी मृत्यु की कामना करतीं ?"

"क्या बात करती हो ? ऐसा कहीं होता है ?"

"यही तो दु ख है दीदी कि ऐसा नहीं होता । पति चाहे लँगड़ा, लूला, काना, कुबडा हो, तब भी हिंदुस्तानी पत्नी उसकी दीर्घायु की कामना करती है । उसके लिए व्रत-उपवास करती है । मनौतियाँ मानती है । जानती है क्यो ? क्योंकि उसे मालूम है कि पति के बिना उसका अस्तित्व शून्य है । घर-परिवार में उसका मान-सम्मान, समाज मे उसकी प्रतिष्ठा सब पति के दम से होती है । सबसे ताजा उदाहरण तो आपका ही है । परिवार के इकलौते बेटे की शादी थी और आप वहाँ नहीं थीं ।"

"मुझे बुलाया था रे, मै ही नहीं गई । पता नहीं क्यों, मन ही नहीं हुआ ।"

"और किसी ने आप पर जबरदस्ती भी नहीं की । की होती तो आप जरूर जातीं, और जातीं, तो देखतीं कि असहाय, अपाहिज पत्नी को घर पर छोड़कर मनीष भाई कैसी रगरलियाँ मना रहे थे ।"

"कहा न कि वह पुरुष है । उन्हें सब सोहता है ।" दीदी ने थकी-सी आवाज मे कहा ।

पता नहीं क्यों, मुझे भी एकाएक थकान हो आई ? मै उठ खड़ी हुई, "दीदी, अब चलूँगी । भैया दफ्तर से आते ही मुझे खोजने लगते है । दो-चार दिन ही तो हूँ, उन्हे पूरा

समय देना चाहती हूँ।"

"अगला चक्कर कब लगेगा ? आठ साल बाद ?"

"नहीं दीदी, इस बार सोचती हूँ, जल्दी आऊँगी। सब लोग बहुत नाराज हो रहे थे।"

"यह हुई न बात, और अकेली नहीं आओगी, समझीं ? गोद भरी होनी चाहिए।"

"दीदी, हम लोग अभी ठीक से सेटल नहीं हुए है। बच्चा हो गया तो सँभालेगा कौन ?"

"मुझे दे जाना, मै पाल लूँगी। जब सेटल हो जाओ, तब ले जाना, पर बुढ़ापे तक इंतजार मत करना।"

मैंने मन ही मन कहा, मुझे मालूम है दीदी, तुम मेरा तो क्या, ऐसे दर्जन-भर बच्चे सँभाल सकती हो। तुम में अब भी इतनी ऊर्जा है, उत्साह है कि एक भरी-पूरी गृहस्थी का भार उठा सकती हो, पर इस करुण सत्य को जानने की इच्छा किसकी है ? सब मनीष भाई के लिए ऊपर-नीचे हो रहे है, पर तुम्हारे इस बीहड़ एकात मे झाँकने का समय किसी के पास नहीं है। तुम अपने कल्पना-लोक में ही विचरण करने के लिए अभिशप्त हो।

विदा लेते समय मेरी पलकें गीली थीं।

औरत एक रात है

यह शायद पाँचवीं या छटवीं बार हुआ है कि रीमा की शादी लगते-लगते रह गई थी। हर बार की तरह इस बार भी बहुत आश्चर्य हुआ था, पता नहीं, लड़की के भाग्य मे क्या है ? वरना, हम लोग तो हमेशा यही सोचते थे कि इसे तो कोई भी हाथों-हाथ ले जाएगा। सुदर है, स्मार्ट है, फर्स्ट क्लास एम०कॉम० है, बैक मे नौकरी है, मतलब यह कि आजकल के लड़के जो कुछ चाहते है, वह सब कुछ उसके पास है, फिर पता नही, बात कहाँ अटक जाती है।

इस बार भैया का जो पत्र आया है, बिलकुल रुआँसा है। 'सीमा, मै तो तग आ गया हूँ। तुम यकीन नहीं करोगी कि इस चक्कर में कितना रुपया, कितनी छुट्टियाँ बर्बाद कर चुका हूँ। फिर भी बात नहीं बनती। उधर अम्मा सोचती है कि मै हाथ पर हाथ धरे बैठा हूँ। तुम्हीं बताओ, मै क्या करूँ ?

इस बार तो पूरी आशा थी। पक्का विश्वास था। उन्होने कुडली मँगवाई थी। वह सोलह आने मिल गई, फिर माँ-बाप जाकर रीमा को देख आए। उन्हे पसद आ गई तो लड़के को ग्रीन सिग्नल दे दिया। लड़का अपनी दोनों बहनों के साथ उसे देखने गया। उस परेड मे भी वह पास हो गई। फिर उन्होने मुझे एक लबी-चौड़ी लिस्ट थमा दी, अपनी हैसियत की परवाह न करते हुए मैने उस पर भी हामी भर ली। सोचा कि अब अट्ठाईस की हो चली है रीमा, और कितने दिन इतजार करेंगे। एक बार शादी हो जाए, फिर कर्ज भुगतते रहेगे।

पर कल अचानक उनका खेद-भरा पत्र आ गया है। फोटो भी उन्होने लौटा दिया है। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है। अम्मा तो यही समझेंगी कि मैंने लेन-देन के मामले मे हाथ खींच लिया है। सच, मै तो तुम दोनों की शादी करते-करते हाँफ गया हूँ। पता नहीं, बेटियो तक मुझमे कुछ एनर्जी रहेगी भी कि नही।'

यह आखिरी वाक्य बहुत चुभने वाला था। माना कि मेरा रग जरा दबा हुआ है, मेरे लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी, पर मेरी शादी इतनी लबी नहीं खिंची थी। बाईस के होते-होते तो मेरे हाथ पीले हो गए थे। यह बात और है कि मेरे सोलह मे पैर रखते ही अम्मा ने हाय-तौबा मचानी शुरू कर दी थी उन चार वर्षों में मैंने इतने नक्त्रर झेल थे

कि मै आजिज आ गई थी । पहली बार जिसने हॉ कहा, मैने उसी को वरमाला पहना दी । मजबूरियॉ कभी-कभी कैसी गलती करवा देती है ।

मेरी शादी तय होने तक तो भैया भी इतने कचुआ गए थे कि उनका वश चलता तो दोनो को निबटा देते, पर रीमा बहुत छोटी थी । उसमे और मुझमें आठ साल का अतर था । हम दोनो के बीच दो भाई थे, जो दो-तीन साल के होकर चल बसे थे । अम्मा उनके लिए हमेशा रोती रहती थीं । यमराज को कोसतीं कि हीरे जैसे बेटों को उठा लिया और इन करमजलियों को छाती पर मूँग दलने के लिए छोड़ गया । वे दोनो होते तो भाई के साथ कधे से कधा मिलाकर खड़े होते । ये महामारियाँ तो घर ढोकर ले जाएँगी ।

अब अम्मा से यह कौन पूछेगा कि घर मे है ही क्या, जो कोई ढोकर ले जाएगा । मै तो अब तक सास के, उनके बेटे के ताने सुन रही हूँ ।

शाम को इनके घर लौटने से पहले ही मैने भैया का पत्र छिपाकर रख दिया । बाकी पत्र तो ठीक था, पर अत मे हम दोनों की शादी को लेकर जो टिप्पणी थी, वह खतरनाक थी । इन्हें तो मजा आ जाता । वैसे भी तो हमेशा सुनाते ही रहते है कि किस्मत समझो कि मै बेवकूफ झॉसे मे आ गया । नहीं तो अब तक बैठी किस्मत को रोती रहती ।

सुनकर कभी-कभी इतना ताव आता है, आपकी बाबूगिरी पर, सींकिया देहयष्टि पर, कोई अप्सरा नहीं रीझी, तभी तो हमारे लिए राजी हुए थे । कोई अहसान नहीं किया था, पर पत्नियॉ यह सब कहॉ कह पाती है । घर में आग नहीं लग जाएगी ।

उस दिन मैंने दूसरा ही रुख अपनाया ।

"सुनिए, वह आपके कुलीग है न, अबिकाशरण, उनकी मिसेज कह रही थीं कि उनका भाई अब शादी के लिए राजी हो गया है ।"

"मतलब ?"

"मतलब यह कि बहनो की वजह से अब तक कुँआरा बैठा हुआ था, अब सब निबट गई है, तो शादी कर रहा है । बत्तीस साल का है । सेल्स टैक्स मे इस्पेक्टर है ।"

"तो ?"

"तो क्या ? रीमा के लिए बात कर ले ।"

वे अपनी कजी ऑखों को बारीक करके मुझे घूरने लगे ।

"ऐसे क्या देख रहे है ? क्या हम लोगो का कोई फर्ज नहीं बनता ? अकेले भैया ही हलकान होते रहेगे ? प्लीज, आप बात कीजिए न ।"

"मै," वह एकदम फट पड़े, "उस पटाखा लड़की के लिए बात करने जाऊँगा ? इम्पॉसिबल । दूसरों के घर मे महाभारत करवाने का पाप मै अपने सिर कभी नहीं लूँगा ।"

"कैसी बातें करते है । बस जो मुँह मे आया कह देते हैं । रीमा पटाखा कैसे हो

गई ? वह कौन-सा महाभारत करवाती है ? आज तक किसी से उसकी लड़ाई नहीं हुई । घर-परिवार मे, गली-मोहल्ले मे, दफ्तर मे, सब उसकी तारीफ करते हैं ।",

"अगर इतनी ही अच्छी है आपकी बहन, तो अब तक एक अदद दूल्हा क्यों नहीं जुटा पाई ? बेचारे भैया को क्यो परेशान किया जा रहा है ? इतनी बडी लड़कियो को तो खुद घर-वर ढूँढ लेना चाहिए । घरवालों को इस तरह बेजार करना गलत है । अरे, उन्हे थोड़ा तो आराम करने दो । चार-पाँच साल बाद उन्हे फिर चीनू-मीनू के लिए जूते चटखाने हैं ।

अलग ढग से ही सही, ठीक यही बात भैया ने अपने पत्र में लिखी है । क्या सचमुच बहने भाई पर इस कदर भार होती है । मुझे तो रोना ही आ गया । इनसे कहा, "देखिए, आपको कुछ नहीं करना है, तो मत कीजिए, पर उलटा-सीधा मत बोलिए । वे लडकियाँ अलग होती है, जो अपने आप शादी तय कर लेती है । मेरी बहन वैसी नहीं है ।"

"तुम्हारी बन कैसी है, यह मै खूब जानता हूँ । अब ज्यादा मुँह मत खुलवाओ ।"

"क्या मतलब ?"

लेकिन मतलब समझाने के लिए वह घर मे रुके ही नहीं । चप्पल पहनकर सीधे हवाखोरी को निकल गए । जब तब मेरे पीहर वालो पर फब्तियाँ कसना, यह उनका प्रिय शगल है । हर बार खून का घूँट पीकर रह जाती हूँ मै । लड़ने की शक्ति होती, तो मै भी इनके घरवालो को सौ विशेषण दे सकती थी, पर वहीं तो मात खा जाती हूँ बस, उसी घडी को कोसती रह जाती हूँ, जब मैंने इस रिश्ते के लिए हाँ की थी ।

मै और मेरा पूरा परिवार इनके लिए मजाक के पात्र है । मुझे तो दर्जनो नाम दे रखे है, कभी बच्चों का भी लिहाज नहीं करते । रीमा का कभी नाम नहीं लेंगे, हीरोइन कहेगे या मिस इडिया । अम्मा को ललिता पवार कहते है । उनकी नजरो मे भैया तो एकदम लल्लूप्रसाद है । भाभी को इंदिरा गाधी का खिताब मिला हुआ है । कहते है, तुम्हारे घर मे वही तो एक मर्द है ।

यह बात वाकई सच है । एक भाभी ही तो है, जो इन्हें ठिकाने लगाती है, इनकी जबान को लगाम देती है । और किसी को तो यह घास नहीं डालते ।

उस दिन भाभी का पत्र आया था—बाईस जुलाई को रेणु जी की शादी है, आप जरूर आइएगा ।

मै तो हैरान रह गई । रेणु मेरी चचेरी बहन है । उसकी शादी होगी, तो इदौर मे होगी । उसके लिए भाभी शहडोल से निमंत्रण क्यों भेज रही है । कहीं ऐसा तो नहीं कि

शादी शहडोल से हो रही हो । पर पत्र मे तो कहीं इसका उल्लेख नहीं है । बड़ा सक्षिप्त-सा पत्र है ।

मै तो केवल हैरान होकर रह गई थी । इन्होने तो बवाल मचा दिया, "तुम्हारे चाचाजी ने तुम्हारे भाई को क्या मुख्तारनामा लिख दिया है ?"

"दे भी सकते है । भैया परिवार के बड़े लड़के है ।"

"तो वे खुद पत्र लिखते न, श्रीमतीजी को कष्ट क्यो दिया ? उन्होने भी क्या पत्र लिखा है, वाह ! पत्र आपके नाम है और लिखा है, आप आइए । मतलब और किसी को आने की जरूरत नहीं है । अरे, कोई बेगैरत ही होगा जो ऐसे निमत्रण पर जाएगा ।"

अच्छा हुआ, जो दूसरे ही दिन चाचाजी का अनुरोध-भरा पत्र आ गया । बड़े ही परपरागत ढग से लिखा गया था कि अवश्य पधारे । मनुहार की गई थी कि सीमा और बच्चो को भी साथ लाएँ ।"

"अब तो खुश ।"

वह बस मुस्करा दिए । ज्यादा खुशी का इजहार करते, तो उनकी शान मे कमी न आ जाती ।

"अब तो चलेंगे न ?"

"नहीं भाई, छुट्टी कहाँ है ? तीन-चार सी०एल० बची है । अभी पूरा साल निकालना है । तुम अकेली हो आओ । बच्चो को भी रहने दो । रीमा की शादी मे देखेगे ।"

मैने यूँ ही बुरा-सा मुँह बना लिया, पर मन मे राहत की साँस ली । यह साथ होते है, तो पीहर का आनद ही नहीं आता । पूरे वक्त इनकी हाजरी मे रहना पड़ता है । जरा-सी भी ऊँच-नीच हुई नहीं कि ये तमाशा खडा कर देते है । शादी वाले घर मे वैसे ही सब लोग इतने व्यस्त रहते हैं, कोई कहाँ तक खयाल रखेगा ।

कितनी बार समझाया है कि अब शादी को पद्रह साल हो चले है । आप कब तक दामाद बने रहेगे ? पर उनका कहना है कि कल को चाहे मेरे दामाद आ जाएँ, पर इस घर का तो मै दामाद ही रहूँगा और उसी ठसक से रहूँगा ।

एक बात और थी । मै इस बार एकदम मुक्त रहना चाहती थी, ताकि इत्मीनान से भाभी से बात कर सकूँ । उनके पत्र का रहस्य अब कुछ-कुछ मेरी समझ में आ रहा था । वह जरूर मुझसे कुछ कहना चाहती थी । नहीं तो आज तक उन्होंने मुझे कभी पत्र नहीं लिखा । यह पहला पत्र था । सच कहा जाए, तो उनके साथ कभी अपनापा महसूस ही नहीं किया । वह बहुत अच्छी है । पहली भाभी के बच्चों को भी अच्छे से पाल रही हैं सब ठीक है फिर भी उनसे एक दूरी बनी हुई है वह थोडी गंभीर थोडी सिद्धांतवादी

और बहुत ही अनुशासनप्रिय हैं। इसलिए उनसे सहज संवाद स्थापित नहीं हो पाता। उनकी तुलना में कविता भाभी तो एकदम गऊ थी।

शादी में भैया-भाभी, बच्चे सभी आए थे। छोटे अक्षत को मैं मुंडन के बाद पहली बार देख रही थी और चीनू-मीनू तो इतनी बड़ी हो गई थीं कि पहचानी नहीं जा रही थीं। चीनू तो एकदम अपनी माँ की प्रतिमूर्ति लग रही थी। सच, चार-पाँच साल बाद तो भैया को इनके लिए भी हाथ-पैर मारने होंगे। तब तक भी रीमा कुँवारी बैठी रही तो ?

अम्मा ने जैसे मेरे मन की बात पकड़ ली। वैसे भी रेणु की शादी में उनका उदास होना लाजमी था। वह रीमा से चार-पाँच साल छोटी थी। चीनू-मीनू को देखकर अम्मा बोलीं, "दो-चार साल बाद ये दोनों भी अपने-अपने घर की हो जाएँगी, पर यह करमजली लगता है, यहीं बैठी रहेगी।"

"करमजली हूँ, तभी तो सबको जला रही हूँ।" रीमा ने तड़पकर कहा, "हजार बार कहा होगा कि अब यह नाटक बंद करो। मुझे भी सुख से जीने दो, भैया-भाभी को भी चैन की साँस लेने दो, पर मेरी कोई सुने तब न।"

बस, अम्मा को तो बहाना चाहिए था। उनका एकालाप शुरू हो गया।

मन इतना खराब हो गया कि बस। लोग सफर से थके-हारे आए हैं, इसका भी खयाल नहीं है। बस, अपना रोना लेकर बैठ जाएँगी। मैं चुपचाप छत पर चली आई और बरसात के धुले-धुले आकाश को देखती रही। पीहर आने का सारा उत्साह ही हवा हो गया। अच्छा ही हुआ, जो ये साथ नहीं आए। उन्हें बात करने के लिए मसाला मिल जाता।

पीछे आहट हुई, तो चौंककर देखा, भाभी थीं।

"अरे ! मैं तो समझी रीमा है।"

"वह तो बैंक चली गई।"

"अरे, मुझसे तो बोली थी कि छुट्टी लेगी।"

"क्या पता, बोली, शादी तो कल है, आज की छुट्टी क्यों जाया करूँ ?"

"हाँ, सोचा होगा, अम्मा की झक-झक सुनने से अच्छा है, बॉस की बातें सुनना।"

भाभी फीकी हँसी हँस दी, "इसीलिए तो मैं यहाँ आने से कतराती हूँ। आते ही रोना शुरू हो जाता है। वह हर बार यह जता देती है कि हम बहन की कमाई पर ऐश कर रहे हैं और उसकी शादी में जानबूझकर देर कर रहे हैं। जबकि भगवान् ही जानता है कि हम कैसी जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। और आप मुझसे मेरे बच्चे की कसम ले लीजिए, जो हमने रीमा की कमाई को हाथ भी लगाया हो।"

"आप भी भाभी, अम्मा की बातों को इतनी गंभीरता से लेने लगेंगी तो हो चुका।

हमें तो बचपन से आदत पडी हुई है। वह बोलती रहती है और हम इधर-उधर हो जाते हैं। सच कहूँ, मुझे उन पर गुस्सा कम और दया ज्यादा आती है। बेचारी रीमा की चिंता मे घुली जा रही है। पता नहीं, क्या हो जाता है, हर जगह बात बनते-बनते बिगड़ जाती है।"

"मुझे पता है।"

"क्या ?" मै एकदम चौक पडी। विस्फारित नेत्रो से उन्हे देखने लगी।

"हॉ, मुझे पता है, पर पहले आप यह बताइए कि यह कपिल कौन है ?"

"कपिल ?"

"हॉ, यह वही व्यक्ति है, जो रीमा की शादी रोक देता है।"

"यह आप क्या कह रही है भाभी ?"

"सुनिए, इस बार जहॉ बात चली थी, वे लोग मेरे बहुत आत्मीय है। इसलिए मुझे पूरी उम्मीद थी और बात भी करीब-करीब पक्की हो गई थी। फिर अचानक उनका रिफ्यूजल आ गया। ये तो हमेशा की तरह मुँह लटकाकर बैठ गए। मैने कहा, हमे जवाब-तलब करना चाहिए, ये कोई इसानियत है ? तो आपके भाई बोले, हम लडकी वाले है। हमे दबकर रहना चाहिए।

"मुझे तो एकदम ताव आ गया। अरे, अब शादी ही टूट गई, तो क्या लडकी वाले और क्या लड़के वाले ? मै तो इनको बिना बताए वहॉ चली गई और उन लोगों को खूब लताडा। तो जानती है, क्या हुआ ? उलटे उन्होंने मुझे फटकार लगाई कि आप हमारे लडके को फॅसा रही थीं। लडकी का कहीं अफेयर चल रहा है और आप जबरदस्ती उसका रिश्ता हमारे यहॉ कर रही थीं। कम से कम आप से तो यह उम्मीद न थी।

"फिर उन्होंने इस कपिल के बारे मे बताया। उसके बाद मैने इनसे छिपकर और दो-चार जगह बातें कीं। वे लोग भी अचानक इसी तरह से मुकर गए थे। वहॉ भी पता चला कि कपिल नाम का यह लडका कभी फोन से, कभी पत्र से रीमा के साथ अपने अफेयर की सूचना देता है। कहता है, रीमा सिर्फ मेरी है। किसी और की हो ही नहीं सकती।"

भाभी बोले जा रही थीं और मेरा दिमाग घूम रहा था। यह नाम मेरी स्मृतियों पर हथौडे की तरह बज रहा था। उनके चुप होते ही मैने कहा, "भाभी, मै रीमा से पूछकर पता करती हूँ। अभी आप यह बात किसी को मत बताइएगा। प्लीज, अम्मा को तो बिलकुल भी नहीं।"

"मैं क्या पागल हुई हू ? मै तो बस इतना चाहती हू कि आप अपनी बहन से पूछकर

मालूम करो कि उसके मन में क्या है ? बेकार यहाँ-वहाँ धक्के खाने में क्या तुक है ?"

भाभी नीचे उतर गई और मै वहीं सिर पकड़कर बैठ गई। दस साल पहले की बात याद हो आई। एक शाम भैया का तार मिला था, कविता जल गई है। एकदम मृत्यु की कगार पर है। फौरन चली आओ।

भैया ने भले ही लिख दिया था, पर फौरन जाना क्या इतना आसान है ? घर की, पैसे की, छुट्टी की व्यवस्था करते-करते दो दिन तो लग ही गए। ग्वालियर से इदौर का सफर सस्ता भी नहीं है, न आसान है। छुट्टियों की भीड़ थी, ट्रेन मे तो सभव ही नहीं था। बस से आना पड़ा।

हमारी बस चार-साढ़े चार बजे ही पहुँच गई थी। मन मे सौ तरह की शकाएँ लेकर घर पहुँचे। धड़कते दिल से दरवाजा खटखटाया। एक सुदर्शन से युवक ने दरवाजा खोला। कुछ देर तक हम दोनो एक-दूसरे को तकते रहे. फिर वह बोला, "आप सीमा दीदी है न ? भीतर आइए न।"

भीतर हम लोगों ने इधर-उधर देखा, सन्नाटा था, "और लोग कहाँ है ?"

"अम्माजी और जीजाजी अस्पताल में है। रीमा भीतर बच्चों के पास है।"

तब तक शायद हम लोगो की बातचीत सुनकर रीमा उठ आई थी। मुझे देखते ही लिपट-लिपटकर रोने लगी। किसी तरह रुकने का नाम ही न ले। वह लड़का भी मुँह फेरकर आँसू पोछता रहा, फिर भर्राए कठ से बोला, "रीमा, अब चुप करो। मेहमानो को चाय वगैरह दो। थरमस मे भी डाल देना, अम्माजी को देता आऊँगा।"

वह लड़का चाय लेकर चला गया, तो रीमा बोली, "चलो, कपिल भैया का एक चक्कर बच गया।"

"मतलब ?"

"रोज सुबह पाँच बजे भैया को लेने जाते है, फिर सात बजे अम्मा की चाय लेकर जाते हैं।"

"तो इकट्ठा सात बजे जाया करे न।"

"नहीं, भैया कहते है, जल्दी आया करो। वहाँ ढग का बाथरूम जो नहीं है। भैया का वहाँ रहना जरूरी है। एक दिन कपिल भैया चले गए थे, तो आधी रात को आना पडा। भाभी की तबीयत एकदम खराब हो गई थी।"

"और अम्मा, वो कब आती है ?"

"वह तो दस के बाद डॉक्टर का राउंड होने पर ही आ पाती है, फिर दो घटे के लिए मै चली जाती हूँ। बारह बजे से चाची आ जाती है। शाम को अम्मा फिर पहुँच जाती है। अस्पताल की वजह से अम्मा ने रात का खाना ही छोड दिया है।"

रीमा दोबारा सोने चली गई, तो ये मुझसे बोले, "तुम्हारी माँ एकदम जाहिल है, और भाई तो एकदम बौड़म है।"

"क्या हुआ ?"

"जवान-जहान लड़की को उस छोकरे के साथ अकेला छोड़ देते है। कल को कुछ ऊँच-नीच हो गई तो ?"

"अब चुप भी कीजिए। यह कोई वक्त है ऐसी बाते सोचने का ?"

तब तक भैया लौट आए थे। मुँह-हाथ धोकर सीधे बिस्तर पर पड़ गए। बोले, "सीमा, माफ करना। रात-भर का जागा हूँ। रात-भर बेच पर बैठा रहता हूँ। लोग-बाग बरामदे मे चादर डालकर सो जाते हैं, पर इतनी गदगी, इतने मच्छर है कि क्या बताएँ। अम्मा का भीतर पता नहीं क्या हाल होता होगा ?"

"अदल-बदलकर भेजा करो न, एकाध दिन रीमा चली जाएगी।"

"ना बाबा, वो जगह क्या लडकियो को भेजने लायक है ? हाँ, तुम चाहो तो आज रात रह जाना। अम्मा को आराम मिल जाएगा।"

मुझे इतना ताव आया। रीमा लड़की है और मै क्या बूढ़ी हूँ।

लेकिन रीमा ने अम्मा की जगह नहीं, अपनी जगह मेरी ड्यूटी लगा दी। बोली, "कल मेरा पेपर है दीदी, सोचा था, आठ दिन का गैप है, यह सब्जेक्ट बाद मे पढ़ लूँगी, पर इन आठ दिनो में किताब खोलकर भी नहीं देखी है। आज थोडा-सा देख लूँगी।"

सोनू को उसी के जिम्मे छोड़कर मै गई थी। बाप रे, आज भी उस वार्ड की याद आती है, तो उबकाई आती है। भैया ने कहा था, 'खाना खाकर जाना, नहीं तो घर लौटकर खा नहीं पाओगी', पर मुझे तो लग रहा था, मेरा सब खाया-पीया बाहर आ जाएगा।

और भाभी, उन्हे देखकर तो रोगटे खड़े हो गए थे।

वह कैसे जीवित थीं, यही आश्चर्य था। वहाँ एक बुजुर्गवार महिला कह भी रही थी, बेचारी के प्राण बच्चो में अटके है। नहीं तो इतनी यातना के बाद क्या कोई जीवित रह पाता है।

दूसरे दिन रीमा का पेपर था, तीन से छह तक। कपिल दो बजे मुझे अस्पताल से घर छोड़ गया, फिर रीमा को लेकर कॉलेज चला गया। शाम को मुझसे बोला, "दीदी, इन लड़कियो को जरा तैयार कर दीजिए, घुमा लाऊँगा।" घूमने के नाम से दोनों हुलस उठीं। अपनी नई-नकोर फ्रॉके उठा लाईं।

"कुछ दूसरा ले आओ बेटे ! अब इस समय ये चमकीले कपड़े पहनना अच्छा लगेगा ?"

"पहना दीजिए दीदी मृत्यु की विभीषिका से उन्हे कल तो दो-चार होना ही है

उनका आज क्यो खराब करें ? बेचारी वैसे ही परेशान है कि उनकी मम्मी एकाएक कहॉ गायब हो गई है । और कोई बीमारी होती तो मै अस्पताल जाकर मिलवा लाता, पर'' सोचता हूॅ, उनके मन मे मॉ की जो तस्वीर है वही कायम रहे, तो अच्छा ।"

उन लोगो को लौटने मे कोई साढ़े छह बज गए । अम्मा तैयार होकर इंतजार कर रही थीं, "बडी देर कर दी बेटा ।" उन्होंने छूटते ही कहा ।

"अम्मा जी, रीमा को भी तो लेना था ना ! छह बजे तो उसका पेपर छूटता है ।"

मीनू आते ही अम्मा से झूल गई, "दादी, हमने है न, वहॉ शरबत पिया था ।"

"वाह गुरु, बड़े मजे कर रहे हो ।" हम लोगो ने चौंककर पीछे देखा । ये बरामदे में खडे कुटिलता से मुस्करा रहे थे । रीमा का चेहरा लाल हो गया और वह सिर झुकाकर भीतर चली गई । कपिल का चेहरा उत्तेजना से तमतमा आया । उसने बडी मुश्किल से अपने ऊपर काबू किया होगा, क्योकि जब वह बोल रहा था, उसकी आवाज बडी सधी हुई थी ।

"जीजाजी, इस समय मजे की बात तो आप ही सोच सकते है, क्योकि जो अस्पताल मे पड़ी आखिरी सॉसे गिन रही है, वह आपकी कोई नहीं है, पर मेरी तो वह सगी बहन है ।"

"फिर भी कोल्ड्रिंक पीना तो याद रहा, है न ।"

"जी हॉ, वह इसलिए कि जो लडकी घर-भर के कपडे, बर्तन और खाना निबटाकर परीक्षा देने गई थी, उसे जाते हुए एक कप चाय भी नसीब नहीं हुई थी । प्यास से उसका गला चटख रहा था । इसीलिए यह गुनाह मुझे करना पडा । माफी चाहता हूॅ । चलिए अम्मा जी, देर हो रही है ।"

उन लोगो के जाते ही यह मुझ पर बरस पड़े, वह बित्ते-भर का छोकरा मेरे मुॅह पर इतनी बातें कह गया और तुम्हारी अम्मा बैठी सुनती रहीं । यह कोई तरीका है ?"

"आपसे भी तो चुप नहीं रहा जाता । भला इस समय उलझने की क्या जरूरत थी ? उनकी लड़की है, उसका भला-बुरा वो जाने । आपको क्या पड़ी है ?"

इनको तो किसी तरह चुप करा दिया, पर दूसरे ही दिन मैने अम्मा से शिकायत की, "इस लडके को इतना बढावा दे रहे हो तुम लोग । सब पर ऐसे रौब झाड़ता है, जैसे यहॉ का कर्ता-धर्ता वही हो ।"

"इस समय तो लली, सचमुच यही बात है । वही घर चला रहा है, वही दवा-दारू का खर्च उठा रहा है । तेरे भाई के हाथ मे तो फूटी पाई नहीं है ।"

"खर्च कर रहा है, तो अपनी बहन के लिए कर रहा है । हम पर कौन-सा अहसान

कर रहा है ।"

"उसकी बहन तुम्हारी भी तो कुछ लगती है । तुम तो कुछ नहीं लाई । बस, हाथ हिलाती चली आई ।"

मुझे तो एकदम रोना आ गया । अम्मा को क्या मालूम कि महीने के आखिरी सप्ताह मे दो लोगो का किराया भी कितनी मुश्किल से जुटाया गया था । मैंने तुनककर कहा, "मुझे किसी धन्ना सेठ को ब्याहया था तुमने, जो नोटों की गड्डियाँ साथ लेकर आती ।"

"देख बिटिया," अम्मा ने पुचकारते हुए कहा, "धन्ना सेठ तो यहाँ कोई नहीं है । न तुम, न हम, न वे लोग । बस, समझ की बात होती है । उसके बडे भैया और भाभी भी आए थे और झाँककर चले गए । कानी कौड़ी तक खर्च नही की । माँ तो बेचारी खटिया पर पडी है । यही लडका है, जो खबर लगते ही भागा चला आया था और तब से लगा ही हुआ है । दवा-दारू तो कर ही रहा है । पच्चीस-पचास का रोज पेट्रोल भी डलवाता है ।"

"शायद इसीलिए भैया ने स्कूटर सौप रखा है, ताकि अपने आप भरता रहे ।"

इसके बाद सारे माहौल से ही मुझे जैसे वितृष्णा हो गई । खाना भी खाती, तो लगता, किसी से भीख ले रही हूँ । अच्छा ही हुआ जो भाभी ने ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करवाई । उसी शाम उन्होंने आँखे मूँद लीं ।

अम्मा कोई छह महीने तक इंतजार करती रहीं कि वे लोग दोबारा रिश्ता लेकर आएँगे । भाभी चार वहनो मे सबसे बड़ी थीं । तीसरी की शादी हो चुकी थी, चौथी अभी पढ़ रही थी । नबर दो अभी कुँआरी थी । उसके पैरो में खोट था और वह लचककर चलती थी । अम्मा ने मन को समझा लिया था कि दुहाजू बेटे के लिए इतनी खोट बर्दाश्त की जा सकती है । उसके आने से बच्चो की ओर से भी थोडा निश्चित हुआ जा सकता है, पर अम्मा प्रतीक्षा करती रह गईं और वहाँ से कोई संदेश नहीं आया ।

हारकर अम्मा ने पहल की तो उन्होने टका-सा जवाब दे दिया । उनके बड़े भाई ने साफ कह दिया कि एक बार गलती कर दी थी, अब उसे दोहराएँगे नहीं । हमारी बहन कुँआरी रहे, हमे मजूर है, पर उस नरक मे दोबारा किसी को नहीं भेजेगे ।

अम्मा अपना-सा मुँह लेकर लौट आईं और जी-जान से बहू की खोज में जुट गईं । दो-ढाई साल के अथक प्रयासों के बाद उन्हे यश मिला । इस बार उनकी जिद थी कि नौकरी वाली बहू लाएँगी । वे घर का दलिद्दर दूर करना चाहती थीं, पर यह भूल गईं कि नौकरी वाली लड़की गूँगी गुड़िया नहीं होती । वह अपने निर्णय खुद लेती है ।

नई वाली भाभी ने आते ही ऐलान कर दिया कि ये बच्चे अगर मुझे पालने है तो

मै अपने ढग से पालूँगी, किसी और का दखल मुझे मंजूर न होगा । वह सिर्फ यह कहकर ही नहीं रुकीं, बच्चों को अपने साथ शहडोल ले गई । हम लोग उनके इदौर स्थानातर की बाट जोह रहे थे । उन्होंने पता नहीं किस तरकीब से भैया को भी वहाँ बुला लिया । अम्मा खून का घूँट पीकर रह गई ।

इस बीच रीमा पढ़ती रही, घर सँभालती रही, बच्चे पालती रही । उसकी ओर ध्यान देने की किसी को फुर्सत ही नही थी । जब औरो को उसकी उपस्थिति का भान हुआ, उस समय वह एम०कॉम० कर चुकी थी और चौबीस साल की हो रही थी ।

इस आपाधापी मे कपिल का अध्याय तो बिसर ही गया था । मतलब अध्याय जैसी कोई बात थी ही नही । अगर होगी भी तो किसी ने उसे तूल नही दिया । अम्मा का पूरा ध्यान उस घर की कन्याओं पर था । जब वहाँ से निराशा हाथ लगी, तो उन्होने उस घर से सबंध ही तोड़ लिए ।

रेणु की विदाई के बाद भैया लोग भी लौट गए । जाते हुए भाभी ने मुझे फिर एक बार याद दिलाया कि मै रीमा से बात कर लूँ । इसीलिए मैने अपने जाने की तारीख दो दिन आगे बढ़ा दी थी ।

जैसे ही जरा-सा एकात मिला, मैने सहज रूप से बात छेड़ दी, “रीमा, तुम्हारे परिचितो मे कोई कपिल है ?”

“परिचितो मे तो कोई नहीं है । हाँ, रिश्तेदारों में एक है ।”

“कौन ?”

“वही चीनू-मीनू के मामाजी ।”

उसका उत्तर इतना सरल और स्वाभाविक था कि शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी, फिर भी मैने उसे कुरेदा, “उन लोगों की, मेरा मतलब है, कोई चिट्ठी-पत्री आती है ?”

“नहीं तो, एक शादी का कार्ड-भर आया था, सो अम्मा ने फाड़कर फेक दिया ।”

“कभी मुलाकात होती है ?”

“मुलाकात कहाँ से होगी ? वो तो एक अरसे से बाहर है । चीनू बता रही थी, कतर या ओमान मे कहीं है ?”

“चीनू कैसे जानती है ? क्या उन लोगो के कॉन्टेक्ट्स है ?”

“क्यो नहीं, भाभी तो हर साल राखी भी भेजती हैं ।”

तभी तो, भाभी को तो इस कपिल का पता-ठिकाना सब मालूम है । तभी तो उस र शक नहीं गया ।

"क्या सोचने लगीं दीदी ?"

"कुछ नही रे, मै इस कपिल नाम के आदमी का पता लगाना चाहती हूँ ।"

"क्यो ?"

"क्योकि यह शख्स हर जगह फोन करके यह प्रचारित करता है कि तुम्हारे साथ उसके सबध है । इसीलिए हर बार बात टूट जाती है ।"

"जाने दो दीदी, जो लोग ऐसे सिरफिरों की बात पर कान देते है, उन लोगों पर मेरी कोई आस्था नहीं है । ऐसी जगह सबध न होना ही अच्छा है ।"

"देखो, उन लोगो का कोई दोष नहीं है । कल को हमे अगर लडके के बारे मे ऐसी-वैसी बात पता चलती है, तो हमारा भी मन खराब होगा कि नहीं ।"

"सच कहूँ दीदी, मुझे अब इन बातो मे कोई दिलचस्पी नहीं रही । शादी के नाम से ही वितृष्णा होने लगी है । मै तो कहती हूँ कि तुम लोग अम्मा को मनाओ और यह अध्याय ही बंद कर दो । मै भी मुक्त हो, जाऊँगी और अम्मा के आखिरी दिन भी सुख-चैन से कट जाएँगे । तुम तो जानती हो, भाभी के साथ उनकी पटरी नहीं बैठती । एक दिन भी निभाना मुश्किल है । अब बुढ़ापे मे उनकी छीछालेदर न हो, वही अच्छा है ।"

रीमा की बात ने मेरी सोच को एक नई दिशा दी । कहीं अम्मा ही तो यह प्रपच नहीं रच रहीं ? वे जानती है कि रीमा की शादी के बाद उनकी आजादी समाप्त हो जाएगी । उन्हे भैया के पास जाकर रहना होगा ।

पर अम्मा इतनी ऊँची तरकीब नहीं भिड़ा सकतीं । वह तो सिर्फ बकझक कर सकती है । एक नाम जहन में और उभरा—भैया । लड़कों के अते-पते तो वह ही जानते थे और रीमा की शादी न होने का सबसे ज्यादा लाभ उन्हीं को मिलेगा । एक तो खर्च भी बचेगा, दूसरे अम्मा की जिम्मेदारी भी नहीं रहेगी ।

लेकिन यही करना होता, तो वे इतनी उठा-पटक क्यो करते ? हाथ पर हाथ धरे बैठे न रहते ।

दोपहर मे अम्मा को फिर से दौरा पड़ा । अपने दिवगत पुत्रों को रो-रोकर याद कर रही थीं, अरे, वे होते, तो कहती कि दोनों मिलकर इस लड़की को पार लगाओ रे । बडे को तो किसी की चिता नहीं है । बस, बीबी का पल्लू पकड़े-पकड़े घूम रहा है । यह लड़की कुँआरी रह जाएगी, तो मै सुख से मर भी न पाऊँगी ।

रीमा ने मेरे लिए आधे दिन की छुट्टी ले ली थी । उसके घर आते ही यह नाटक शुरू हो गया, "दीदी, बस, इसीलिए मै घर में नहीं रुकती हूँ । मुझे देखते ही जैसे इन्हे अटैक आने लगता है बेकार में भैया-भाभी को कोसती रहती हैं अपने वई बेचारे इतनी

मेहनत कर रहे हैं । अब भाग्य मे नही है, तो वे क्या कर लेगे ?"

"अरे, वाह रे, भैया की लाडली ! दुनिया मे और भी तो लडकियाँ है ? उनकी शादी कैसे होती है ? ये रेणु लोग पाँच बहने हैं । सब की सब ब्याह गईं कि नहीं ? मुझे पट्टी पढाने की कोई जरूरत नही है । करने से सब होता है ।"

मैने कहा, "अम्मा, तुम भैया पर बेकार तोहमत लगा रही हो । वह तो जी-जान से लगे हुए है, पर कोई है, जो लडके वालो के कान भर देता है । हमारी तो किसी से दुश्मनी नहीं है, फिर कौन हो सकता है ?"

जब तक रीमा मुझे रोकती, मै अपनी बात कह चुकी थी । बाद मे मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ, पर अब पछताने से कोई लाभ नहीं था । अम्मा बाकायदा शुरू हो गई थीं, " वो जो कोई भी हो, उसका भला नही होगा । कन्या के विवाह मे जो कोई रोडे अटकाता है, वह महापाप का भागी होता है । उसकी सातो पीढियाँ नरक मे जाएँगी । उसके पुरखों को पानी नहीं मिलेगा । उसके पूरे शरीर पर कोढ़ फूटेगा ?"

"बस करो अम्मा," रीमा चीखी, "ऐसा न हो, तुम्हारे ये श्राप किसी अपने को ही जाकर लगे ।"

"अपने को क्यो लगेगा ? जिसने किया होगा, वही भुगतेगा ।"

"तो उसे भुगतने दो । तुम तो अपना भाषण बद करो । शहर मे ढिंढोरा क्यो पीट रही हो । जितना बदनाम उसने नहीं किया होगा, तुम मुझे कर दोगी ।"

बडी मिन्नतों से, मुश्किलो से अम्मा चुप हुई थीं ।

शाम को हमने उन्हे ठेल-ठालकर चाचाजी के यहाँ भेज दिया ।

"थोडी देर चाची के पास बैठ जाना, उनका मन बहल जाएगा । बेचारी रेणु की वजह से उदास होंगी ।"

मैने शंकित स्वर मे पूछा, "वहाँ जाकर कुछ बकझक तो नही करेगी न ?"

"अरे नहीं, बाहर तो अपनी नाक ऊँची रखती है । किसी को थोड़े ही बताती है कि मेरी शादी नही लग रही । लोग तो यह जानते है कि मुझे कोई लड़का पसद नहीं आ रहा । और तो और चाची के यहाँ तो भाभी का भी गुणगान करती है । बड़ी कूटनीतिज्ञ है । राजनीति मे होतीं, तो पता नहीं कहाँ तक पहुँचती ।"

"राजनीति मे होतीं, तो अच्छा होता । कम से कम सारी जनता मिलकर उन्हे झेलती । अब तो अकेले हम ही को झेलना पडता है ।" मैने कहा ।

"अकेले मुझे झेलना पड़ता है । तुम लोग तो अपनी-अपनी गृहस्थी मे मस्त हो ।"

'वाह क्या मस्ती है,' मैने मन ही मन सोचा, फिर कहा, "हमने अम्मा को बोलने नही दिया, वो बात अलग है, पर उनका गुस्सा जायज है । खून तो मेरा भी खौल रहा

है । मैं अम्मा की तरह गालियाँ नहीं निकाल सकती, पर लगता है कि वह आदमी सामने मिल जाए, तो उसका मुँह नोच लूँ । उसकी आँखे निकाल लूँ ।"

रीमा हँस दी ।

"इसमे हँसने की क्या बात है ?" मैंने गुस्साकर पूछा ।

"तुम्हारा जोश देखकर हँसी आ रही है । इतना उछलो मत दीदी, वह आदमी सामने आ भी जाएगा, तो तुम कुछ नहीं कर पाओगी ।"

"क्यों ?"

वह फिर हँस दी ।

"क्या तुम उसे जानती हो ?" मैंने शकित स्वर में पूछा ।

"हाँ, जानती हूँ ।"

"नाम बताओ ?"

"मैं तो बता दूँगी, पर तुम वह नाम ले नहीं पाओगी ।"

पल-भर को मेरा खून जैसे जम गया । धड़कते दिल से मैंने पूछा, "तुम्हारा मतलब··?"

"हाँ, मेरा मतलब वही है, जो तुम समझ रही हो । तुम्हें बताना नहीं चाहती थी, पर तुम्हारा जोश देखकर रहा नही गया ।"

"लेकिन, लेकिन वे ऐसा क्यो करेंगे ?"

"क्योंकि उन्होंने मुझे धमकी दी थी, चैलेज दिया था कि वे कभी मेरी शादी नहीं होने देंगे । दरवाजे पर आई हुई बारात भी लौटा देगे । इधर कुछ दिनो से मुझे शक हो रहा था, पर जब तुमने कपिल का नाम लिया, तो विश्वास हो गया कि यह उन्हीं का काम है । कपिल के नाम का इतना घिनौना इस्तेमाल वह ही कर सकते है ।"

"प्लीज, मुझे जरा खोलकर बताओ । मेरी समझ मे कुछ भी नहीं आ रहा ।"

"सुन सकोगी ?"

"जब यह धक्का झेल लिया है, तो वो भी झेल लूँगी ।"

"वह धक्का इतना आसान नहीं है । खैर, मै एक बार छुट्टियो मे तुम्हारे यहाँ आई थी· याद है ?"

"एक ही बार तो आई थी, याद क्यो नहीं होगा ?"

"मै तो एक बार मे ही तर गई । दूसरी बार आने की हिम्मत ही नहीं रही ।"

"कुछ बताओगी भी ?"

"हाँ, तो सुनो, तुम्हे याद है, हम लोग छत पर सोते थे । बच्चो के गिरने के डर से तुम जमीन पर गद्दा बिछाकर सोती थीं । अगल-बगल मेरी और जीजाजी की खटिया

लगती थी । एक इस पार, एक उस पार ?"

"फिर ?"

"उस दिन शायद सोनू को बुखार था । पता नही कब, आधी रात को तुम उसे लेकर नीचे चली गई । मै गहरी नींद मे थी । तभी लगा, मेरे बिस्तर पर कोई है । पहले तो सोचा, मोनू होगा, पर उसका शरीर तो इतना भारी नहीं हो सकता । करवट बदलकर देखा, तो मेरी घिग्घी बँध गई । लगा, जैसे एक दैत्य मेरी छाती पर चढ़ा आ रहा है । मैने चीखना चाहा, पर गले से आवाज नहीं निकली, फिर मैने पूरी शक्ति लगाकर उन्हे इतनी जोर से धक्का दिया कि वह फुटबॉल की तरह उछलकर नीचे जा गिरे । पता नहीं, मुझमे उस समय इतनी ताकत कहाँ से आ गई थी । अगर उस दिन नीचे तुम्हारा गद्दा न बिछा होता, तो उनकी दो-चार पसलियाँ जरूर टूट जातीं ।"

मै दोनों हाथो से कलेजा थामकर उसकी कहानी सुन रही थी । वह रात मेरी आँखो के सामने साकार हो रही थी और मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे ।

"क्षण-भर को वह भी हतप्रभ रह गए थे । दूसरे ही क्षण वह फुफकार उठे । उनकी आँखो से आग बरस रही थी । दाँत पीसते हुए बोले, कपिल के साथ तो खूब मजे किए थे । अब हमें नखरे दिखाए जा रहे हैं ?

"तब तक मै भी सँभल गई थी और खटिया से उतरकर खडी हो गई थी, पर मुझे भागने की राह नहीं मिल रही थी, क्योंकि वह रास्ते में खडे हुए थे । उनकी मुद्रा एकदम आक्रामक हो गई थी । डर के मारे मेरा खून सूख गया था, फिर भी मैने हिम्मत बटोरकर कहा, 'जीजाजी, आप एक कदम भी आगे बढ़े, तो मै छत से कूद जाऊँगी ।'

"मेरी धमकी काम कर गई । पल-भर को वह सोच मे पड़ गए । मैने उनकी असावधानी का फायदा उठाया और सीढ़ियाँ फलाँगती हुई नीचे पहुँच गई । सुबह जब वह नीचे उतरे, तब भी अपमान का दंश भूले नहीं थे । मुझसे बोले, 'बडी सती-सावित्री बनती हो । देखना, मै तुम्हे बदनाम कर दूँगा । तुम्हारी शादी नहीं होने दूँगा ।' और अपना वह कौल वह आज तक निभा रहे है ।"

वाह रे कौल, मेरा तो सिर शर्म से झुक गया । लगा कि अब इस लड़की के सामने मै कभी आँख नहीं उठा पाऊँगी । पति नाम के उस प्राणी के प्रति मन मे श्रद्धा कभी नहीं उपजी थी । अब उस अश्रद्धा में तिरस्कार भी घुल गया था । मै तो हैरान थी कि इतनी बड़ी बात रीमा इतने दिन मन मे कैसे छिपाए रही । मै होती तो मेरी छाती ही फट जाती । मैने यही बात उससे कही, तो बोली, "किस से कहती, बताओ तो ! अम्मा से कहना अपनी ही फजीहत करवाना था ।"

"भैया तो खुद अपनी परेशानियो में उलझे हुए थे । तुमसे कहने का सवाल ही नहीं

था। मै तो आज भी न कहती, पर जब देखा कि यह आदमी खुद ओट में रहकर एक शरीफ आदमी के नाम पर कीचड़ उछाल रहा है, तो मुझे ताव आ गया लेकिन मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था न दीदी ? व्यर्थ ही तुम्हारे जीवन में जहर घोल दिया।"

"तुम क्या सोचती हो, मेरे यहाँ अमृत बरसता है ? मै तो रोज जहर के घूँट पीती हूँ। एक बूँद और सही, पर मेरी समझ में यह नहीं आता कि उन्हे कपिल से इतनी चिढ क्यो है ? बार-बार क्यो उसका नाम लेते है ?"

"शायद इसीलिए कि कपिल से मै हँस-बोल लेती थी, जबकि उनसे हमेशा कतराकर चलती थी, पर सच कहूँ दीदी, कपिल से कभी डर नहीं लगा। उसने कभी मेरे विश्वास की हत्या नहीं की। पहले तो कभी एकाध दिन के लिए आया होगा, पर भाभी के अतिम दिनों मे वह पूरे दस दिन हमारे साथ रहा। वह मुझे पढाता था, मेरे साथ छोटे-मोटे काम करवा लेता था, स्कूटर पर लाता, ले जाता था, पर उसने कभी कोई गलत हरकत नहीं की। और जीजाजी की उपस्थिति मे मै हमेशा सहमी-सहमी-सी रही।

"लगता था, जैसे यह शख्स मौके की तलाश मे है। दाँव लगते ही दबोच लेगा। तुम्हारी शादी के वक्त तो मैं इतनी बडी भी नहीं थी, फिर भी मुझे उनकी आँखो से डर लगता था। लगता, जैसे मुझे खा ही जाएँगे। भैया ने भी इन चीजो को मार्क किया था। कविता भाभी को तो उनके सामने पड़ने ही नहीं देते थे। मुझे भी अम्मा चाय या साबुन आदि लेकर उनके पास भेजतीं, तो झल्ला जाते, 'लडकी को चैन से पढने क्यों नहीं देतीं। मुझसे कहो न, क्या काम है ?' एकाध बार उन्होंने मुझसे भी कहा, 'रिम्मी, इस शख्स से जरा दूर ही रहा करो। अम्मा को तो कुछ अक्ल है नहीं, इसीलिए तुमसे कह रहा हूँ।'

'वो जो एक मुहावरा है न, धरती फट जाए और मै उसमे समा जाऊँ। शायद ऐसे ही मौकों के लिए बना होगा। मुझे लगा कि इतनी शर्म और इतनी ग्लानि लेकर मै कहाँ मुँह छिपाऊँगी। पति के लिए ऐसे फिकरे सुनने से तो अच्छा ही था।'

"दीदी प्लीज।" रीमा मुझे झकझोर रही थी। क्षण-भर को शायद मै एकदम पत्थर बन गई थी, क्योकि वह बार-बार पूछ रही थी, "दीदी, तुम ठीक तो हो न ? प्लीज, इधर मेरी तरफ देखो। तुम्हारी तबीयत ठीक तो है न ?"

"मुझे कुछ नहीं हुआ है री, मेरी चिंता मत कर।" मैने सूखी हँसी हँसकर कहा।

"होना भी नहीं चाहिए, नहीं तो मै अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊँगी। मैने अपने दिल का बोझ तो हलका कर लिया, पर तुम्हारे दिल पर एक बोझ लाद दिया। अब सब कुछ भूल जाओ। इसी में सबकी भलाई है।"

"काश मै उस आदमी का फन कुचल सकती जो तुम्हारे सुख पर कुडली मारकर

बैठा है । काश, मै उसका विषदंत तोड़ सकती !"

"मैने कहा न दीदी, अब सब कुछ भूल जाओ । समझ लो कि जो कुछ तुमने सुना, वह एक कहानी थी । उसी को दिल से लगाकर बैठ जाओगी, तो जीना मुश्किल हो जाएगा ।"

"मै सब कुछ भूल सकती हूँ रिम्मी, पर यह कैसे भूल जाऊँ कि वे मेरे बच्चो के पिता है ।"

"इस बात को भूलने की कोशिश नही, याद रखने की जरूरत है, ताकि तुम्हारा घर सलामत रहे । बच्चो के सिर पर माँ-बाप दोनो का साया बना रहे । सो फॉरगेट एंड फॉरगिव्ह । फॉरगिव्ह एंड फॉरगेट ।"

"तुमने मेरी बात को ठीक से समझा नहीं है रीमा, मै सब कुछ भूल भी जाऊँ, तो भी इस सत्य को तो बदल नहीं सकती कि वे मेरे बच्चो के पिता हैं । उनकी धमनियो में भी वही खून है । उस खून में पिता के सस्कार भी तो उतरे होंगे । पता नहीं, कल को बडे होकर ये लोग क्या-क्या गुल खिलाएँगे ? किस-किस को डसेंगे ? कितनों का जीवन बर्बाद करेंगे ? तुलसीदास जी ने कहा भी तो है—

नहि विष बेलि, अमीय फल फरीहँ ।

पहले पता होता तो विषबेल को फलने ही नहीं देती । भले ही लोग मुझे बाँझ कहते ।"

"बस करो दीदी, क्या पागलों की तरह बके जा रही हो । माँ होकर बच्चो को कोस रही हो ! फिर अम्मा में और तुममें फर्क ही क्या है ? और तुम्हारे बच्चों की शिराओ मे सिर्फ पिता का रक्त है ? तुम्हारा कोई अंश नहीं है ? तुमने उन्हे दूध नहीं पिलाया ? फिर तुम्हारे सस्कार कहाँ जाएँगे ? यह भी तो हो सकता है कि तुम्हारे बच्चे कल किसी के लिए अमृत-घट साबित हो ?"

"ईश्वर करे ऐसा ही हो ।" मैने कहा और निढाल होकर सोफे पर लुढ़क गई ।

औरत तो रात ही होती है, जो सुबह की प्रतीक्षा मे अँधेरे को पीती रहती है ।

पीर पर्वत हो गई है

रजत सुबह-सवेरे ही उठ बैठा था और मम्मी को झिझोड रहा था, "मम्मी, उठो न प्लीज, छह बज रहे है ।"

"क्यों सुबह-सुबह उसे तग कर रहा है," नानी ने झिडकी दी, "थोडा-सा और सो लेने दे । हफ्ते मे एक ही दिन तो मिलता है । रोज तो तड़के उठना ही पडता है ।"

"पर आज पापा आएँगे न, आठ बजे तक तो मुझे तैयार हो जाना है, मम्मी, प्लीज ।"

पर अब मम्मी को ज्यादा मनाना नहीं पडा । पापा का नाम सुनते ही निर्मल तड से उठ बैठी । अलसाई आँखो से उसने कैलेडर की ओर देखा, आज महीने का दूसरा रविवार है । कोर्ट के आदेश के मुताबिक यही एक दिन होता है, जब रजत के पापा उसे आठ घटे के लिए ले जा सकते है । मम्मी चाहे यह दिन भूल जाएँ, पर रजत कभी नहीं भूलता । इतना-सा है, पर महीने के शुरू मे ही उस तारीख पर गोल घेरा बना देता है और पहली तारीख से ही दिन गिनना शुरू कर देता है ।

इतवार की सुबह । सारा घर मस्ती मे सो रहा था, पर ये माँ-बेटे दोनो बड़ी मुस्तैदी से तैयारी में जुट गए थे । रोज तो रजत को ब्रश करने के लिए मनाना पडता था । नहाने के लिए सौ नखरे करता था, पर आज ब्रश करने बाथरूम में गया, तो ठडे पानी से ही नहाकर चला आया । उसे हलकी-सी डॉट पिलाकर निर्मल ने गैस पर रखा गर्म पानी सिक मे उड़ेल दिया । भाभी को पता चल गया, तो सुबह से ही शुरू हो जाएँगी । बेटे के आगे दो सैडविचेस और बोर्नवीटा का गिलास रखते हुए उसने धीरे से कहा, "चुपचाप पीकर कमरे मे आ जाना, तब तक मै कपडे प्रेस कर रही हूँ । आवाज बिलकुल नहीं करना, समझे ?"

बच्चे को समझाकर वह खुद भी दबे पॉव कमरे मे चली आई । रजत के लिए उसने वही ड्रेस निकाली, जो प्रदीप पिछली बार लाए थे । रजत ने देखा, तो खुश हो गया । उसे तैयार करते हुए वह हमेशा की तरह ढेर-सी हिदायते देती रही । वह हॉ-हूँ करता हुआ सुनता रहा । उसका सारा ध्यान घड़ी पर केंद्रित था । एकाएक वह पूछ बैठा, "मम्मी, मग्दूर का मतलब क्या होता है ?"

"मरदूद ? इसका मतलब जानकर तुम क्या करोगे ?"

"पिछली बार पापा आए थे न, तो छोटे मामा कह रहे थे, खबरदार, उस मरदूद को कोई चाय नही पिलाएगा ।"

निर्मल ने तड़पकर अम्मा की ओर देखा । वह खिसियाकर बोलीं, "अरी, उस दिन वह छोटा जरा सनक गया था । मैने कहा भी कि आखिर तो वह इस घर का दामाद है । हमने उसके पैर पूजे है, क्या एक कप चाय पिलाना गुनाह हो गया ? तो बोला, उधर कोर्ट मे केस लडा जा रहा है, यहाँ घर मे खातिरदारी हो रही है । ये दोनो बाते एक साथ नहीं चलेगी ।"

रजत के जूतो पर पॉलिश करते उसके हाथ रुक गए । आखिर ये लोग समझते क्यो नहीं है । यह सारा तमाशा बच्चे के सामने क्यो करते है ? उसके नन्हे-से मन मे ये बातें जमकर बैठ जाती है, तो आसानी से निकलती नही है । इस मरदूद वाली बात को ही ले लो । महीने-भर तक उस पर सोचता रहा होगा । आज आखिर पूछ ही लिया । एक दिन और पूछ रहा था, 'मम्मी, मै क्या बला हूँ ? छोटी मामी कल कह रही थीं, पता नहीं इस बला से कब छुटकारा मिलेगा ?'

कितनी बार उसका मन होता है कि उन लोगों से कहे कि जो कुछ जली-कटी सुनानी हो, मुझे सुना लो, पर बच्चे को तो बख्श दो । उसका बचपन क्यो तबाह कर रहे हैं ?

आठ बजे रजत एकदम तैयार था । उसे लेकर कमरे से बाहर निकली, तो छोटी भाभी से टकरा गई ।

"हाय हैंडसम ! सुबह-सुबह बन-ठनकर कहाँ चल दिए ?"

"अरे, आज उनके पिताश्री का दिन है न ।" बड़ी भाभी ने याद दिलाया ।

"अरे वाह ! फिर तो मजे है भई । खूब खातिर होगी । बेचारे प्रदीप जी, महीने-भर की कसर एक ही दिन मे निकाल लेते है ।"

"अरे महीने मे एक दिन सौ-पचास फेंक भी दिए, तो कौन-सा गजब हो गया ? तीसो दिन झेलना पडे, तो पता चले ।" बड़ी भाभी बोलीं ।

निर्मल का मन हुआ कि दोनो को करारा-सा जवाब दे, पर वह बच्चे के सामने कोई तमाशा नहीं करना चाहती थी । होंठो तक आई हुई भारी कड़वाहट को पीकर बच्चे को लगभग घसीटते हुए बालकनी में ले गई । दोनों भाभियों पर इतना गुस्सा आ रहा था, यूँ तो दोनो में छत्तीस का ऑकड़ा रहता है, पर निर्मल का जी जलाना हो, तो दोनो एक हो जाती है । उनका वश चले, तो निर्मल को यहाँ एक दिन भी न रहने दे, पर घर माँ के नाम है और माँ अभी जीवित है, इसलिए कोई वश नहीं चलता ।

मन जरा सुस्थिर हुआ, तो उसने रजत के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा,

"देखो बेटे, जैसे ही पापा का स्कूटर नजर आए, तुम दौड़कर नीचे चले जाना । बेकार मे बेचारे इतनी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आएँगे । यहाँ घड़ी-भर बैठना होता, तो भी एक बात थी, पर अभी तो मामा लोग सो रहे है । उनसे कौन बात करेगा ?' 'और देखो, यहाँ की कोई बात उन्हें नही बताना, समझे ?"

वह हर बार यही समझाती है, पर उसे मालूम है कि वह हर बात वहाँ उगल देता होगा और सुनकर उन लोगों को खूब मजा आता होगा ।

"पापा आ गए ।" उन्हें दूर से देखते ही रजत किलक उठा और फौरन जीने की ओर दौड पडा । उनके स्कूटर से उतरते-उतरते ही वह उनके पास पहुँच चुका था । उन्होंने एक बार ऊपर देखा, पर इससे पहले ही वह मनीप्लाट की ओट मे हो गई थी । एक क्षण प्रतीक्षा करने के बाद उन्होने स्कूटर स्टार्ट किया और दूसरे ही पल बाप-बेटे आँखो से ओझल हो गए ।

भीतर आते हुए लगा, जैसे अपना सब कुछ बाहर बालकनी मे ही छोड आई है । जब भी रजत पिता के साथ जाता है, उसे लगता है, जैसे वह रीत गई है । उसके पास अपना कुछ शेष नहीं रहा है ।

एक बार छोटी भाभी ने उसके इस अहसास को शब्द दे दिए थे, 'दीदी इतने विश्वास के साथ बेटे को भेज तो देती है, पर अगर उन लोगो ने इसे रख ही लिया तो ?'

'अरे, ऐसे हमारे भाग्य कहाँ ? अभी पूरे पाँच बरस प्रतीक्षा करनी होगी ।' बडी भाभी बोलीं, 'जब बारह का हो जाएगा, तो कोर्ट खुद उससे पूछेगा कि वह किसके पास रहना चाहेगा ।'

'आप देख लेना, वह बाप के पास ही जाना चाहेगा । देखा नहीं, कितनी ललक के साथ बाट जोहता रहता है ।'

निर्मल को भी तो यही डर है । इसीलिए जब-जब वह अपने पापा के साथ जाता है, उसका मन कड़वाहट से भर जाता है । स्थितियों के सामने वह अपने को एकदम असहाय पाती है । उसका मन सारी दुनिया से लड़ने पर आमादा हो जाता है ।

भीतर आई तो टेबल पर चाय लग चुकी थी ।

"साहब बहादुर ऊपर नहीं आए ?" छोटे ने विद्रूप के साथ प्रश्न किया ।

"नहीं आए । मैंने ही मना कर दिया । सोचा, एक कप चाय क्यो फालतू खर्च की जाए । उतनी बचत ही सही ।"

"अरे वाह ! तुम्हें इस घर के खर्च और बचत की चिंता कब से होने लगी ?"

"चिंता तो हमेशा से थी भैया. पर अभी मजबूर हूँ । मेरा समय आने दो. पाई-पाई

चुका दूँगी ।" और वह बिना चाय पिए कमरे से चली गई ।

"क्या हुआ बेटे ?" अम्मा ने पूछा ।

"कुछ नहीं ।" उसने सुबकते हुए कहा और बिस्तर पर पड़ गई । अम्मा धीरे धीरे बालो मे हाथ फेरती रहीं ।

तभी छोटी भाभी दो कप चाय लेकर कमरे मे आई, "मैने तो कहा ही था कि भीतर अम्मा से लगी बैठी होगी । खूब लगाई-बुझाई चल रही होगी ।"

"उसने कुछ नही कहा बहू, बल्कि मै तो कब से पूछ रही हूँ कि क्या हुआ ? पर जवाब ही नहीं दे रही । बस, रोए जा रही है ।"

"आप ही बताइए, भरे-पूरे घर मे इस तरह रोने का मतलब क्या है ? क्यो हमारा असगुन कर रही है ?"

बाहर बड़े भैया छोटे को डॉट रहे थे । बडी भाभी आग मे घी दे रही थी । अब छोटी भी पहुँच जाएगी, तो अच्छा-खासा महाभारत शुरू हो जाएगा । सबकी छुट्टी बरबाद हो जाएगी । दिन-भर घर मे एक तनाव रहेगा । सबके मुँह सूजे हुए रहेगे । शाम को रजत हुलसता हुआ घर मे घुसेगा और माहौल देखकर एकदम बुझ जाएगा । उसके पास घर के बच्चो के लिए भी ढेरो उपहार और टॉफियाँ होगी, पर उन्हे कोई छुएगा भी नहीं । वे सारी चीजें अपमानित-सी हॉल में पड़ी रहेगी । हारे-थके मन से सुबह रजत उन्हे बटोर लेगा और दोस्तो में बॉट देगा । अपने पिता का यह अपमान वह बर्दाश्त नहीं कर पाता और उसके ऑसू निकल आते है । इतनी-सी उम्र मे बेचारे को पता नही क्या-क्या झेलना पड रहा है ।

"बेटे," अम्मा ने कहा, "जब अपना समय खराब चल रहा हो, तो थोड़ा सयम से काम लेना चाहिए ।"

वह एकदम भड़क गई, "मैने कुछ नहीं किया है अम्मा, वह तुम्हारा लाडला ही सनक रहा था । मुझे तो यकीन नहीं होता कि यह वही भाई है, जो मेरे लिए मरने-मारने पर आमादा हो जाता था । यही भाभियाँ कभी मुझे पान-फूल की तरह सहेजती थीं । आज उन्हीं की ऑखो में कॉटे की तरह खटक रही हूँ ।"

"देख निर्मल, मेरी बात का बुरा मत मानना, पर बहन-बेटी चार दिन के लिए घर आई अच्छी लगती है । हमेशा के लिए आए तो'' ।"

"बोझ बन जाती है, यही न ? पर अम्मा, अपने लाडलों को समझा दो कि मै हमेशा यहाँ रहने वाली नहीं हूँ । बस, मुझे जरा ढंग की नौकरी मिल जाने दो, मै उसी दिन से घर छोड़ दूँगी ।"

"मेरी भी यही इच्छा है बेटी कि मेरे रहते तेरा कोई ठिकाना हो जाए । या तू

राजी-खुशी अपने घर लौट जाए ।"

"अम्मा, प्लीज !" निर्मल ने कातर स्वर मे कहा, तो अम्मा चुप हो गई । उन्हे मालूम है कि बेटी के वापस घर जाने का अब कोई सवाल ही पैदा नहीं होता । वह अध्याय एक तरह से बद हो चुका है । यह बात नहीं है कि वहाँ उसे कोई तकलीफ थी । न कोई मारपीट न गाली-गलौच । न शादी से पहले उन लोगों ने पैसों की माँग की, न बाद मे । न उनका दामाद शराबी था, न जुआरी ।

वहाँ तो किस्सा ही कुछ और था । निर्मल का पति अपनी विधवा भौजाई के प्रेम मे पागल था । शुरू-शुरू में जब उसे पता चला, तो एक धक्का-सा लगा, पर वह शर्म के मारे किसी से कुछ कह न सकी । चार-छह महीने बाद निर्मल ने धीरे से अपनी बडी भाभी को यह बात बताई । वह बोली, 'कोई बात नहीं, दो जवान लोग एक घर में रहते है, तो ऐसा अकसर हो जाता है, पर अब तुम आ गई हो, सब ठीक हो जाएगा ।'

पर कहाँ, कुछ भी तो ठीक नहीं हुआ । तीन महीने के रजत को लेकर घर पहुँची, तो पता चला, संबध और भी गहरे हो चुके हैं । अब तो पहले वाला सकोच भी नहीं रहा था । हारकर उसने अम्मा से शिकायत की । अम्मा दनदनाती समधिन के पास पहुँच गईं, लेकिन समधिन उलटे उन पर चढ बैठी । बोली, "यह तो सब हमें मालूम है । आप कौन-सी नई बात बता रही हैं ? पर हमें यह बताइए कि फिर आपकी बिटिया किस मर्ज की दवा है । हम तो बड़ी आशा से ब्याहकर लाए थे ।"

उनकी स्पष्टोक्ति से अम्मा हैरान रह गईं, फिर भी हिम्मत करके बोलीं, "अव्वल तो गलती बहन जी आप ही की है । ऐसी जवान बहू को घर मे रखना ही गलत था । उसे पीहर भेज देतीं ।"

"अरे, हम तो लाख भेज दें, पर वह जाती तब न । न वह जाती थी, न वह भेजता था । दोनो की शुरू से ही मिली-भगत चली आ रही थी ।"

पति की असाध्य बीमारी के दौरान देवर से रासलीला रचाने वाली जिठानी के प्रति निर्मल का मन वितृष्णा से भर गया, पर उससे ज्यादा क्षोभ उसे सास पर आया, जिन्होंने जानते-बूझते एक निरीह कन्या की बलि दे दी थी । अम्मा ने तो कह डाला, "बहन जी, आपने मेरी बेटी की जिदगी नाहक बरबाद कर दी । उन्हीं दोनों के फेरे पड़वा देतीं ।"

इसके जवाब में तुनककर बोलीं, "छोटी जाति मे ऐसा होता होगा, हमारे यहाँ नहीं होता ।"

अरे, वाह री ऊँची जाति और वाह रे ऊँचे लोग ! इसके बाद निर्मल ने सीधे पति से ही बात की । कहा, "अब तक जो हुआ सो हुआ । मै उस पर परदा डालने के लिए तैयार हू, पर अब घर में मैं हूँ बच्चा है आगे से यह सब बद होना चाहिए "

वह बदा भी माँ की तरह दबग निकला। बोला, "यह सब तो ऐसे ही चलेगा। तुम्हे रहना हो, रहो, नहीं तो रास्ता नापो।"

इस अपमान के बाद वहाँ रहने का प्रश्न ही नहीं था। वह बडी ठसक के साथ मायके लौट आई। भाइयो ने भी हाथो-हाथ लिया। फौरन गुजारे-भत्ते के लिए कोर्ट मे अर्जी लगा दी गई। जेवर, कपड़े और दहेज का सामान वापस मँगवा लिया गया। चार-छह महीने आराम से कट गए, फिर धीरे-धीरे सबके चेहरो से नकाब उतरने लगे। ऊब, खीज, उपेक्षा साफ झलकने लगी। जिस ठसक के साथ लौटी थी, वह कब की समाप्त हो गई। अब बस, एक लाचारी थी, विवशता थी।

अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी, पर अभी तो वह सपना ही था। गुजारे-भत्ते के पाँच सौ रुपए स्वीकृत हुए थे, पर उन रुपयो मे उसकी और रजत की पढाई का खर्च भी पूरा नही होता था। उसने बी०एड० के लिए एक प्राइवेट कॉलेज मे दाखिला ले लिया था। सुबह एक स्कूल मे पढ़ाती थी। उस नौकरी की उपयोगिता इतनी ही थी कि वहाँ से उसे अध्यापन का सर्टिफिकेट प्राप्त हो जाएगा। बी०एड० के लिए यह जरूरी था।

बाकी खर्चों के लिए भाइयो का मुँह जोहना ही पड़ता था और यही बात सबसे ज्यादा दु ख देती थी। सबसे जानलेवा खर्च था कोर्ट का, वकीलों का। गुजारे-भत्ते की स्वीकृति के साथ एक तरह से केस खत्म हो ही गया था, पर अब वे लोग तलाक माँग रहे है और निर्मल किसी कीमत पर तलाक देना नहीं चाहती। उसे मालूम है कि तलाक के दूसरे ही दिन वे शादी रचा लेंगे। इस देश मे लडकियो की कमी तो है नहीं। वह नही चाहती कि एक और जिदगी बरबाद हो।

पहले तो भाई भी उसके साथ थे। कहते थे, 'बच्चू को जिदगी-भर तडपाएँगे। कोर्ट की सीढ़ियाँ चढते-चढते एड़ियाँ घिस जाऍगी तब मजा आएगा।' पर अब उन लोगो का भी उत्साह खत्म हो गया है। कहते हैं, 'जब तुम्हे साथ रहना ही नहीं है, तो तलाक दो और छुट्टी करो, फिर वह शादी करे या भाड़ मे जाए, तुम्हें क्या मतलब है ?'

अपनी बात वह भाइयों को ठीक से समझा नहीं पाती। अब आपस मे उतना सुसवाद ही नहीं रह गया है। सबसे ज्यादा दु ख तो अम्मा के लिए होता है। उसकी वजह से उनका बुढ़ापा खराब हो रहा है। सोचा होगा कि सारी जिम्मेदारियो से फारिग हो गई है। अब आराम से बैठकर राम नाम रटेगी, पर भाग्य मे तो कुछ और ही बदा था। अब बेटी की चिंता मे मरी जा रही है। बेटे अलग नाराज है कि बेटी को शह दे रही है। बहुएँ कोसती है कि हरदम नवासे का पक्ष लेती है और घर के बच्चो को डॉट पड़वाती है।

हाँ, रजत घर का बच्चा नहीं है। किसी जमाने में वह इस घर का खिलौना था।

सबकी आँखो का तारा था, पर अब समय बदल गया है । अब तो वह एकदम अलग-थलग पड गया है । निर्मल को अब डर लगने लगा है कि इस स्नेहहीन क्लेश, कलह वाले वातावरण में उसका स्वस्थ मानसिक विकास कैसे होगा ? या तो वह बेशर्म और उद्दड हो जाएगा या फिर एकदम घुन्ना और कुठित बन जाएगा और बच्चो की तरह सहज, सरल तो वह रहेगा ही नहीं ।

अपने स्वाभिमान की उसे क्या इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी ?

शाम को छह बजे वह सोसाइटी के गेट के बाहर ही जाकर खड़ी हो गई थी । ठीक समय पर स्कूटर की परिचित आवाज सुनाई दी । उसे देखकर वे लोग भी बाहर ही रुक गए । इस तरह के स्वागत की तो उन्हे आशा ही नहीं थी ।

रजत हमेशा की तरह चीजो से लदा-फँदा था । उसे नीचे उतारते हुए निर्मल ने कहा, "जाओ, यह सब घर मे रख आओ और कुछ देर वहीं रहना । नानी माँ अकेली हैं ।"

बच्चा पिता को इतनी जल्दी छोड़ना नहीं चाहता था, पर माँ की अवज्ञा का साहस भी वह न कर सका, बेमन से, बराबर पीछे मुड़कर देखता हुआ वह चल पड़ा ।

जब गेट के भीतर दाखिल हो गया, तो निर्मल ने कहा, "कुछ बात करनी थी । कहीं चलकर बैठे ?"

प्रदीप के लिए यह आश्चर्य का दूसरा धक्का था । शायद आठ-दस महीने बाद उसने निर्मल का स्वर सुना था, पर वह इतना रूखा था कि आशा की कोई गुजाइश नहीं थी ।

वह चुपचाप पीछे बैठ गई, तो प्रदीप ने बिना कुछ बोले स्कूटर स्टार्ट कर दिया । बिना कुछ पूछे तीन-चार किलोमीटर चलकर एक रेस्तराँ के सामने रोक दिया । चुपचाप दोनो जाकर एक कोने वाली मेज पर बैठ गए और कोल्ड ड्रिक्स का ऑर्डर दे दिया ।

इत्मीनान से बैठ जाने के बाद प्रदीप ने शुरू किया, "बोलो, क्या कह रही थीं ?"

"मैने सुना है कि आपने फिर से लडकियाँ देखना शुरू कर दिया है ।"

"लडकियाँ देखने से क्या होता है ? जब तक तुम्हारी मर्जी नहीं होगी, शादी तो कर नहीं पाऊँगा ।"

"मतलब कि अगर मै तलाक दे दूँ, तो आप एक और जिदगी बरबाद कर देंगे ।"

"इससे तुम्हे क्या फर्क पड़ता है ?"

"पड़ता है । जो मैने सहा है, वह कोई और भी सहे, यह मै नहीं चाहती ।"

"तो क्या चाहती हो ?"

निर्मल कुछ क्षण चुप रही. फिर गंभीर स्वर में बोली, "जिनके कारण यह सब बखेडा हुआ है आप उन्हीं से शादी क्यों नहीं कर लेते ?"

"मा के जीते जी यह संभव नहीं है

"मा जी सब जानती है ।"

"सिर्फ जानने से क्या होता है ? जानने को तो बहुत लोग जानते है, पर मानना भी तो चाहिए ।"

"तो आप मनाइए न । मुझे तो माँ जी पर आश्चर्य हो रहा है । सब कुछ जानते-बूझते वह चुपचाप क्यों बैठी है ? औरत होकर एक औरत को ऐसी घिनौनी जिंदगी जीने पर मजबूर क्यों कर रही है ?"

"माँ की बात रहने दो । तुम अपनी कहो, तुम क्या चाहती हो ?"

"यही कि आप भाभी का हाथ थामकर उन्हें एक इज्जत की जिंदगी दे । समझ लीजिए कि तलाक के लिए मेरी यही शर्त है ।"

"लेकिन बिना तलाक के मै किसी से भी शादी कैसे कर सकता हूं ?"

"घोषणा तो कर सकते है । जिस दिन आप इतनी हिम्मत जुटा लेंगे, मै आपको तुरत तलाक दे दूँगी । तलाक भी और बच्चा भी ।"

"बच्चा भी ?"

"हॉ, वह इस समय उम्र के बड़े नाजुक दौर से गुजर रहा है । उसे इस समय एक सुरक्षित छत की जरूरत है । सुरक्षित छत, अच्छी परवरिश और माँ-बाप का प्यार । मुझे विश्वास है, आप लोग उसे यह सब दे सकेंगे ।"

"और तुम ?"

"मेरी चिंता करने की जरूरत नहीं है । मेरा बी०एड० पूरा हुआ जाता है । अगले सत्र में मुझे कहीं न कहीं नौकरी मिल ही जाएगी । रजत की पढाई की समस्या नहीं रहेगी, तो मै बज्र देहात मे भी रह लूँगी । तो यह मेरा प्रस्ताव है । ठंडे दिमाग से इस पर सोचकर मुझे जवाब दीजिएगा ।"

अपनी बात समाप्त कर वह उठ खड़ी हुई और बिना किसी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किए रेस्तराँ से बाहर निकल गई ।

कोका कोला की बोतल हाथ में थामे प्रदीप उसे देखता रह गया ।

जागी आँखों का सपना

"मम्मी, आज स्कूल मे नेहा मिली थी ।"

"कौन नेहा ?"

"अरे, अपने योगेश अकल की नेहा । इतनी जल्दी भूल गई ?"

"ओहो, पर अब तो वह तुम्हारे स्कूल मे नही है न ?"

"नहीं, पर आज मै उसके स्कूल मे गई थी । डिबेट कपटीशन थी । बताया तो था ।"

"हॉ, और उसमे तुम्हारा नवर नहीं आया ।"

"मम्मी, मै तुम्हे यह भी बता चुकी हूँ ।"

"सॉरी, हॉ, तो नेहा के बारे मे क्या कह रही थीं ?"

"यही कि वह आज स्कूल मे मिली थी । बहुत उदास थी ।"

"क्यो ?"

"योगेश अंकल शादी कर रहे हैं ।"

बुनते-बुनते एकाएक अनु की उँगली फिसल गई और दाएँ हाथ की सलाई बाई हथेली मे घुस गई । अपने रूमाल को उस जगह पर दबाकर कितनी देर तक अनु जड़वत बैठी रही ।

"अकल शादी कर रहे है, तो इसमे रोने की क्या बात है ?" नकुल ने भोला-सा सवाल पूछा ।

"स्टुपिड, अकल की शादी का मतलब समझता है ? घर मे नई मॉ आएगी । नई मॉ, यानी कि स्टेप मदर, समझा ?" निधि ने बुद्धू भाई के सिर पर चपत लगाते हुए कहा ।

"ओह," नकुल की समझ में जैसे सब कुछ आ गया, "तो फिर अंकल शादी क्यो कर रहे है ?"

"करनी पडती है बेटा," बच्चो की नानी ने कहा, "घर मे बेटी है । उसे देखने वाला तो कोई चाहिए कि नहीं ।"

"उसकी दादी है तो ?"

"दादी क्या सब दिन बैठी रहेगी ? फिर वह अकेले कैसे पार पाएगा ?"

"क्यो, हमारी मम्मी भी तो हमे पाल रही है ? सब कुछ अकेले सँभाल रही है।" निधि ने कहा, "जब मम्मी औरत होकर इतना सब कुछ कर सकती है, तो अकल को क्या परेशानी है ? वे तो पुरुष है।"

"यही तो फर्क है बेटा," नानी ने नितांत दार्शनिक अंदाज में कहा, "मर्द और औरत मे यही तो अंतर होता है। बाप मर जाता है, तो माँ, बाप और माँ दोनो की जिम्मेदारी उठा लेती है, पर माँ मर जाती है, तो बाप भी बाप नहीं रहता। पराया हो जाता है।"

"बस भी करो अम्मा, तुम भी पता नहीं, कहाँ का राग अलापने लगती हो।" अनु एकदम फट पडी, फिर उसी सुर मे बच्चो को डाँटते हुए बोली, "जाओ तुम लोग, होमवर्क नहीं हो, तो जाकर सो जाओ। सुबह तुम्हें जगाते-जगाते मेरा आधा घटा खर्च हो जाता है।"

बच्चे चुपचाप उठकर अपने कमरे मे दुबक गए। अनु शून्य की ओर ताकती चुपचाप बैठी रही, पर अम्मा ने उसे चुप नहीं बैठने दिया। बोली, "तो योगेश शादी कर रहा है। बच्चू से दो साल भी सब्र नहीं हुआ ?"

"इतने दिन रुक गए, यही बहुत समझो अम्मा। उनकी माँ तो दो महीने भी रुकने के लिए तैयार नहीं थीं। वह तो कब से जमीन-आसमान एक किए थीं। वह तो योगेश ही राजी नहीं हो रहे थे।"

"अच्छा, तुम लोगों के तो इतने अच्छे पारिवारिक सबध थे। बिलकुल सगे भाई से भी बढ़कर थे दोनो। अब क्या बात हो गई कि कोई झाँकता भी नहीं।"

"दरअसल वे लोग अब दूर रहने चले गए है। यह घर उन्हे काटने को दौडता था।"

"वह तो ठीक बात है। उस घर में वाकई दिल नहीं लगता होगा। मगर फिर भी, घर बदलने से क्या सबध बदल जाते है ?"

"जब उन संबधों की नींव ही दरक गई अम्मा, तो संबध कैसे बने रह सकते है ?"

"ऐसा भी कहीं होता है। बल्कि ऐसे मे तो अपनापन और ज्यादा बढ़ जाता है। और मैंने खुद अपनी आँखो से देखा है, उन दिनों दोनो घर जैसे एक हो गए थे। बच्चे अकल को एक मिनट नहीं छोडते थे और वह क्या नाम है बिटिया का, नेहा, वह भी दिन-रात तुम्हारे ही पास बनी रहती थी।"

"लोगो को यही तो अच्छा नहीं लगा।"

"लोगो को मतलब ?"

"मेरी जिठानी को। उस समय दो-तीन महीने मेरे पास रह गई थीं न। इतना परेशान

किया कि क्या बताऊँ ? कोई भी घर मे आता तो उनके कान खड़े हो जाते । योगेश तो उन्हे फूटी ऑखो नही सुहाते थे । दिन-रात बच्चो के कान भरती थीं । कहतीं कि इन्हीं की वजह से तुम्हारे पापा मरे है । बच्चे तो बच्चे ही है । ताव मे आकर दो-चार बार बदसलूकी कर बैठे । तब से योगेश का आना बंद ही हो गया । अपमान सहने के लिए भला कौन आएगा ?"

"तेरी जिठानी को बैठे-बिठाए यह क्या सूझी ?"

"पता नही, उनके दिमाग मे क्या फितूर था ? चौबीसों घंटे जैसे मुझ पर पहरा देती रहतीं । उनका वश चलता, तो मुझे अँधेरी कोठरी मे दफन कर देतीं, पर बच्चो को पालने के लिए नौकरी तो जरूरी थी । इसलिए मेरे बाहर जाने पर रोक नहीं लगा सकीं, पर टोका-टाकी से बाज नहीं आईं । जरा अच्छे से तैयार हुई नहीं कि शुरू हो जातीं, बहुत पहन-ओढ़ लिया बहू, अब जरा सलीके से रहा करो, तुम्हें बच्चे पालने है ।"

"अरी, वाह री बुढिया, खुद के बालो मे चॉदी भर गई है, फिर भी सिंगार-पटार कम नहीं हुआ और मेरी बेटी को कोसती है !"

"उन्हें हक है अम्मा, भगवान् ने उनका शृंगार बरकरार रखा है, तो वे करेंगी ही ।"

"अरे, खूब करे, पर दूसरों को तो बख्श दे । उनके पीछे क्यों पड़ी रहती हैं ।"

"यह तो जमाने का दस्तूर है अम्मा, मै तुम्हारी अपनी हूँ, इसलिए तुम्हें बुरा लगता है, पर औरो के वक्त तो तुम भी चुप नहीं रहीं । फूफा जी की मृत्यु के बाद जब बुआ जी घर आई थीं, तब की बात याद है ? तुम और चाची, मिलकर उनका कितना मखौल उडाया करती थीं ।"

अम्मा चुप हो गईं । बाजी इस तरह पलटती देखकर उन्हें उबासियॉ आने लगीं और घडी की ओर देखकर वे सोने चल दीं ।

अनु को अच्छा ही लगा । इस चर्चा को अब और देर तक झेल पाना उसकी बर्दाश्त से बाहर था । एक बात के निकलते ही, दूसरी सैकड़ों बातें याद आने लगी थीं और सब की सब उतनी ही टीस देने वाली थीं ।

सबसे ज्यादा याद आ रही थी योगेश की मॉ, जो कभी अनु के सेवाभाव से गद्‌गद रहा करती थीं । वही अनु अब उनकी आँख की किरकिरी बन गई थी । उन दिनों अनु को एक पुरुष की कमी बेहद खलने लगी थी । बीसियो काम थे, जो उससे नही सँभल रहे थे । पेंशन के कागज निकलवाने थे, बीमे की कार्रवाई करनी थी, खातों का नामांकन बदलवाना था, टेलीफोन, गैस आदि मे भी अपना नाम लिखवाना था । इन सबके लिए दफ्तरो के सैकड़ों चक्कर काटने होते थे बाबू लोगों की चिरौरी करनी होती थी अपने ही पैसों के

लिए भीख मागनी होती थी, घूस देनी पड़ती थी । उसका मनोबल बार-बार टूट जाता था । लगता था, सब छोड़-छाड़कर भाग ले । योगेश साथ नही होते, तो सचमुच वह भाग जाती । उन्ही के कारण वह मोर्चे पर डटी रह सकी ।

पर उसने बार-बार अनुभव किया कि योगेश का इस तरह उसके साथ घूमना मॉजी को नागवार गुजर रहा है । इस बात को उन्होंने छिपाया भी नही, बल्कि जताने की ही कोशिश की । उनके बर्ताव में एक अजीब-सा रूखापन आ गया था । वह स्नेह, वह ऊष्मा पता नही कहाँ खो गई थी ।

फिर उन लोगो ने मकान बदल दिया और शहर के दूसरे छोर पर रहने चले गए । मकान छोड़ने का प्रस्ताव मॉजी का ही था । वह नेहा को अनु की छाया से दूर ले जाना चाहती थीं और योगेश इस समय उन्हे नाराज नहीं कर सकते थे ।

मकान बदलने के बाद तो योगेश उसकी पहुँच से बहुत दूर चले गए । जब भी फोन किया, मॉजी ने ही उठाया । लगता, जैसे वे फोन के आसपास ही कुडली मारकर बैठ गई है । एकाध बार योगेश से बात हुई भी तो पता चला कि पिछला कोई भी मैसेज उन तक नहीं पहुँचा है ।

एक दिन तो हद ही हो गई । एजी ऑफिस का एक सर्कुलर आया था और उसे उसका सिर-पैर कुछ भी समझ मे नही आ रहा था । उसने मजबूरी मे ही योगेश के यहाँ फोन लगाया । हमेशा की तरह मॉजी ने ही उठाया । अनु की आवाज सुनते ही बड़े तल्ख अदाज मे कहा, "बहू, मै मानती हूँ, ईश्वर ने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया, पर उसका बदला मुझसे क्यो ले रही हो । मेरे बेटे को बख्श दो, तुम्हारे हाथ जोडती हूँ ।"

शर्म से अनु गड़-सी गई । गनीमत थी कि यह बातचीत फोन पर हो रही थी । नहीं तो सचमुच वह धरती मे गड ही जाती, पर सामने होती, तो मॉजी भी शायद इतनी साफगोई न बरतती ।

तब से उसने तय कर लिया है कि अकेले ही सब कुछ निबटा लेगी । मदद के लिए किसी का मुँह नहीं देखेगी ।

मॉजी ने यही कामना तो की थी और अब मॉजी की दूसरी इच्छा भी पूरी होने जा रही है । योगेश शादी कर रहे है ।

डेढ़ साल पहले एक हादसे ने दोनों घरो की नींव हिलाकर रख दी थी । एक साथ दो घरो मे अँधेरा हो गया था । आज भी वह दिन याद आता है, तो रोंगटे खड़े हो जाते है ।

इतवार की दोपहर । सदानंद बच्चों के साथ कैरम खेल रहे थे । तभी नेहा दौडती हुई आई । पता चला, भैया छत की सीढियो से गिर गया है । सिर से बहुत खून बह रहा

है । मम्मी रो रही है ।

सब के सब भागकर पड़ोस मे पहुँचे । चोट सचमुच बहुत ज्यादा थी । लडका बेहोश हुआ जा रहा था । पूनम जार-जार रो रही थी । किसी तरह उसे चुप कराकर अनु ने घाव मे हलदी भरी । बर्फ की पट्टियो मे खून बद करने का प्रयास किया । तब तक सदानद तैयार होकर आ गए । योगेश टूर पर थे । अस्पताल सदानद को ही जाना था ।

उस दिन अनु ने सोचा भी नही था कि स्कूटर पर बैठे हुए ये तीनो प्राणी महाप्रयाण पर जा रहे है । सदानद हमेशा बहुत ही सावधानी से स्कूटर चलाते थे, पर उस दिन पता नही क्या हुआ ? शायद अस्पताल पहुँचने की जल्दी हो, वे अपना सतुलन खो बैठे । अस्पताल तो वे पहुँचे, पर निष्प्राण देह के रूप मे । उन्होने घटनास्थल पर ही दम तोड दिया । पूनम और अंशुल शायद योगेश की प्रतीक्षा मे साँसे गिनते रहे । उनकी गोद मे ही दोनो ने अतिम साँस ली ।

इस घटना से तो पास-पड़ोस भी दहल गया । लोगों के पास सात्वना के लिए शब्द नही थे । पलक झपकते ही, दो परिवार उजड गए थे । दु ख की इन घडियो मे वे दोनो परिवार एक-दूसरे के और करीब आ गए । एक-दूसरे की पीडा को वे लोग ही अच्छी तरह समझ सकते थे । एक साझा दु ख था, जिसे वे लोग साथ-साथ झेल रहे थे ।

पर महीना बीतने भी न पाया था कि दृश्य बदलने लगा । अनु की जिठानी उनके दु ख मे शरीक होने आ गई थी । उन्होने आते-आते उपदेश देना शुरू किया, “देखो बहू, भैया थे, तब की बात और थी, पर अब पराए मर्द का इस तरह मुँह उठाए जब-तब आ जाना अच्छा नहीं लगता ।” बच्चों को भी उन्होंने पता नहीं क्या पट्टी पढा दी कि वे भी कटे-कटे-से रहने लगे । सदानंद के चले जाने के बाद सारी शिकायतें, सारी फरमाइशे अकल के पास ही पहुँचती थीं, पर अब पता नहीं क्या हुआ कि उनसे कोई सीधे मुँह बात नहीं करता था ।

धीरे-धीरे उनका घर आना कम होता गया, पर अनु को तो पग-पग पर उनकी जरूरत पडती थी । जब तब उनके घर जाना पडता था । वहाँ उनकी माता जी डेरा डाले पडी थी । किसी जमाने मे वह अनु की घोर प्रशसक थी । अकसर ही उसकी पूनम से तुलना की जाती और अनु बीस ही निकलती । पर वक्त के साथ सब कुछ बदल गया था । मरने वाली स्वर्गवासी होकर सद्गुणो की खान बन गई थी और अनु के हिस्से आई थी उपेक्षा, अवज्ञा और अपमान ।

अनु को तो यह सब स्वीकार करने मे ही महीने लग गए कि सदानद अब इस दुनिया में नहीं है । वह पेशन के लिए भाग-दौड कर रही थी । बीमे के कागजो पर

दस्तखत कर रही थी, पर यह सब मशीनी ढग से हो रहा था । मन के भीतर कहीं वह अपने को सदानद के साथ ही पाती थी । यह साथ ही उसका सबल था और उन्हीं दिनो योगेश की मॉ और उसकी जिठानी जैसे लोग पता नहीं क्या-क्या कल्पना कर बैठे थे कि सोचते भी शर्म आती थी । उसे योगेश से सहानुभूति जरूर थी और क्यो न होती, उस दु ख को, उस वज्रपात को उसने भी तो झेला था । उससे ज्यादा योगेश की पीडा को कौन समझ सकता था, फिर योगेश के साथ तो दोहरा हादसा हुआ था । इकलौता बेटा भी चला गया था । अशुल का गोरा गदबदा चेहरा याद आते ही मन आज भी कैसा हो जाता है । उसे माटी को सौपते हुए योगेश के हाथ किस कदर कॉपे होगे । मन कितना रोया होगा । शोक की उस कातर घड़ी मे और कौन था जो उनके दु:ख को समझता, उनके घावो को सहलाता ।

पर वहीं शायद थोडी भूल हो गई । चार-पॉच महीने बाद अनु की एक अतरग सहेली ने कहा था, 'अच्छा होगा, अगर तुम दोनो अपने दु ख बॉट लो । एक-दूसरे की पीडा को तुम्हीं लोग ठीक से समझ सकोगे, उसके साथ न्याय कर सकोगे, दो टूटे हुए घर सॅवर जाएँगे, बच्चों को मॉ-बाप दोनो मिल जाएँगे । इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है ।'

सुनकर अनु एकदम चौक पड़ी थी । इस तरह से तो उसने कभी सोचा ही नहीं था, पर शायद दूसरों ने सोच लिया था । तभी तो उसकी जिठानी ने उस पर चौकी-पहरे बिठा रखे है । यही डर तो है, जो योगेश की मॉ को बदहवास किए हुए है ।

इसके बाद तटस्थ भाव से उसने इस विषय पर जब भी गौर किया, वह मन ही मन ग्लानि से भर उठी । लगा कि ऐसा अगर सचमुच हो गया, तो बच्चे क्या सोचेगे ? लोग क्या कहेगे ? उसके बाद क्या वह बच्चों के सामने सिर उठा सकेगी ? पड़ोसियो से ऑखें मिलाकर बात कर सकेगी ? परिजनों के उपहास का सामना कर सकेगी ?

अब तो योगेश नई शादी कर रहे है । चलो, यह अच्छा ही हुआ । मन का यह विकल्प तो दूर हो जाएगा ।

मेहरा लोगो की सुनीता की शादी थी । इन दिनो अनु ने तो ऐसे समारोहो मे जाना ही छोड दिया था, पर मेहरा लोगों की बात अलग थी । वे उसके सबसे पुराने पडोसी थे । पिछले दस-बारह सालों का साथ था । उन लोगों ने हमेशा बड़े भाई-भाभी की भूमिका निभाई थी । वहाँ न कहने की गुंजाइश ही नहीं थी । मिसेज मेहरा ने साफ कह दिया था, 'अगर तुम शादी मे नहीं आई तो मै जिदगी-भर तुमसे बात नहीं करूँगी ।'

और जाना भी कहाँ था कॉलोनी के ग्राउन्ड में ही तो रिसेप्शन था पर वहाँ तक जाने

की, लोगो का सामना करने की अनु मे हिम्मत नहीं थी ।

फिर अम्मा ने समझाया कि एक ही बात को पकड़कर बैठ जाओगी तो कैसे काम चलेगा । जो बीत गया, सो बीत गया । कल को तुम्हारे भी बच्चो की शादी होगी । तुम अगर किसी के यहाँ नहीं जाओगी तो तुम्हारे यहाँ कौन आएगा ।

अपने बच्चो की शादी की अनु को चिता नहीं थी । उसमे अभी कम से कम दस साल बाकी थे, पर वह मेहरा दपती को नाराज नहीं कर सकती थी । उनके इस परिवार पर असख्य उपकार थे । हर अच्छे-बुरे वक्त मे उन्होंने अनु का साथ दिया है । पहले वाली बात होती, तो अनु इस शादी मे अहम भूमिका निभाती, मिसेज मेहरा के साथ शॉपिग करवाती, रात-रात जागकर सबको मेहँदी लगाती । लेडीज सगीत में अपनी आवाज का जादू बिखेरती । निमत्रण-पत्रो पर अपने सुंदर अक्षरो में नाम-पते लिखती ।

पर दो-चार मेहमानों को अपने घर पर ठहराने के अलावा वह कोई मदद नहीं कर सकी । उन्हीं लोगो के इसरार करने पर उसे जल्दी तैयार भी होना पड़ा । नही तो उसका इरादा था कि देर रात जाएगी और दुलहन को तोहफा पकड़ाकर लौट आएगी । मिसेज मेहरा की बात भी रह जाएगी और भीड का सामना भी न करना पडेगा ।

वह जिस समय पहुँची, पडाल लोगो से अटा पडा था । जगमग रोशनी, लहराती साडियाँ, झिलमिल गहने, लकदक सूट, महकते परफ्यूम, थिरकता संगीत और खाने की सुगध । एक अरसे बाद अनु इन सबसे दो-चार हो रही थी । उसे लग रहा था कि इस माहौल मे अगर और दो-चार घंटे रहना पडा, तो उसे गश आ जाएगा ।

तभी बैड की आवाज पास आती सुनाई दी । बारात शायद मोड़ तक आ पहुँची थी । दरवाजे पर लगने से पहले नाच का एक दौर तो होना जरूरी था, फिर दरवाजे पर ये लोग घटा-भर लगा देगे । उस समय तो बारातियो का जोश शबाब पर होता है । उन्हे देखने के लिए पंडाल करीब-करीब खाली हो गया । केवल कुछ बडी-बूढियाँ बैठी रह गई ।

बडी देर बाद अनु ने खुलकर साँस ली और आँखे मूँदकर कुर्सी की पीठ पर टिक गई । तभी पीछे एक आहट-सी हुई, "हैलो !"

उसने चौककर सिर उठाया, योगेश थे ।

"यहाँ बैठ सकता हूँ ?"

"यह भी कोई पूछने की बात है ?"

"थैक्स !" योगेश ने कहा और एक कुर्सी खींचकर बैठ गए और बस, फिर एक सन्नाटा दोनो के बीच पसर गया ।

अनु सोच रही थी ऐसी अनहोनी भी क्या कभी सभव थी सुबह की चाय पर

शाम के नाश्ते पर या रात के खाने पर, जब भी दोनो परिवार साथ में होते, अनु और योगेश ही चहकते रहते । सदानंद तो हमेशा से गंभीर स्वभाव के थे । पूनम भी कम ही बोलती थी । अच्छी-खासी ग्रेजुएट थी, पर घर, गृहस्थी और बच्चे, इन्ही मे लिपटकर रह गई थी । रोज का अखबार तक नही देखती थी । इसीलिए पुरुषो की महफिल मे उसकी बोलती बद हो जाती थी । उन दिनो पिकनिक हो या पार्टी, शादी हो या सिनेमा, सभी जगह, सब लोग साथ ही जाते थे । बाते थी कि खत्म ही नही होती थी और आज बात करने का सिरा नहीं मिल रहा था ।

"नेहा कैसी है ?" बडी देर बाद उसने पूछा, "माँजी ठीक है ? यहा पर है न ?"

"माँजी बिलकुल ठीक है, यही पर है और नेहा भी आपकी दुआ से ठीक ही है ।"

"साथ लाए होगे न ?"

"हाँ, अकेले आने का तो सवाल ही नही था । मै तो आजकल ऐसे फक्शन अवॉइड ही करता हूँ, पर मेहरा जी इतनी दूर इन्वाइट करने आए, फिर मैने सोचा कि इसी बहाने नेहा भी सबसे मिल लेगी । आप लोगो को बहुत याद करती है । खासकर आपको ।"

"उसे देखे एक अरसा हो गया ।"

"सो तो होगा ही । आपने तो हमारे गरीबखाने पर न आने की कसम खा रखी है न !"

"आपने घर भी तो इतनी दूर ले रखा है ।"

"महानगरों मे लोग फोन से भी हाल-चाल पूछ लेते है ।"

"कौन ?" अनु ने तडपकर योगेश की ओर देखा, पर उनके चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी । शायद उन्हे उस हादसे की खबर ही नही थी । इसलिए फिर उसने भी जिक्र नहीं किया । बोली, "यही उलाहना मै आपको भी तो दे सकती हूँ । आप भी तो अरसे से घर नहीं आए और न कभी फोन ही किया ।"

"आप कहे तो मै रोज आ सकता हूँ । मेरा तो रास्ता ही उधर से है, पर मुझे लगा कि मेरा आना लोगों को, खासकर बच्चो को अच्छा नहीं लगता है । कई बार तो फोन पर इतनी बदतमीजी से पेश आए कि ..."

"मै उनकी ओर से माफी माँगती हूँ । आप तो जानते है, वे किस नाजुक उम्र से गुजर रहे है । खासकर उन दिनो तो वे बहुत ही भावुक हो उठे थे । अपने आप ही ऊटपटाँग कल्पनाएँ करने लगे थे । किसी की भी बातों मे आ जाते थे । मै भी उन दिनो अपने दु:ख मे इतनी डूब गई थी कि बच्चों का ध्यान ही न रहा । यह भी याद नहीं रहा कि यह हादसा इनके साथ भी हुआ है इनके भी सिर से बाप का साया उठ गया है अब तो खैर मै

भी सँभल गई हूँ, बच्चे भी समझदार हो गए है और बहुत शर्मिंदा है। खासकर निधि तो कई बार पछतावा जाहिर कर चुकी है।"

उसकी आखिरी बात शोर मे ही डूब गई, क्योकि लोग अदर आने लगे थे। बाहर मिलनी की रस्म हो रही थी। दूल्हे को मंडप में लाया जा रहा था। तभी भीड को चीरते तीनो बच्चे दौडते हुए आए। नेहा आते ही आटी से लिपट गई। नकुल योगेश की बॉहो मे झूल गया और निधि अंकल से सटकर खड़ी हो गई।

तब अनु को याद आया कि योगेश को नई शादी की बधाई देना तो भूल ही गई, पर बच्चों के सामने उसे खुद ही सकोच हो आया।

दो दिन बाद ही शायद शनिवार था। शाम के सात भी नही बजे थे कि दरवाजे की घंटी बजी। अनु हैरान थी कि शनिवार की शाम बच्चे इतनी जल्दी कैसे लौट आए। दरवाजा खोलकर देखा, तो सामने योगेश खडे थे। साथ मे नेहा और नेहा के हाथ मे छोटा-सा बैग।

"निधि ने कहा था, इसे सडे को छोड़ जाइए, तो जाहिर है, इससे सुबह तक सब्र न हो सका।"

"अरे, यह तो आपने बहुत अच्छा किया। सुनीता दीदी के ससुराल जाने से निधि बेहद उदास है। नेहा आ गई है, तो उसका दिल बहल जाएगा।"

उसने बच्चो को आवाज देकर नेहा को उनके सुपुर्द किया। भीतर जाकर अम्मा को चाय भिजवाने के लिए कहा और फिर बाहर आ गई। तब तक योगेश अपनी प्रिय कुर्सी पर बैठ चुके थे।

"माफ कीजिए, उस दिन आपको बधाई देना भूल ही गई।"

"किस बात की ?"

"यह भी बताना पडेगा ?"

"तो आप तक खबर पहुँच गई ?"

"ऐसी खबरे बहुत जल्दी और बहुत दूर तक पहुँचती है।"

तब तक अम्मा चाय लेकर आ गईं।

"अरे, अम्मा जी, आपने क्यो तकलीफ की।"

"कोई बात नहीं बेटा, मैंने सोचा, इतने दिनो बाद आए हो तो मै भी थोडे हाल-चाल पूछ लूँ। आए हो तो अब खाना खाकर ही जाना।"

"आज माफ कीजिए। मॉ घर पर इतजार करेंगी, फिर कभी सही।"

कुछ देर बतियाकर अम्मा भीतर चली गईं तो अनु ने पूछा "मॉजी को पता है कि

नेहा यहाँ आई है ? नाराज तो नहीं होंगी न ?"

"अरे, मैं उनकी बातों को माइंड नहीं करता। सठिया गई हैं। एक बात पकड़ ले‹ है, तो छोड़ती नहीं। थैंक गॉड, आज उन्होंने कोई बखेड़ा नहीं किया।"

अब क्यों करेंगी, अनु ने सोचा। अब तो खतरे वाली कोई बात ही नहीं है, बलि अब तो नेहा जितनी देर बाहर रहे, अच्छा है। बेटे-बहू को उतनी ही आजादी मिलेगी

"उस दिन आप मुझे बधाई देना भूल गई थीं। मैं भी एक बात कहना भूल गया।

"कौन-सी ?"

"उस दिन आप बहुत अच्छी लग रही थीं।"

"जी ?"

"अरसे बाद आपको पहले की तरह सजा-सँवरा देखा, अच्छा लगा।"

"अब शादी-ब्याह में बैरागी बनकर तो नहीं जाया जाता है न।"

"बैरागी बनने की जरूरत भी क्या है ? उससे तो और मनहूसियत फैलती है।"

योगेश के जाने के बाद भी उनके वाक्य कानों में घंटियों की तरह गूँजते रहे। यह कोई पहला अवसर नहीं था कि योगेश ने उसकी तारीफ की हो। वह तो पूनम से भी हमेशा कहते, जरा भाभी से सलीका सीखो। आठ घंटे बच्चों में मगजमारी करके आती है, फिर भी कितनी फ्रेश लगती है। गनीमत है कि पूनम ने इन बातों का कभी बुरा नहीं माना। वह उन आदर्श भारतीय स्त्रियों में से थी, जिनके लिए शादी और बच्चों के बाद जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता।

यूँ तो उस दिन निधि ने भी कहा था, 'मम्मी, आज आप बहुत प्यारी लग रही हैं।' पर उसकी बात को अनु ने गंभीरता से नहीं लिया था, पर योगेश की बात ने पता नहीं कितने सोए तारों को झनझना दिया।

दूसरे दिन रविवार था। सदानंद के जाने के बाद से इतवार तो निरानंद बीतता था। न कहीं आना, न जाना। बहुत हुआ तो शाम को जाकर हफ्ते-भर की सब्जी ले आती। बाकी समय घर पर ही कट जाता। एक बदरंग-सी मैक्सी या मुसा हुआ सूट पहनकर वह हफ्ते-भर के काम निबटाती रहती, जैसे कपड़ों की धुलाई, फ्रिज की सफाई, किचन की झाड़-पोंछ।

आज पता नहीं उसे क्या सूझा, सुबह-सवेरे ही नहा ली, फिर साड़ियों का बक्सा खोलकर बैठ गई। अपनी तमाम शोख रंग की साड़ियाँ उसने इस बक्से में पटक रखी थीं। बक्से को खँगालकर उसने एक चंपई रंग की कलकत्ता साड़ी निकाल ली।

"मम्मी, कहीं बाहर जा रही हो ?"

"नही रे, ये इतनी सारी साड़ियाँ बक्से में पड़ी सड़ रही है । सोचा, घर मे ही पहनकर खत्म कर दूँ ।"

"घर में क्यों ? आप इसे बाहर भी पहन सकती है । इतनी अच्छी तो है ।

"अच्छी तो है, पर अब बाहर जाना कहाँ है ?"

बेचारी निधि, एक लबी साँस खींचकर रह गई ।

दोपहर को योगेश की गाडी फिर घर के सामने थी । पूनम को बहुत अरमान था गाडी का । उसके सामने तो सभव न हो सका, पर बीमे की रकम का योगेश ने यही सदुपयोग किया ।

योगेश अचानक आ गए थे, पर अनु को अच्छा लगा कि वे हमेशा की तरह अस्त-व्यस्त वेशभूषा से नहीं हैं । क्या पता, कपड़े पहनते हुए उसके अतर्मन को योगेश का ही इतजार रहा हो ? यह सोचते हुए उसे अपने आप पर शर्म आने लगी । लगा, जैसे वह कोई पाप कर रही है, पर इसमें पाप कैसा ! पुरुष की प्रशसा-भरी दृष्टि की अभिलाषा तो नारी-सुलभ भावना है । उसने तन का शृगार छोड़ दिया है, तो क्या, छत्तीस साल की उम्र मे वह मन को तो बिरागी नहीं बना सकती न !

योगेश ने आते ही ऐलान किया, "हैलो किड्स, 'चाची चार सौ बीस' देखने चलना है ?"

"मुझे लगा, आप नहीं जाएँगी, इसलिए चार ही टिकट लाया हूँ, पर अगर आप चलना चाहें, तो इंतजाम हो सकता है ।"

"अगर इतजाम हो सकता हो, तो अम्मा को ले जाइए प्लीज, जब से यहाँ आई है, बोर हो रही है ।"

"नो प्रॉब्लम ।"

अम्मा को मनाना कोई मुश्किल काम नहीं था । वे बच्चों से भी पहले तैयार हो गईं । बच्चो का उत्साह देखकर अनु का मन भर आया । बेचारे, जरा-जरा-सी बातो के लिए तरस गए हैं । वह खुद उन्हें लेकर सिनेमा जाने से डरती है । कोई परिचित मिल गया तो ? जिस-तिस के साथ उन्हे भेज नहीं सकती । खासकर निधि के लिए बहुत सोचना पडता है । दस-ग्यारह साल की उम्र बड़ी विचित्र होती है । न उसे समझदारो मे गिना जा सकता है, न अनाड़ियो में ।

बच्चों को गए मुश्किल से आधा घंटा हुआ होगा कि दरवाजे की घटी फिर बजी । योगेश थे ।

"यह क्या ? आप नहीं गए ?"

"चार टिकट थे चारों को बैठा आया हूँ ।"

"आपने तो कहा था कि इतजाम हो जाएगा ।"

"इतजाम तो हो जाता, पर जरा इस कॉम्बिनेशन पर तो गौर फरमाइए । तीनो बच्चे, एक अम्मा जी और एक बेचारा मै । लोग पिक्चर देखते कि हमे देखते ?"

अनु को सोचकर ही हँसी आने लगी ।

"मैने सोचा, आप अकेले बोर हो रही होगी । चलिए, आपको भी कही घुमा लाऊँ ।"

"न बाबा, मै घर मे ही ठीक हूँ ।"

"तो ठीक है । यहाँ बैठकर गपशप करते है । साढे पाँच बजे उन लोगो को लेने चला जाऊँगा ।" योगेश ने निमत्रण की प्रतीक्षा भी नहीं की और अपनी फेवरिट कुर्सी मे धँस गए । मजबूरन अनु को भी चाय की पेशकश करनी पडी ।

चाय पीते समय अनु ने बात छेडी, "और सुनाइए, फिर शुभ मुहूर्त कब का तय हुआ है ?"

"किस बात का ?"

"अब इतना भी मत उडिए । शादी मे न बुलाना हो तो और बात है ।"

"मै सच कह रहा हूँ । अभी कही कुछ तय नहीं हुआ है । आप तो पता नहीं, कहाँ-कहाँ से खबर पा जाती है ।"

"श्रीमान्, हमें अत्यत विश्वसनीय सूत्र से पता चला है, अर्थात् नेहा से !"

"हाँ, इस बार कन्या को उससे भी मिलवाया गया था ।"

"सिर्फ मिलवाया नहीं, माँ के रूप मे परिचय करवाया था ।"

"हमारी माताराम भी अजीब है । पिता की राय पूछी नही और कन्या को माँ का दर्जा दे दिया ।"

"क्यो ? पिता को क्या आपत्ति है ?"

"दरअसल मै किसी के साथ छल नही करना चाहता ।"

"कैसा छल ?"

"आपको मै यह जो हँसता-बोलता नजर आता हूँ, आप उस पर मत जाइए । भीतर से मेरा मन एकदम तार-तार हो चुका है । कोई भी लडकी मेरे घर मे कोरा मन और कोरा तन लेकर आएगी, तो मै उसके साथ न्याय नही कर सकूँगा ।"

"तो फिर उपाय क्या है ?"

"उपाय एक ही है, शादी अगर करनी ही है, तो मै अपनी तरह किसी भुक्तभोगी स्त्री से करना चाहूँगा ।"

एक क्षण को अनु की धमनियो का खून जैसे जम गया ।

"विडो या डायवोर्सी, कोई भी हो, पर ऐसी हो, जो मेरी पीडी को समझ सके, शेयर कर सके। जिसने जीवन में कुछ खोया होगा, वही मेरे दर्द को ठीक से समझ सकेगी।"

अनु की साँस फिर से सम पर आ गई थी। उसने धीरे से पूछा, "माँजी मान जाएँगी ?"

"यही तो परेशानी है। माँ को मनाना ही सबसे टेढी खीर है। वह कहती है कि जब कुँआरी कन्याएँ भरी पडी है, तो मैं ऐसी-वैसी क्यो लाऊँ ?"

अनु के मन मे एक शूल-सा चुभा। मतलब, अब वह भी ऐसी-वैसी औरतो की श्रेणी मे आ गई है। माँजी ने चाहे जो भी कहा हो, पर उसके सामने बोलते हुए योगेश को कुछ तो सावधानी बरतनी चाहिए। फीकी हँसी के साथ उसने कहा, "माँजी ठीक ही कहती है। इतनी बेचारी बिन ब्याही बैठी हुई है। आपके बहाने कम से कम एक का उद्धार तो हो जाएगा।"

तभी योगेश एकदम उठ खडे हुए, "साढे पाँच हो गए, चलना चाहिए।"

अनु ने राहत की साँस ली। यह चर्चा उसकी बर्दाश्त से बाहर जा रही थी।

बच्चो के लिए कापियाँ खरीदनी थीं, इसलिए वह रास्ते मे ही रुक गई। स्टेशनरी की दुकान से बाहर आ रही थी कि बगल वाले जनरल स्टोर मे योगेश नजर आ गए।

"आप सामान लेने इतनी दूर आते है ?" हाय-हैलो के बाद उसने पूछा।

"पुरानी दुकान मे ही आना अच्छा लगता है। वैसे भी मेरा तो यह रोज का रास्ता है। आप क्या सीधे कॉलेज से आ रही है ?"

"बच्चो ने कब से लिस्ट थमाई हुई है। एक बार घर पहुँच जाती हूँ तो दोबारा निकलने का मन नही करता, इसलिए आज "

"मै भी दफ्तर से चला आ रहा हूँ। आइए न, कहीं बैठकर चाय पीते है।"

"नहीं, अब घर चलूँगी, पहले ही बहुत देर हो चुकी है।"

"आप न तो मुझे घर पर चाय के लिए बुला रही है, न यहाँ मेरा निमंत्रण स्वीकार कर रही है। यह तो कोई अच्छी बात नही है न। अच्छा, चाय न पीना चाहे तो चलिए, सामने वाली दुकान मे जूस या लस्सी पीते है।"

अनु ने देखा, सामने दुकान क्या, एक गुमटी थी। वहाँ बैठकर लस्सी पीने की तो वह कल्पना ही नहीं कर सकती। बीसियो लोग तो सामने से निकलते हैं। पता नहीं, कब किसकी नजर पड़ जाए।

"चलिए, चाय ही पीते हैं।" उसने हथियार डालते हुए कहा।

योगेश के साथ 'नीलकमल' में प्रवेश करते हुए उसे अजीब-सा लग रहा था वह

बीसियों बार यहाँ आ चुकी है, पर वह माहौल दूसरा था । तब सदानद साथ हुआ करते थे । तब होटल में आने का मतलब होता था, हँसी-खुशी के चार पल बटोरना और अब ? कुर्सी पर बैठने के बाद भी वह सहज नहीं हो पाई थी । चौकस नजरो से आसपास का मुआयना कर रही थी । उसे लग रहा था कि होटल के बेटर्स उसे पहचान गए है । योगेश को साथ देखकर पता नहीं क्या सोच रहे है ।

"स्नैक्स मे क्या लेंगी ?" मीनू कार्ड उसके सामने सरकाते हुए योगेश ने पूछा ।

"आप अपने लिए कुछ मँगा लीजिए । मै तो बस एक कप कॉफी लूँगी ।"

"अपने लिए तो मँगाऊँगा ही । दफ्तर से लौटकर मुझे तो भूख लगती है, पर आप इतना नर्वस क्यो हो रही है । रिलेक्स होकर बैठिए न ।"

"दरअसल आजकल कहीं भी जाते हुए मुझे बहुत डर लगता है । कही कोई परिचित मिल गया तो ?"

"मिल गया तो क्या होगा ? फॉसी दे देगा ?"

"आप पुरुष है न, आप इन बातो को नहीं समझेगे ।" और फिर एकाएक अनु को पता नहीं क्या सूझा, एकदम बोल पड़ी, "वैसे आपको भी डरना चाहिए । कहीं आपकी मॉ को पता चल गया कि आप ऐसी-वैसी औरतो के साथ घूम रहे है, तो वह आपकी भी खिंचाई कर देंगी ।"

योगेश विस्फारित नेत्रो मे उसे देखता ही रह गया । योगेश ही क्यो, वह खुद अपनी कही बात पर चकित हो रही थी । यह सब अनायास ही हो गया था । शायद इतने दिनो तक मन में खदबद करती बात होठों तक आ गई थी ।

बडी देर बाद योगेश ने धीरे से कहा, "अगर मॉ ने कभी ऐसी बात कही भी होगी तो उनके जेहन मे आप नही होगी ।' आई नो, शी हैज रिगार्ड्स फॉर यू ।"

"आप मुझे दिलासा देने की कोशिश मत कीजिए । आप की माताजी की मेरे बारे मे जो भी राय है, मुझे मालूम है । वह दो टूक शब्दो मे मुझे सुना चुकी है ।" बोलते-बोलते अनु का गला भर आया । उस दिन के अपमान का दंश नए सिरे से उसे मर्माहत कर गया ।

"यह आप कब की बात कर रही है ?"

"बहुत पुरानी बात है । यह उन दिनों की बात है, जब मै यह मानने के लिए तैयार ही नहीं थी कि बच्चों के पापा अब हमारे बीच नहीं है । मैने तो मन को समझा लिया था कि वह टूर पर गए हैं । महीने-दो महीने बाद लौट आएँगे । जिस समय मैं खुद को ऐसे भ्रम से बहलाए हुए थी, आपकी मॉ ने मुझसे कहा,' 'ओफ, मुझे याद करते भी शर्म आ रही है ?" और अनु के तो टप-टप ऑसू गिरने लगे ।

"ओह गॉड ! इसलिए आपने हम लोगों से सबध तोड लिए थे ? और मै समझ रहा था कि ।"

"आप ही बताइए ? क्या पति के मरते ही औरत बाजारू हो जाती है ? फिर उसके हर क्रियाकलाप को शका से क्यो देखा जाता है ? उस पर हर क्षण चौकी-पहरे क्यो बिठाए जाते है ? मेरा ईश्वर जानता है कि मैने यह कभी नहीं चाहा था कि मेरा हरा-भरा ससार उजड जाए । पर जब वह अघट घट ही गया, तो उसका सामना तो करना ही था, बाहर निकलना ही था, लोगो से मिलना ही था । अकेली होती, तो नींद की गोलियॉ खाकर सो जाती, पर मेरे पास दो बच्चे थे । उन्हे तो पालना ही था न ।"

"सॉरी, वेरी सॉरी ।" योगेश हर वाक्य पर कहते रहे और अनु अनवरत बोलती चली गई । अरसे बाद उसके सयम का बॉध टूटा था । अब भावनाओ के आवेग को रोकना असभव था ।

बाहर निकलकर योगेश ने अत्यंत विनम्र होकर पूछा, "आप बहुत अपसेट हो रही है । क्या घर तक अकेले जा सकेंगी ? इजाजत हो तो मै साथ चलूॅ ?"

अनु ने बिना कुछ कहे पहले तो अपनी कायनेटिक स्टार्ट की, फिर कसैले स्वर में कहा, "आप घर की बात कर रहे है । मुझे तो जिंदगी के उस छोर तक अकेले जाना है । आप कब तक मेरा साथ देगे ?"

रात-भर अनु ठीक से सो न सकी । दर्द से सिर जैसे फटा जा रहा था । सुबह पॉच बजे के बाद तो बिस्तर मे लेटना भी भारी लगने लगा । वह उठी और सीधे नल के नीचे बैठ गई । देर तक नहाती रही, तब जाकर जी हलका हुआ ।

बरामदे में खड़ी होकर बाल सुखा ही रही थी कि फोन की घटी बजी, "हैलो ।"

"कौन, अनु जी बोल रही है ?"

"जी हाँ, आप कौन ?"

"जी, मैं योगेश बोल रहा हूँ ।"

अरे वाह, इन योगेश जी के लिए मै अनु जी कब से हो गई ? फिर अनु को याद आया कि इधर उसने भाभी कहना लगभग छोड दिया है, पर नाम शायद पहली बार लिया था ।

"आपको नींद से तो नहीं जगाया न ?"

"अभी-अभी नहाकर निकली हूॅ ।"

"मै रात-भर सो नहीं सका । इतजार करता रहा कि कब सुबह हो और कब मै आपसे कल शाम के लिए माफी मागू "

"ओ इटस आल राइट "

दरअसल उस दिन सुनीता का शादी म आपसे अस बाद मनाकात हुई बडा अच्छा लगा। मन मे जैसे उदासी की एक परत हट गई। इसके बाद जब भी आपसे बाते हुई, मन बड़ा रिफ्रेश हो गया। इसीलिए जब कल आप मिली, तो थोडी देर आपके पास बैठने का मोह हो आया। बट आई एम सो सॉरी।"

"मैने कहा न, उस बात को भूल जाइए।"

"यह कोई भूलने वाली बात है ? बल्कि मै सारी रात अपने को गालियाँ देता रहा। इसान हमेशा अपने दु ख को ही बडा करके देखता है। कल जब आपकी बात सुनी, तो लगा, आप तो दोहरी लड़ाई लड रही है। एक तो अपने भीतर के खालीपन से जूझ रही है, दूसरे घर-परिवार और समाज की कुत्सित नजरो को झेल रही है। एक औरत होकर आप जिस दिलेरी से जिदगी का सामना कर रही है, मै तो दग रह गया।"

अनु चुप। अब इस बात का कोई जवाब भी क्या दे ?

"क्या मै शाम को थोड़ी देर के लिए आ सकता हूँ ?"

"जी ?" अनु चौक पडी, पर उधर शायद किसी उत्तर की प्रतीक्षा थी भी नही, क्योकि फोन रख दिया गया था। शायद उसके मौन को ही स्वीकृति समझ लिया गया था, क्योकि शाम को योगेश हाजिर हो गए थे। साथ मे नेहा थी और ढेर सारा खाने का सामान।

· "यह क्या है ?"

"बच्चो का टिफिन, ताकि आप बच्चों के खाने को लेकर परेशान न हो और इत्मीनान से बैठ सके।"

"लेकिन खाना तो बन चुका है।"

"घर मे बच्चो की माँ होने का यही तो सुख है। बेचारी नेहा तो दादी के आसरे है। जब मर्जी आती है, जो मर्जी आती है, बनाती है, वह भी अहसान जताकर। आज तो कौन से स्वामी जी का प्रवचन सुनने गई है। जाते समय मैंने यूँ ही पूछ लिया कि कब लौटोगी, तो भड़क गई। बोली, तुम्हारी गृहस्थी का भार ढोते-ढोते तो मेरा धरम-करम भी छूटा जा रहा है।"

"वो स्वामी प्रणवानन्द जी आए हुए है। सामने वाली मिश्रा आंटी के साथ अम्मा भी वही गई है। अब इन लोगो की उम्र कोई गृहस्थी करने की थोडे ही है। इन्हे अपना पूजा-पाठ करने दीजिए। आप खाना बनाने के लिए किसी को रख क्यो नहीं लेते।"

"मै तो रख लूँ, पर वह किचन में किसी को घुसने दे, तब तो।"

"इस मामले मे हमारी अम्मा बड़ी कोऑपरेटिव है। तीन रंग की तीन बहुएँ है, वे

सबसे निभा ले जाती है ।”

“हमारी माताराम ने तो एडजस्ट करना सीखा ही नही है । घर में उनका एकछत्र शासन रहा है । यहाँ जब भी आती थी, तो पूनम को परेशान कर देती थी । वह बेचारी मेरे पास शिकायत करती, तो मै ही उसे डॉट देता था । अब खुद भुगत रहा हूँ, तब पता चल रहा है ।”

“अब तो एक ही उपाय है । एक अच्छी-सी बहू ले आइए । माँ भी खुश, माँ का बेटा भी खुश, बेटे की बेटी भी खुश ।”

“इसलिए तो आया हूँ ।”

“मतलब ?”

“आपने कल कहा था कि मुझे तो जिंदगी के उस छोर तक अकेले जाना है, आप कब तक मेरा साथ देंगे । इस प्रश्न का उत्तर उसी समय देना चाहता था, पर हिम्मत नही पडी । वैसे भी न तो वह माहौल मुनासिब था, न जगह । इसलिए आज आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ । मै साथ देने के लिए तैयार हूँ, जहाँ तक आप चाहे ।”

अनु को तो जैसे साँप सूँघ गया । सूने घर मे इस तरह के प्रणय निवेदन की उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी । बडी देर बाद उसके मुँह से कॉपती-सी आवाज निकली, “योगेश जी, आप होश मे तो है न ?”

“कल तक नहीं था । इस समय अपने पूरे होशोहवास मे हूँ । अब मेरी समझ में आ रहा है कि माँ का लाया हुआ कोई भी रिश्ता मेरे गले से क्यो नहीं उतरता ? बेवकूफो की तरह एक के बाद एक प्रस्ताव नकारता चला जा रहा हूँ । यह तो अब पता चला है कि मेरे सब-कांशस मे इतना बडा, इतना अहम प्रपोजल छिपा बैठा था, इसीलिए दूसरे सारे प्रपोजल बेमानी लग रहे थे ।”

अनु तुरत ही उनके प्रस्ताव का कोई ठोस उत्तर दे देगी, ऐसी आशा तो योगेश ने भी नहीं की थी, पर वह सामने से उठकर चली जाएगी, ऐसा भी नहीं सोचा था । उन्होंने स्वय को बहुत अपमानित अनुभव किया । मन तो हुआ, वह भी उठकर चले जाएँ, पर नेहा के लिए मजबूरन बैठे रहे । जैसे ही अँधेरा हुआ, बच्चो का रेला शोर मचाता हुआ भीतर आया । वह तुरत उठ खड़े हुए, “नेहा, चलो, घर चलते है । दादी राह देख रही होगी ।”

तभी भीतर से आवाज आई, “नकुल, अकल से कहना, खाना खाकर जाएँगे ।”

अनु ने उन लोगों के साथ नही खाया । अम्मा के लिए रुकी रही । अम्मा को लौटने मे कोई ग्यारह बज गए । खाना खाते हुए बोलीं, “योगेश आया था ?”

"तुम्हे किसने बताया ?"

"घर में पॉव देते ही सिगरेट की गध नाक में भर गई थी, इसी से अदाज लगाया ।"

"अम्मा, तुम्हे तो सी०आई०डी० में भर्ती होना था । चूल्हे-चौके में बेकार जिदगी बर्बाद करती रहीं ।"

"आजकल बहुत आने लगा है न, कहॉ तो साल-भर तक शक्ल भी नहीं दिखाई थी और अब इतना प्यार उमड रहा है ।"

"अम्मा, मै किसी को बुलाने तो जाती नहीं, पर घर आए मेहमान का स्वागत तो करना ही पडता है । दो घड़ी पास बैठकर बात भी करनी पडती है । तुम्हे तो मालूम है, दोनों घरो मे कितने अच्छे सबध रहे है । बिटिया भी हम लोगो से बहुत हिली हुई है । जिद करती है, तो आ जाते है ।"

"सो तो ठीक है, पर जरा सॅभलकर रहा करो । पुरुषो का कोई भरोसा नहीं होता । खासकर ऐसे पुरुषों का ।"

"ऐसे पुरुषो का मतलब ?"

"अच्छा बता, पूनम को गए कितने दिन हो गए ?"

"एक साल, दस महीने, तेरह दिन ।"

"अरे वाह, तूने तो जैसे उॅगलियों पर हिसाब लगा रखा है ।"

"यह हिसाब पूनम के लिए नहीं है अम्मा, तुम शायद भूल गई कि उसकी मृत्यु मेरी जिदगी भी सूनी करके चली गई है ।"

"जानती हूँ रे, वह हादसा क्या भूलने की चीज है । उसके लिए तो मैंने अपने ठाकुर जी को आज तक माफ नहीं किया । ऐसे अधे हो गए थे कि उन्हे मै नजर नहीं आई । मेरे सामने मेरे जवान-जहान दामाद को उठाकर ले गए । मेरी बेटी की दुनिया उजाड़कर रख दी ।"

थोडी देर तक एक अजीब-सी चुप्पी छाई रही, पर पॉच मिनट बाद ही अम्मा पुन अपनी रौ मे आ गईं । बोली, "मै इसलिए कह रही थी बेटे कि बीवी को मरे दो साल हो चले है । ऐसे भूखे प्राणी बहुत खतरनाक होते है । उनसे बचकर रहना चाहिए । आदमी की नीयत समझते देर नहीं लगती । ऐसे में पुरुषो का तो कुछ नहीं बिगडता, औरत बदनाम हो जाती है ।"

अनु कुछ देर तक मन ही मन शब्दों को तौलती रही, फिर हिम्मत करके बोली, "अम्मा, योगेश मुझसे शादी करना चाहते है ।"

अम्मा मुँह बाए बेटी को देखती रहीं ।

"तुम्हें अच्छा नही लगा न, घबराओ मत, मैने अभी हॉ नहीं की है। तुम्हारी मर्जी के खिलाफ मै कुछ करूँगी भी नही।"

"बेटे, तुम्हारा घर फिर से बस जाए, तो मुझसे ज्यादा खुशी और किसे होगी ? सुबह-शाम ठाकुर जी से मेरी यही रार चलती है। इसीलिए शायद यह पसीजे है, पर बेटे, सवाल अब मेरी मर्जी का नही है। पहले अपने बच्चो से पूछ लो, फिर कोई कदम उठाना। बच्चो का मन बड़ा नाजुक होता है। एक बार अगर गाँठ पड़ गई, तो उम्र-भर खोल नही पाओगी।"

"अम्मा, इस उम्र मे अगर मैने शादी की तो बच्चो के लिए ही करूँगी। उनकी मर्जी के बगैर तो कुछ करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"चलो, राम जी ने बात बिगाडी थी, अब वह ही सुधार देगे। सबके सुख-दु ख की चिता उन्हीं को तो है।" अम्मा ने कहा और गद्‌गद होकर हाथ जोड़ लिए।

इसके बाद मुलाकातो का सिलसिला बढ़ता ही गया। अब योगेश घर पर कम आते थे। अकसर वह दोनो काम पर आते-आते रास्ते मे ही टकरा जाते थे। यह अनायास ही होता था, ऐसा भी नहीं है। कई बार तो योजनाबद्ध तरीके से होता था, फिर वे लोग किसी कॉफी शॉप मे, जूस बार मे या पार्क मे बैठ जाते थे। अब अनु को लोगो का उतना खौफ नहीं रह गया था।

पर उसने अभी योगेश के प्रस्ताव पर पूर्ण स्वीकृति की मुहर नहीं लगाई थी। हर बार बच्चो का बहाना करके टाल जाती थी। दरअसल अभी वह बच्चों से पूछने का साहस नहीं जुटा पाई थी। अम्मा ने उसकी तरफ से वकालत करने की पेशकश की थी, पर उसे लगा, यह बच्चो के साथ अन्याय होगा। जो कुछ कहना-सुनना है, यह खुद करेगी।

इस बीच उसने बच्चो के बारे मे उसकी जो योजनाएँ थीं, योगेश को समझा दी थीं। इस शादी के बाद भी बच्चे अपने पिता का नाम ही चलाएँगे। उन्हे अपने चाचा-ताऊ के यहाँ जाने की पूर्ण स्वतत्रता होगी। वैसे वे लोग बुलाएँगे, इसकी उम्मीद बहुत कम थी। बच्चों की पेशन उनके खाते में जमा होती रहेगी और उनके बालिग होने तक उसमे कोई हाथ नहीं लगाएगा। बच्चो की पढ़ाई का, निधि की शादी का खर्च वह खुद उठाएगी, ताकि बच्चे अपने को पराश्रित न समझें। उसकी नौकरी जारी रहेगी और शादी के बाद छह महीने तक वह अपना क्वार्टर हैंडओवर नहीं करेगी।

पर यह तो बाद की बात थी। पहले तो दो मुख्य बाधाएँ पार करनी थीं। अनु के बच्चे और योगेश की माँ। इनकी हाँ के बिना तो वह एक कदम भी आगे बढने को तैयार नहीं थी।

बच्चो की परीक्षाएँ समाप्त हो गई थीं । सबका घूमने का मन हो रहा था । इसलिए शाम को पार्क का प्रोग्राम बन गया । बच्चे तो पहुँचते ही झूलों पर नबर लगाने के लिए दौड़ पडे । अनु और योगेश एक एकात कोना देखकर घास पर बैठ गए ।

"बच्चो से बात हुई ?" बैठते ही योगेश ने प्रश्न किया ।

"नही, अभी नहीं । आज ही तो पेपर्स खत्म हुए है । कल-परसो बात करूँगी । आप बताइए, आपने मॉजी से पूछ लिया है ?"

"नहीं, और पूछने का इरादा भी नहीं है ।"

"क्यों ?"

"उनका जवाब मुझे मालूम है । उनकी हॉ के इंतजार मे तो मै बूढा हो जाऊँगा ।"

"इसका मतलब है, आप उन्हे बिना बताए ही इतना बडा कदम उठा लेंगे । यह तो गलत बात है न । बुढापे मे उनकी इतनी अवमानना तो न कीजिए ।"

"उनका तो बुढापा है । चार-छह साल में रवाना हो जाएँगी और मै उनके तय किए अनचाहे रिश्ते को जिंदगी-भर ढोता रहूँगा । नहीं, यह मुझसे नहीं होगा । तुम एक काम करो, बच्चो की मर्जी जानकर मुझे बता दो । ज्यादा टीम-टाम तो हमे करनी नहीं है । चार भले आदमियो की उपस्थिति मे किसी मदिर मे फेरे ले लेंगे । उसके बाद बच्चो को लेकर बाहर निकल जाएँगे । बवाल अगर कोई उठेगा भी, तो दो महीने मे दब जाएगा ।"

"आप जरा मेरी ओर से भी तो सोचकर देखिए । मुझे किसी बवाल की नहीं, सिर्फ मॉजी की चिता है । दो महीने बाद ही सही, घर तो लौटना होगा न तब ?"

"तुम छह महीने तक क्वार्टर रिटेन करने की सोच रही हो न । कुछ दिन तुम वहीं बनी रहना । साल दो साल बाद एक पोता उनकी गोद मे डाल देना, लाइन पर आ जाएँगी । सारा गुस्सा काफूर हो जाएगा ।"

"क्या कहा आपने, पोता ?"

"हॉ, मॉ के गुस्से का एकमात्र इलाज वही है । नेहा के जन्म के बाद ऐसे ही मुँह फुलाकर बैठ गई थीं । अशुल के पैदा होते ही पूनम उनकी ऑख का तारा बन गई थी ।"

"तो मॉजी को मनाने के लिए इस उम्र मे मुझे फिर मॉ बनना पडेगा ?"

"हॉ, और यह सिर्फ मॉ की नहीं, मेरी भी ख्वाहिश है । मुझे एक बेटा चाहिए । मुझे मेरा अशुल वापस चाहिए ।" कहते-कहते योगेश का स्वर कातर हो उठा । होठ थरथराने लगे । लगा कि जैसे रो ही देगे । थोड़ी देर बाद वह कुछ प्रकृतिस्थ हुए । बड़ी भीगी-सी आवाज मे बोले, "सच, कभी-कभी अंशुल बहुत याद आता है । तब मै सारी-सारी रात सो नहीं पाता हूँ । इतना तो मै कभी पूनम को भी याद नहीं करता, पर

अशुल जैसे एक दर्द बनकर मेरे कलेजे मे पैठ गया है । अब अगर मै शादी भी करने चला हूँ, तो एक इसी अरमान के साथ । मुझे मेरा अंशुल चाहिए, किसी भी कीमत पर चाहिए ।"

अनु का मन हुआ, कहे कि आप नकुल मे अशुल को देखने की कोशिश कीजिए, पर कह न सकी । वह उसके कहने की बात नहीं थी । योगेश खुद अगर ऐसा सोचते, तो बेटे के लिए इतना आतुर न होते और वह खुद भी तो नकुल को पूरा समय कहाँ दे पा रही है । उसने सौ तो शर्ते लगा रखी है । बच्चो पर अपना अधिकार वह रचमात्र भी कम नहीं होने देगी, तो फिर सामने वाले का दोष क्या है ?

बडी देर बाद थरथराती आवाज मे अनु ने पूछा, "क्या यह शादी के लिए अनिवार्य शर्त है ?"

"इसे शर्त मत कहो, अनु, यह मेरा अनुरोध है, इच्छा है, अरमान है, सपना है । आई वाट हिम बैक अगेन ।"

"मै शायद आपका यह अनुरोध, आपका सपना पूरा नहीं कर सकूँगी ।"

"क्यों ?"

"आपको शायद पता नहीं है, मेरा ऑपरेशन हो चुका है ।"

"ओ गॉड !"

"मेरे दोनों बच्चे सिजेरियन हुए है । इसीलिए नकुल के बाद मैने ऑपरेशन करवा लिया था । पूनम भी इस बात को जानती थी । आपके सामने शायद कभी जिक्र न चला हो ।"

"ऐसा भी नही है कि यह ऑपरेशन डेड लाइन हो । आजकल तो इसे सुधारा भी जा सकता है ।"

"क्या पता, लेकिन अब मै उस संभावना के लिए तैयार नहीं हूँ । इस उम्र में एक और बच्चा पैदा करके बच्चो को मै भावनात्मक त्रिकोण मे उलझाना नहीं चाहती ।"

"ओ गॉड, यह क्या हो गया ?" योगेश ने दोनो हथेलियो मे अपना चेहरा ढाँप लिया । कितनी देर तक वह उसी तरह सिर झुकाए, मुँह छुपाए बैठे रहे । अनु समझ गई कि उसका सामना करने की उनमे हिम्मत नहीं है । यह भी समझ गई कि दोनो के बीच जो कुछ था, वह शेष हो चुका है ।

फिर उसी ने साहस जुटाया । उनके कंधे पर हौले से हाथ रखकर बोली, "योगेश, अपने को सँभालिए । अभी कुछ नहीं बिगडा है । मॉजी की मर्जी से एक अच्छी-सी बहू ले आइए और घर चलाइए । ईश्वर आपका अंशुल आपको जरूर लौटा देगा । मेरी चिंता छोड दीजिए मैं मजे में हू जीवन में पाने योग्य जो भी था मैंने पा लिया है अब किसी

चीज की कामना नहीं है। नेहा की ओर से भी आप निश्चिंत हो जाइए। मेरा घर उसके लिए हमेशा खुला रहेगा। हम लोग अच्छे दोस्त थे और रहेंगे। नाऊ रिलेक्स।"

लौटते समय पिछली सीट पर बच्चे चहक रहे थे। पर सामने की सीट पर दोनों प्राणी खामोश बैठे थे। अनु ईश्वर को मन ही मन धन्यवाद दे रही थी कि अब तक उसने बच्चो के सामने यह बात नहीं उठाई थी, नहीं तो आज उन्हें मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहती।

गाड़ी से उतरकर बच्चे तो टाटा, बाय-बाय करते रहे, पर वह सीधी घर मे चली आई। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखने की भी जरूरत नहीं समझी।

बरामदे मे अम्मा के साथ सामने वाली मिश्राइन बैठी थी। आँखे मिचमिचाकर सड़क को घूरते हुए उन्होंने पूछा, "यह आपकी बगल वाले शुक्ला जी है न ?"

"हाँ, अब साकेत मे रहने लगे है।"

"इनकी शादी हो गई ? हमारे भैया पूछ रहे थे। उनकी पैंतीस साल की बिटिया कुँआरी बैठी है।"

"तो अपने भाई साब से कहिए, फौरन अर्जी लगा दे। वहाँ रोज के फोटो चले आ रहे है। कर्ता-धर्ता उनकी माताराम ही है। जाकर उन्हीं की चरण-वंदना कीजिए। शायद आपकी भतीजी के भाग्य खुल जाएँ।"

मिश्राइन ने पता पूछा, तो अनु ने तत्परता से पेन निकालकर पता भी लिख दिया। वह अनुभव कर रही थी कि इस बीच अम्मा की खोजी नजरे बराबर उसे घूर रही है। उनसे बचने के लिए वह फौरन अपने कमरे मे चली गई। इस समय उसे निपट एकांत की जरूरत थी, पर अम्मा को चैन कहाँ ? जैसे-तैसे अपनी सहेली को विदा करके वे भी कमरे मे चली आई। अनु तकिए मे मुँह छिपाकर लेटी थी।

उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए उन्होंने हौले से पुकारा, "अनु बेटे।"

इतनी देर से अनु अपने ऊपर मुश्किल से काबू किए हुए थी। माँ का स्नेहिल स्पर्श पाते ही वह बिखर गई। माँ की गोद मे सिर रखकर देर तक रोती रही। घुटी-घुटी सिसकियो के साथ अम्मा को सारा इतिहास बताती रही। रुलाई का आवेग थोड़ा थमने के बाद वह उठकर बैठ गई और भीगे स्वर मे बोली, "यह मुझे क्या हो गया था अम्मा ? क्यों मै अपना तमाशा बनाने पर तुली हुई थी ?"

"तुम्हारी कोई गलती नहीं है बेटे," अम्मा ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "पहल तो उसी ने की थी। अब हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। कायर कहीं का।"

"कायर वह नहीं है, अम्मा, मै हूँ। मैं उनकी फरमाइश पूरी नहीं कर सकती, इसीलिए पीछे हट गई हूँ।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है ? अगर वह सचमुच तुम्हें चाहता है, तो हाथ बढाकर रोक भी तो सकता था और अगर उसे सिर्फ बेटे की चाह थी, तो दर्जनो रिश्ते आ रहे थे, उन्हीं मे से एक को ब्याह लेता। बुढिया भी खुश हो जाती। तुमसे प्यार का नाटक रचाने की क्या जरूरत थी ? अच्छे-भले जी रहे थे हम लोग। बेकार मे तूफान खड़ा कर दिया।"

"शुक्र करो अम्मा कि तूफान उठने से पहले ही दब गया और किसी को पता नहीं चला।"

"ऐसा तुम सोचती हो, पर लोगो के पास आँखे है, जो देखती है। दिमाग है, जो अटकले लगाता है। तुम्हे क्या लगता है कि मिश्राइन के सचमुच कोई ब्याहने लायक भतीजी है ? वह तो तुम्हे टोह रही थी। सच, उस समय उस योगेश पर ऐसा ताव आ रहा था कि बस, सामने होता, तो ऐसी लानत-मलामत करती कि नानी याद आ जाती।"

"अब जाने भी दो अम्मा, सबकी अपनी मजबूरियाँ होती है।"

"अरे वाह, यह कौन-सी मजबूरी है कि आदमी अपनी ब्याहता को घर भी नहीं ला सकता। मान लो, तुम माँ बनने लायक होतीं, तो क्या यह गारटी दे सकती थीं कि पहले-पहल बेटा ही होगा ? बेटी भी तो हो सकती थी। फिर क्या बेटे के इंतजार मे इसी घर मे रखैल बनकर पड़ी रहती ?"

"छी:, अम्मा, अब बस भी करो।"

"सुनने में भी अच्छा नहीं लग रहा है न, पर यह शख्स तुम्हे ऐसी ही जिंदगी देने वाला था। अपनी माँ को सब प्यार करते है, सब इज्जत देते हैं, पर माँ के लिए कोई बीवी को देशनिकाला नहीं देता। इसीलिए कहती हूँ कि वह परले दर्जे का कायर है। चलो, जो कुछ हुआ, अच्छा ही हुआ। ऐसे डरपोक और ढुलमुल आदमी के साथ घर बसाने से अच्छा है, अकेले जिंदगी गुजार दो। ईश्वर की कृपा से तुम अपने पैरों पर खड़ी हो। किसी की मोहताज नहीं हो। यही समझ लेना कि एक बुरा सपना था।"

"वह सपना ही था अम्मा, पर चलो, इस बहाने एक आदमी की औकात का पता चल गया।"

एक पल आस्था का

घंटी का बटन दबाते हुए दृष्टि अकसर ही नेमप्लेट पर टँग जाती है । प्लेट पर जमी धूल के बावजूद अजय का नाम वहाँ दमकता रहता है । इस घर ने अजय की सारी स्मृतियो के साथ नाम को भी ज्यो का त्यो सहेजकर रखा है । उसे भी वह खारिज नहीं कर सके हैं । केवल क्षमा ही इस संसार से खारिज हो गई है, या कि कर दी गई है, पर इसे ठीक-ठीक निष्कासन भी तो नहीं कहा जा सकता । निष्कासित होती, तो क्या इस तरह बार-बार लौटकर इस दरवाजे पर दस्तक दे सकती थी ?

"यह दादी क्या कर रही हैं, दरवाजा क्यो नही खोलती ?" सोनू अधीर हो उठा था । क्षमा ने उसका हाथ न पकड़ा होता, तो वह शायद दरवाजा ही पीट डालता ।

"आ रही होंगी बेटे, दादी तुम्हारी तरह दौड़ थोड़े ही लगा सकती है । रसोई से यहाँ तक आने मे समय लगता ही है न !"

उसकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि दरवाजा खुल गया । दूसरे ही क्षण सोनू दादी के गले में झूल रहा था । आटा सने हाथों से ही वह उसे दुलरा रही थीं, चूम रही थीं । क्षमा मुग्ध होकर वह दृश्य देखती रही । उसके अंतर में एक टीस-सी उठी और ऑखे छलछला आईं ।

"कौन आया है ?" भीतर से बाबूजी की खरखराती आवाज आई । तब जाकर अम्माजी को होश आया कि क्षमा अब तक बाहर ही खड़ी है ।

"अरे, बाहर क्यो खड़ी हो ? भीतर आओ न !" उन्होंने दरवाजा छोड़ते हुए कहा । शायद उन्होंने इतनी देर बाद महसूस किया हो कि दरवाजा तो वे घेरकर खडी हैं । कोई भीतर आए भी, तो कैसे ।

उतनी देर मे बाबूजी फिर एक बार पुकार चुके थे । सोनू को लेकर अम्माजी उनके कमरे में गईं, "देखो तो, कौन आया है ?"

"अरे वाह ! हमारे छोटे साहब आए है !" बाबूजी ने गद्‌गद स्वर में कहा । अजय की मृत्यु के बाद से वह सोनू को छोटे साहब ही कहने लगे है । शायद उस शून्य को इस संबोधन से भरना चाहते हो ।

सोनू दौड़कर बाबूजी की गोद में चढ़ गया था । उसे चूमते हुए उन्होंने पूछा

"अकेला ही आया है ?"

"अकेला कैसे आएगा ? बहू भी आई है न ।" नाटक में अपनी एंट्री का इंतजार करते पात्र की तरह क्षमा एक ओर खडी थी । अम्माजी की बात से जैसे उसे क्लू मिल गया । उसने आगे बढकर पहले अम्माजी के, फिर बाबूजी के पॉव छुए ।

"जीती रहो बेटी, सदा सुहागन रहो ।"

क्षमा को लगा कि सदा सुहागन कहते हुए बाबूजी की आवाज कॉप गई है । उसने ऑखें उठाकर उनकी ओर देखा । हर बार की तरह आज भी लगा कि वे मृत्यु के एक कदम और पास पहुँच गए है ।

"आप कैसे हैं बाबूजी ?" कुछ पूछने की खातिर ही उसने पूछ लिया ।

"देख तो रही हो बिटिया ।" उन्होंने भी बस एक नामालूम-सा जवाब दे दिया । इस विषय पर कहने-सुनने के लिए अब कुछ नया था भी नहीं ।

सोनू की धींगामुश्ती शुरू हो गई थी । क्षमा ने जरा कड़े स्वर में उसे डपटना चाहा, "सोनू, नीचे उतरो । बाबूजी को तग नहीं करते ।" तो बाबूजी ने उसे रोक दिया, "करने दो बहू, वह कौन-सा मुझे रोज तग करने आता है । रोज तो यूँ ही पडे-पड़े खटिया तोडा करता हूँ । एक दिन थोडी वर्जिश ही सही ।"

बाबूजी का वह भीगा स्वर उसे भीतर तक मथ गया । अपने आँसू छिपाते हुए वह किचन में चली आई । अम्माजी कनस्तर मे से और आटा निकाल रही थी । कुल जमा दो प्राणियो की तो गृहस्थी है । गिनती की रोटियॉ बनती है । एक व्यक्ति भी बढ जाए, तो हिसाब गड़बडा जाता है ।

"अम्माजी, आप रहने दीजिए । मै बना लूँगी ।" उसने सिंक में हाथ धोते हुए कहा ।

"अरे, अभी पॉच मिनट में बन जाती हैं । तू आई है तो दो घड़ी आराम कर ।"

"अच्छा ऐसा कीजिए, आप आटा सानकर रख दीजिए, तब तक मै चाय बना लेती हूँ । आप लेंगी ।?"

"हॉ, दो घूँट ले लूँगी । अपने बाबूजी से मत पूछना । वह मना नहीं करेंगे, पर नुकसान करती है उन्हे ।"

वह चाय बना रही थी, तब तक पूरा घर गाडियों के शोर से भर गया था । बाबूजी ने शायद सोनू के खिलौनो की पेटी खोल दी थी । बेटे की यादों की तरह उन्होंने पोते के खिलौने भी सहेजकर रखे हुए है ।

"ओफ्फो ! अम्माजी, देखिए तो, बाबूजी भी कमाल करते है । सारे के सारे खिलौने निकालकर दे दिए । अब पूरे घर में पसारा हो जाएगा ।"

"हो जाने दे। भागवानों के घर मे ही पसारा होता है। साफ-सुथरे घर का कोई क्या करे ? रौनक तो तब होती है, जब पूरा घर इस तरह बिखरा होता है। तू उसकी चिंता मत कर। मै सब समेट लूँगी। मुझे और काम भी क्या है ?"

क्षमा फिर कुछ नहीं बोली। उसे मालूम है, इस घर में सोनू के खिलाफ एक अक्षर भी सुना नहीं जाएगा। कई बार उसे लगता है कि अच्छा हुआ जो वह सोनू को अपने साथ ले गई। यहाँ तो ये लोग उसे चौपट ही कर देते।

"उसे साथ क्यो नहीं लाई।" चाय पीते हुए अम्माजी ने पूछा।

"किसे ?"

"क्या नाम है उसका, जितेंद्र ?"

"सत्यजीत नाम है, जीतू बुलाते है।"

"हाँ, उसे भी ले आती न। हमें अच्छा लगता।"

"नहीं, अम्माजी, दोनों मिल जाते है, तो बहुत तग करते है। पॉच मिनट चैन से बैठने नहीं देते। वैसे भी वह अपनी दादी के बगैर रहता नहीं है।"

"ठीक तो है। बेचारों ने मॉ की तरह पाला है। कहते है, बीस दिन का था, जब उसकी मॉ मरी थी।"

अब वह अम्माजी को कैसे बताती कि वह जीतू को जानबूझकर साथ नही लाई। उसकी दादागिरी से निजात पाने के लिए तो वह सोनू को यहाँ लाती है। एक साल छोटा है सोनू से, पर हर वक्त उस पर हावी रहता है। इतनी-सी उम्र मे भी उसे एहसास है कि यह घर उसका है। इस घर की चीज—पापा और दादी भी उसके है, और वह हर वक्त उन पर अपना हक जताता रहता है। सोनू की तो वहाँ ले-देकर एक मम्मी है, वह भी दबी-दबी-सी रहती है। इसीलिए सोनू भी बेचारा बुझा-बुझा-सा रहता है। यहाँ आकर देखे कोई, कैसी धमाचौकड़ी चल रही है।

तब तक अम्माजी ने एक सब्जी का ठेला रोक लिया था। गोभी, मटर, आलू, टमाटर उसके सामने रखते हुए बोलीं, "फटाफट एक सब्जी बना लो बिटिया, घर में सिर्फ लौकी बनी है, वह भी बिलकुल फीकी। अब दो-दो सब्जियाँ नहीं बनाती न मै। जो उनके लिए बनाती हूँ, वही खा लेती हूँ।"

सब्जी छौंकते हुए उसने कहा, "अम्माजी, मैं गरम फुलके उतार रही हूँ। आप बाबू जी को आवाज दे दीजिए।"

"तेरे बाबूजी घर में है कहाँ। वे तो अपने राजकुमार के साथ बाजार गए है। तभी न घर मे इतना सन्नाटा है।"

"आप भी कमाल करती हैं अम्माजी ऐन खाने के वक्त उन्हे कहाँ भेज दिया ?"

"अरे, मै कौन होती हूँ भेजने वाली ? और मेरे कहने से क्या वह जाते है ? मुझे तो आज तक एक धनिया-पत्ती भी लाकर नहीं दी, पर सोनू के आते ही जैसे उनके पाँवों मे पख लग जाते है ।"

करने को तो अम्माजी शिकायत कर रही थी, पर उनके लहजे में जरा भी रोष या आक्रोश नही था । उन्हे तो जैसे यह सब कुछ बड़ा अच्छा लग रहा था ।

"मुझ पता होता तो कम से कम मै सोनू को तो रोक लेती । बाजार में ऐसा बवाल मचाता है कि बस । उसकी फरमाइशे खत्म ही नहीं होतीं । बहुत तग करता है ।"

"कर लेने दे । इसी बहाने कजूस दादा जी के चार पैसे तो खर्च होगे ।" अम्माजी ने मुस्कराकर कहा ।

बाबूजी बाजार से लौटे तो हाँफ रहे थे ।

साँस धौकनी की तरह चल रही थी । बाबूजी को इस तरह हाँफते देखती है, तो क्षमा को हमेशा डर लगता है, कहीं यह उनकी आखिरी साँस न हो ?

सोनू लेकिन खुशी से उछल रहा था, "मम्मी, देखो, दादी, देखो !" कह-कहकर अपनी सारी खरीदारी दिखा रहा था । क्षमा समझ गई कि उतनी-सी देर मे बाबूजी की जेब काफी हलकी हो गई होगी ।

"ऐसी भरी दोपहरी मे आने-जाने की क्या जरूरत थी बाबूजी ? ये चीजे तो शाम को भी लाई जा सकती थीं ।"

"अरे, ये सामान तो ऐसे ही खरीद लिया । मै तो खास इसके लिए गया था," उन्होंने रसगुल्ले का टिन पकड़ाते हुए कहा, "हमारे छोटे साहब की खास पसद ।"

"खाना खा लो । बहू आटा लगाकर बैठी है ।"

"आता हूँ भई । जरा साँस तो सम पर आने दो । जरा इत्मीनान से बैठकर खाना खाऊँगा । गरम फुलके रोज थोडे ही नसीब होते है ।"

"हाँ-हाँ, रोज तो मै जैसे बासी खाना ही खिलाती हूँ ।"

एक ओर खडी क्षमा उस नोकझोक का आनद लेती रही । उसे हँसी भी आ रही थी और करुणा भी, क्योंकि वह जानती थी कि यह लड़ाई नहीं है । मन में उमगती खुशी को बाहर निकालने का एक बचकाना तरीका-भर है ।

सोनू और बाबूजी को खाना खिलाने के बाद उन दोनो ने भोजन किया । क्षमा जब रसोई समेट रही थी, अम्माजी बरतन लेकर बैठ गई ।

"आजकल महरी नहीं आती क्या ?"

"अरे बहुत परेशान करती थी कोई टाइम टेबल ही नहीं था दो-दो दिन तक

गोल कर जाती थी, फिर मैने ही मना कर दिया । दो आदमियों की रसोई मे बरतन हं क्या निकलते है ? हाथो-हाथ हो जाते है ।”

“तो आप उठिए, मै करती हूँ ।” क्षमा ने कमर मे पल्लू खोंसते हुए कहा ।

“अरे, रहने दो ।” वह बोलीं, पर क्षमा के एक बार और इसरार करते ही उठ गईं । क्षमा जानती है, हाथ बॅटाना चाहो, तो वे मना नहीं करतीं, तुरत मान जाती है । बेचारी थक जाती होंगी । यह भी कोई उम्र है खटने की । इस उम्र मे तो औरत सपने देखती है सेवा करवाने के, पर भाग्य में हो, तब तो ।

पिछले दो-तीन बार से देख रही है कि बरतन वे खुद कर रही है । कभी महरी की बीमारी का बहाना बना देतीं । कभी कहतीं, शादी मे गई है, पर सच आज सामने आ ही गया, पर उससे भी बड़ा सच यह है कि महरी की पगार अखर रही होगी और इन लोगो का कोगी पगार से कभी मन भरता है ? ऊपर से और भी बहुत कुछ देना पड़ता है । उतनी-सी पेशन मे यह सब कैसे सभव है ?

यह तो अच्छा हुआ कि बेटे के राज में छोटा-सा ही सही, अपना एक घर हो गया । घर मे फ्रिज, कूलर, मिक्सर, टी०वी० सब आ गया, पर गुजारा तो पेशन पर ही करना पड़ता है । नौकर रखने लायक शाहखर्च तो वह हो नहीं सकते ।

रसोई समेटने के बाद उसने कहा, “अम्माजी, कुछ बीनने-चुनने का हो, तो निकाल दीजिए । कुछ सिलाई का काम हो, तो वह भी बता दीजिए ।”

“सोओगी नहीं ?”

“नहीं, आप लेटिए,” उसने अम्मा जी के लिए चटाई बिछाते हुए कहा, “मुझे दिन मे नींद नहीं आती, आप जानती तो है ।”

अम्मा जी ने दाल-चावल के डिब्बे और राई-जीरा वगैरह की पुड़ियाँ उसके सामने लाकर रख दीं । बटन टॉकने के लिए दो कुरते भी निकालकर दे दिए । चुटकी-भर सुपारी मुँह मे डालकर वह लेटी ही थीं कि सोनू ठुनकता हुआ आया, “दादी, हम शरबत पिएँगे ।”

“अभी नहीं बेटे । अपन चार बजे बनाएँगे ।”

“नहीं, हमें अभी बनाकर दो ।”

“सोनू,” क्षमा ने डपटा, “यह क्या हो रहा है ? क्यों दादी को तंग कर रहे हो ?”

“करूँगा, वो मेरी दादी है ।”

“तुम्हारी दादी है, तो क्या दो घड़ी आराम भी नहीं करने दोगे ?”

“रहने दे बहू, वह कौन-सा रोज मुझे तग करने आता है । सुबह से शाम तक पसरी ही रहती हूँ । चल बेटा अपन शरबत पिएँगे ।” घुटनों पर हाथ देते हुए वह उठीं ।

अनजाने ही उनके मुँह से एक कराह-सी निकल गई । थकान और पीड़ा के चिह्न चेहरे पर साफ झलक रहे थे, पर वह बड़े मनोयोग से अपने नन्हे राजकुमार के लिए शरबत का सरजाम करती रहीं और क्षमा असहाय-सी सब देखती रही ।

आजकल सोनू ने यह नया तमाशा शुरू किया है । यहाँ आकर वह इसी तरह बात-बात पर ठुनकने लगता है । जानता है कि यहाँ उसकी हर फरमाइश पूरी होगी और मम्मी डाँट भी नही पाएँगी । दरअसल वह जाने-अनजाने जीतू की नकल करने लगा है । वह भी इसी तरह अपनी दादी को परेशान करता है । वह भी बारह साल की बच्ची की तरह उसके आगे-पीछे डोलती रहती है । कभी-कभी तो इतना गुस्सा आता है कि ।

शरबत पीने के बाद सोनू दादी की बगल में आकर लेट गया, "दादी, कहानी सुनाओ न ।"

"बेटे, दिन मे कहानी नहीं सुनाते । मामा रास्ता भूल जाता है ।"

"जीतू का मामा तो रास्ता नहीं भूलता । उसकी दादी तो उसे रोज कहानी सुनाती है ।"

"वह तेरी भी दादी है बेटे ।"

"नही, मुझे वैसी वाली दादी अच्छी नहीं लगती ।"

"क्यो रे, वो तो खूब सुंदर है ? एकदम गोरी-चिट्टी ।"

"एक बार बोल दिया न, वो हमे अच्छी नहीं लगतीं ।"

"सोनू, यह क्या बदतमीजी है ? आवाज नीची करो ।"

"हम आपसे बात नहीं कर रहे है । हम अपनी दादी से बोल रहे है ।"

उसे तड़ से एक जड देने की इच्छा हुई, पर उठा हुआ हाथ बीच मे रुक गया । पता नहीं अम्माजी क्या सोचेंगी ? उन्हे लगेगा कि वहाँ भी इसी तरह मारती-धमकाती रहती होगी । तभी तो बच्चा ऐसा कुम्हलाया-सा रहता है । कभी-कभी लगता है, जैसे सोनू उसका बेटा नहीं, किसी की अमानत है । उसका काम सिर्फ उसकी परवरिश करना है ।

अपने को थोड़ा संयत करके उसने सोनू से कहा, "तुमने शरबत पी लिया न । अब जाओ, दादाजी के पास जाकर चुपचाप सो जाओ । चार बजे तक कोई आवाज नहीं होगी''समझे ?

सोनू समझ गया कि मम्मी के आदेश पर कोई अपील नहीं हो सकती । चुपचाप दादाजी की बगल मे जाकर लेट गया ।

"जीतू की देखा-देखी बहुत जिद्दी होता जा रहा है ।"

"क्या वह बहुत जिद्दी है ?"

"और क्या ? दादी उसे पान-फूल की तरह सहेजती जो है कहती है मैं इसकी

दादी नही, माँ हूँ । बीस दिन का था, जब से पाल रही हूँ । इसके आँसू मैं देख नहीं सकती ।"

"तुम कुछ कहती नही ?"

"क्यों कहूँ ? सौतेली माँ तो वैसे ही बदनाम होती है । साफ दिख रहा है कि बच्चा बरबाद हो रहा है, पर चुपचाप देखती रहती हूँ । उसकी देखा-देखी यह भी बिगड़ रहा है, पर बार-बार अपने बच्चे को डाँटना अच्छा भी तो नहीं लगता ।"

कहते-कहते ही उसके मन मे सोनू के लिए ममता उमड आई । नाहक बेचारे को झिड़क दिया । यहीं आकर तो थोड़ी मन की कर पाता है । वह चुपचाप उठी और बाबू जी के कमरे मे झाँक आई । सोनू सो गया था । दोनों टाँगे बाबूजी के ऊपर थीं । यह भी एक तरह से जीतू की नकल ही थी । उसे ठीक से सुलाने का खयाल भी आया, पर बाबूजी की नींद टूट जाने के डर से चुपचाप अपनी जगह पर आकर बैठ गई ।

"वे उसे प्यार तो करती है न ?" अम्माजी ने बातो का सिलसिला पुन प्रारभ करना चाहा ।

"कौन ? मम्मी जी ? क्या पता, करती भी होगी । कम से कम दुत्कारती तो नहीं है । मेरे लिए इतना ही बहुत है और वह दुष्ट है न, वह तो सोनू को दादी के पास फटकने भी नहीं देता । जैसे वह उसकी अकेले की प्रॉपर्टी है ।"

"श्रीराम !" अम्माजी ने एक उसाँस भरी और करवट बदलकर लेट गईं, पर क्षमा बिना देखे भी जान गई कि इस समय उनकी आँखें गीली हो रही थीं ।

कब झपकी लग गई, पता ही नहीं चला । क्षमा वहीं नंगे फर्श पर हाथ का तकिया बनाकर लेट गई थी । अम्माजी ने चाय के लिए जगाया, तब पाँच बज रहे थे ।

"कुछ बिछाकर तो सोती बिटिया, शरीर अकड जाएगा न !"

कप हाथ मे लेते हुए उसने देखा कि अम्मा-बाबूजी कहीं जाने के लिए तैयार खड़े हैं । सोनू जी भी बैग से कपडे निकालने की कोशिश कर रहे है ।

"आप लोग कहीं जा रहे हैं ?" उसने सोनू को कपड़े पहनाते हुए पूछा ।

"हाँ, थोडा बाजार हो आते है ।"

"अभी सुबह तो इतनी सारी चीजे लाए है ।"

"वो तो फालतू-सी चीजे थीं । इसका जन्मदिन आ रहा है न ! एक ड्रेस ले आते ।"

"उसमे तो अभी डेढ़ महीना बाकी है, बाबूजी, तब तक तो यह उन कपड़ो की गत ॥ देगा ।"

"कोई बात नहीं। हमारी तरफ से एडवांस गिफ्ट ही सही। बेटे, तुम डेढ़ महीने की बात करती हो, मुझे तो अपने कल पर भी भरोसा नही रहा है। इसीलिए जो बात मन मे उठती है, कर डालता हूं। उसे अगली घडी पर नही छोड़ता।"

वह चुप हो गई। बाबूजी आजकल बात-बात पर मृत्यु का हवाला देने लगे है। जवान बेटे की मृत्यु ने उन्हे जीवन की क्षणभगुरता का निकट से परिचय करवा दिया है। जाने के लिए दोनो मानसिक रूप से तैयार बैठे है। पता नहीं, कौन पहले जाएगा, पर पीछे जो भी रहेगा, वह बहुत दुखी होगा।

उन लोगो के चले जाने के बाद क्षमा को अहसास हुआ कि उससे एक बार भी चलने को नहीं कहा गया। शायद वे सोनू के सान्निध्य में किसी से हिस्सा-बॉट करना नहीं चाहते थे, या शायद सोनू ने ही मना कर दिया हो। उसे आजकल मम्मी की टोकाटाकी अच्छी नहीं लगती।

अब इस खाली समय का वह क्या करे ? शाम के खाने का भी कोई झझट नहीं है। बाबूजी तो रात को खिचड़ी ही खाते है। सुबह की सब्जी और दो-चार रोटियॉ पडी है। सास-बहू आराम से खा लेगी। न हुआ, सोनू के लिए दो परॉठे सेक देगी।

उसने रसोई पर सरसरी नजर डाली। वहॉ काफी कुछ करने की गुजाइश थी। अम्माजी से तो आजकल कुछ होता नहीं है। सारा उत्साह ही जैसे निचुड़ गया है।

स्टूल पर चढकर उसने शेल्फ से सारे डिब्बे उतार लिए। आधे से ज्यादा तो खाली ही थे। उन्हें अलग करके शेष डिब्बो को उसने धो-पोछकर चमकाया और तरतीब से जमा किया। किचन-टेबल पर लगी कालोंच चाकू से रगडकर साफ कर दी। सिंक मे ब्रश फेरा। पानी भरने के बरतनो को मॉजकर रख दिया।

रसोई के बाद उसने बाबूजी के कमरे की ओर रुख किया। उनके पलग की चादर बदली। किताबो की अलमारी ठीक से जमाई। इधर-उधर पड़े हुए अखबारों को तहाकर रखा। दवाइयो की अलमारियो का कागज बदला। खाली शीशियॉ और दवाइयो की पन्नियॉ डस्टबीन में फेक दी।

फ्रीजर खोलकर देखा, डीफ्रास्ट करना जरूरी था। उसे रात के लिए मुल्तवी करके उसने सोफा कवर बदले, कार्पेट झटकारा। जूतों की अलमारी ठीक की। टी०वी० का स्क्रीन पोछते हुए अनायास उसकी नजर अजय के फोटो से टकराई और उसके हाथ वहीं रुक गए। इतने मनोयोग से वह काम किए जा रही थी कि अनायास एक धक्का-सा लगा। वह यहॉ क्या कर रही है ? क्यो कर रही है ? इस घर मे उसकी दखलदाजी कहीं अनधिकार चेष्टा तो नहीं ? इस ललक से उसने अपने नए घर मे तो कभी कोई काम नहीं किया क्यों ?

क्योंकि वह घर मम्मीजी का था। वह गृहस्थी मम्मीजी की थी। उस घर की हर वस्तु पर उनकी छाप थी। छोटे-बड़े हर निर्णय पर उनकी मुहर थी। नाश्ते मे क्या बनेगा, खाने मे सब्जी कौन-सी पकेगी, दाल कौन-सी चढ़ेगी, सब वही तय करती थीं। धोबी की डायरी, दूध के कूपन, बनिए की कॉपी, गैस की पासबुक, सब कुछ उनके पास था।

बेचारी अम्माजी निवृत्त होने के बाद दोबारा जबरदस्ती गृहस्थी मे झौक दी गई थीं। अब वे बेमन से बेगार ढो रही थीं, पर मम्मीजी तो शायद कभी निवृत्त हुई ही नहीं, न मन से, न शरीर से। बहू के आने के बाद शायद स्थितियाँ कुछ बदली होगी, पर उसके लिए भी समय कहाँ मिला। साल-भर तो तीज-त्योहार और सैर-सपाटे मे ही निकल गया होगा। उस दौरान जीतू ने भी अपने अस्तित्व की सूचना दे दी थी। जीतू के जन्म के बाद तो बीसवे दिन ही बेचारी चल बसी। कुल पद्रह महीनो में सारा नाटक समाप्त हो गया। घर की जिम्मेदारियों के साथ मम्मीजी पर एक बच्चे का बोझ भी आ पड़ा, पर वे उसे खूब मुस्तैदी से निभा रही है। बेटे की गृहस्थी मे वे इतनी रच-बस गई है कि कभी लगता ही नहीं है कि वह मजबूरी मे यह सब कर रही है।

क्षमा ने सोचा था, उसके जाते ही वह कहेगी, 'लो भई, अब अपना कारोबार सँभालो और मुझे छुट्टी दो।' पर उन्होंने कभी कहा ही नहीं। शादी को तेरह महीने हो चले है, पर क्षमा की हैसियत अब भी वहाँ मेहमान की तरह ही है। कभी-कभी उसे लगता है, कहीं वह अनचाही मेहमान तो नहीं है? अपने सुदर्शन पुत्र के लिए मम्मीजी ने जरूर किसी कुँआरी कन्या की कामना की होगी। बेटा अगर जिद पर न अड़ गया होता, तो वह अपनी कामना जरूरी पूरी करके रहतीं।

तीनो बाजार से लौटे, तब दीया-बत्ती हो चुकी थी। सोनू तो किलकारियाँ भरता हुआ लौटा था, पर वे दोनो बेहद थक गए थे। अम्माजी ने आते ही क्लात-श्रात स्वर मे कहा था, "एक कप चाय बना दे बिटिया, अपने बाबूजी को भी देना। एकदम पस्त हो गए है।"

वह कहना चाहती थी कि ऑटो कर लिया होता, पर चुप रह गई। घर की चरमराती आर्थिक अवस्था वह देख रही है। उस पर सोनू की मेहमाननवाजी का अतिरिक्त भार भी वह महसूस कर रही थी। चुपचाप चाय बनाने चली गई।

चाय लेकर बाहर आई तो देखा, सोनू तो कपड़े बदलकर टी०वी० के सामने डट गया है, पर दोनो प्राणी कमरे में है। अम्माजी तो कोरी साड़ी पहनकर ही बिस्तर में पसर गई थीं। बाबूजी आरामकुर्सी में लेटे हुए थे।

"घर को देखकर ही लगता है कि यहाँ लक्ष्मी का फेरा हुआ है।" अम्माजी ने

कहा ।

"और क्या, तुमने तो इसे भूतों का डेरा बना डाला था ।"

अम्माजी उखड गईं, "देखो, दो वक्त पकाकर दे रही हूँ, इसे ही गनीमत समझो । इससे ज्यादा का मेरा बूता नहीं है, हाँ ।"

"जानता हूँ भागवान, सब समझता हूँ । मैं तो मजाक कर रहा था, पर तुम तो आजकल मजाक भी नहीं समझतीं । एकदम चढ़ बैठती हो ।" फिर बाबूजी क्षमा की ओर मुखातिब हुए, "सुन बिटिया, सिर्फ हम ही तुम्हारा इंतजार नहीं करते । यह घर भी तुम्हारी बाट जोहता रहता है ।"

बाबूजी का स्वर भीगा हुआ था । क्षमा का भी गला भर आया । बोली, "बाबूजी, मैंने तो कभी इस घर से जाना नहीं चाहा था । आप ही ने ।"

"हाँ, मैंने ही जबरदस्ती तुम्हें भेज दिया । यही न ? यह काम मैंने बहुत खुशी से नहीं किया बिटिया, कलेजे पर इतना बडा पत्थर रखना पड़ा था । बहुत मजबूरी मे मैंने यह कदम उठाया था, क्योंकि जमाना बहुत खराब चल रहा है । एक अकेली औरत को लोग चैन से जीने नहीं देते । तुम्हारा कोई भाई होता या माँ ही जिंदा होतीं, तो कोई चिंता नहीं थी, पर केवल हमारे सहारे तो तुम इतना बडा जीवन काट नहीं सकती थी । उन दिनों तुम नौकरी पर भी जाती थी, तो तुम्हारे लौटने तक हमारे प्राण अधर में लटके रहते थे । अब तुम अपने घर मे सुरक्षित हो । हम लोग भी चैन की नींद सो लेते है ।"

"कभी-कभी लगता है बाबूजी कि सोनू के हक में यह अच्छा नहीं हुआ । मुझे तो घर मिल गया, पर एक तरह से वह बेघर हो गया है, अपनी जडो से उखड़ गया है । काश, वह यहाँ रह पाता ।"

"अगर उसे ही रखने लायक होते, तो क्या हम तुम्हे यहाँ से जाने देते ? नहीं बिटिया, हमारा अब कोई भरोसा नहीं है । पके फल हैं, किस दिन टपक जाएँगे, कह नहीं सकते । फिर तो उसे तुम्हारे पास भेजना ही पड़ेगा । उतनी देर बाद क्या वह उस घर मे एडजस्ट हो पाएगा । क्या वे लोग उसे सहज भाव से स्वीकार कर पाएँगे ? और हम उसे रख भी ले, तो बच्चे के मन में सदा के लिए एक गाँठ पड़ जाएगी कि मम्मी अपने सुख के लिए मुझे छोड़कर चली गई । और सच बात तो यह है बेटा कि हम लोग उसे केवल प्यार दे सकते है, दुलार दे सकते है, पर बढ़ते हुए बच्चे के लिए रखरखाव भी जरूरी है, सार-सँभाल भी जरूरी है । यह काम दादा-दादी के वश का नहीं है । इसके लिए माँ-बाप दोनों का स्नेह चाहिए, अनुशासन चाहिए । तुम यह बात मन से एकदम निकाल दो कि तुम सोनू के साथ कोई अन्याय कर रही हो । मैंने इस शादी मे केवल तुम्हारा कल्याण नहीं देखा था । सोनू के उज्ज्वल और सुरक्षित भविष्य का भी सपना देखा था ।"

बाबूजी उसे हमेशा इसी तरह आश्वस्त करते है, सात्वना देते है । उतनी देर व मन मान भी जाता है, पर वहॉ जाते ही सब उलट-पुलट हो जाता है । वह घर अभी ढ‌ से उसका भी नहीं हो पाया है । सोनू का तो सवाल ही नही उठता ।

सुबह-सुबह सोनू ने पेपर मे 'जगल बुक' का विज्ञापन पढ लिया था और वह जिद पकड गया । क्षमा ने आस-पास पता लगाया । एक-आध हमउम्र तो मिल गया, पर कोई भी बड़ा बच्चा साथ जाने के लिए राजी नहीं हुआ । अकेले भेजने का तो प्रश्न ही नहीं था ।

"बच्चे भो आजकल बच्चो वाली फिल्मे कहाँ देखते है । उन्हे भी चटपटी, मसालेदार फिल्मे अच्छी लगती है," क्षमा भुनभुना रही थी, "मैने ढेर सारे कपड गला रखे है । फ्रिज भी डीफ्रास्ट हुआ पड़ा है । नही तो मै ही चली जाती, पर दस बजे तक तो यह सब समेटना मुश्किल है ।"

"तो हम चले जाते है ।" बाबूजी ने कहा ।

"आप ?"

"क्यो ? हम क्या इतने बूढ़े हो गए है कि पिक्चर भी नहीं जा सकते ? क्यो भागवान ?"

क्षमा ने तो सोचा था कि अम्माजी साफ मना कर देगी, पर वे तो एकदम तैयार हो गईं । क्षमा समझ गई कि वह जैसे सोनू के साथ का एक पल भी खोना नहीं चाहतीं । बाबूजी भी जैसे सोनू की हर इच्छा पूरी करने का सकल्प लिए हुए है, फिर उसने कोई प्रतिवाद नहीं किया और सोनू को तैयार करने लगी ।

चलते समय सोनू का वाटरबैग, सैडविच और रूमाल के साथ एक पचास का नोट भी अम्माजी के हाथ में ठूँस दिया, "बाबूजी से तो कहते मुझे सकोच होता है, पर आप लोग बस या टेपो के झंझट में मत पड़िएगा । दोनो वक्त ऑटो ही कीजिएगा ।"

बाबूजी से कहते हुए सचमुच सकोच होता है । उनका आजकल एक ही तकिया-कलाम है, 'हमने तुम्हारा कन्यादान किया है । अब तुमसे कुछ लेने का हमारा हक नहीं बनता ।'

अब तो वह यह भी नहीं कह सकती कि मेरे पैसों पर न सही, बेटे की पेंशन पर तो आपका हक है । बाबूजी जानते हैं कि इस शादी के साथ वह पेंशन भी बंद हो गई है ।

उन लोगो के जाने के बाद उसने सबसे पहले कपड़ो को निबटाया । जब भी यहाँ आती है, घर के परदे, चादरें और बाबूजी के बाहर आने-जाने के कपड़े धोकर जाती है । अम्माजी का काम उतना ही हलका हो जाता है ।

कपडो के बाद उसने फ्रिज की ओर रुख किया । बारह घटे बाद भी बर्फ पूरी तरह

पिघली नहीं थी । इक्के-दुक्के टुकडे अभी भी यहाँ-वहाँ फँसे हुए थे । उसने जतन से धो-पोछकर फ्रिज को चमकाया, फिर सारा सामान यथास्थान जमा दिया । सामान वैसे था ही क्या ? हाँ, पाँच-छह तरह की सब्जियाँ जरूर थीं । वे क्षमा ने ही खरीदी थीं । उन्हें बीन-चुनकर प्लास्टिक की अलग-अलग थालयो मे रखने के बाद उसने फ्रिज को बद कर दिया । बटन चालू करके आसपास बिखरा पडा पानी पोंछ रही थी कि दरवाजे की घटी बजी ।

दरवाजा खोलकर देखा, श्यामसुदर थे ।

पता नहीं क्यो इस घर मे उन्हे देखकर वह असहज हो जाती है ?

"अदर आ सकता हूँ ?"

"ओह, आइए न, बैठिए ।" उसने कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा और पानी लाने चली गई । अपनी शर्म और हड़बड़ाहट छिपाने का यही एक उपाय था ।

"और लोग कहाँ है ?" पानी का गिलास लेते हुए श्यामसुदर ने पूछा ।

"पिक्चर गए है । सोनू बहुत जिद कर रहा था ।"

"अच्छा हुआ, जो तुम नहीं गईं । नहीं तो मेरा चक्कर बेकार हो जाता ।"

"कोई खास काम था ?"

"यहाँ आने के लिए कोई खास काम ही होना चाहिए ? तुमसे मिलने भी तो आ सकता हूँ ।"

"मेरा मतलब यह नहीं था । मेरा मतलब था कि··· ।" उससे वाक्य पूरा करते नहीं बना, क्योकि अभी-अभी उसने लक्ष्य किया था कि वे दोनों अजनबियों की तरह आमने-सामने बैठे हुए है । वह उनसे एक सुरक्षित दूरी बनाए हुए है और नितात औपचारिक ढंग से बाते कर रही है ।

"तुम्हारा मतलब कुछ भी रहा हो, मै बुरा नहीं मानूँगा, क्योकि मै इससे भी कडवी बाते सुनकर आ रहा हूँ ।"

"कहाँ से ?"

"साकेत से ।"

"हे भगवान् ! आप साकेत क्यो गए थे ?"

"मेरी किस्मत खराब थी और क्या ? मम्मी ने बताया तुम घर गई हो, तो सीधे तुम्हारे पापा के यहाँ चला गया । यहाँ का खयाल ही नहीं आया ।"

अब क्षमा कैसे कह दे कि घर के नाम पर यही घर याद आता है । पीहर का तो खयाल ही नहीं आता ।

"दरअसल सोनू बहुत जिद कर रहा था ।" उसने केन्से स्वर में कहा

"ठीक तो है। ये लोग भी उसकी बाट जोहते रहते हैं।"

"हाँ, सोनू के आने से उनकी जिदगी में थोड़ी-सी रौनक हो जाती है। देखिए न कल से उसे लेकर घूम रहे है। पता नहीं, कितना रुपया फूँक डाला होगा। मुझे तो कभी-कभी इतना सकोच हो जाता है।"

"कभी-कभी साकेत भी हो आया करो। तुम्हारे पापा भी एकदम अकेले हैं।"

"कुछ कह रहे थे ?"

"खूब सनक रहे थे। मैंने तुम्हारे बारे मे पूछा तो वे बोले, वह यहाँ क्यो आने लगी ? उसके सगे तो वहाँ विष्णुपुरी मे बसते है। उन लोगो ने शादी क्या करवा दी, वे उसके लिए सबसे बड़े धर्मात्मा, पुण्यात्मा हो गए। कल को जब बेटे को बेदखल कर देगे, तब इसे अकल आएगी। फड पर तो हाथ साफ कर ही दिया है। अब पेंशन भी डकार रहे है।"

"क्या बात करते है ? आपने बताया नहीं कि ।"

"अरे भई, सब बता दिया। पहले भी कई बार बता चुका हूँ कि फड फिक्स्ड में डाल दिया है। पेशन सोनू के नाम से जमा हो रही है। उसे क्षमा की मर्जी के बिना कोई छू भी नहीं सकता, पर उन्हें विश्वास ही नहीं होता। उन्हे तो यह भी डर है कि ये लोग सोनू को जायदाद से बेदखल कर देगे।"

"कौन-सी जायदाद ? यही छोटा-सा घर न।"

"हाँ, पापा को डर है कि बाबूजी यह घर अपनी बेटी के नाम कर जाएँगे और सोनू टापता रह जाएगा। कह रहे थे, मेरी बेवकूफ बेटी ने अपने लिए तो घर ढूँढ़ लिया, पर अपने बेटे को बेघर कर दिया।"

शर्म और संकोच से गड़ गई क्षमा। उसे पापा पर इतना गुस्सा आ रहा था। यह बात क्या उसके पति से कहनी चाहिए ? पता नहीं क्यों वह क्षमा की इस दूसरी शादी से बौखलाए हुए हैं। शायद उन्हे बाबूजी की नीयत पर भरोसा नहीं है, या कि उन्हे उम्मीद थी कि पति की मृत्यु के बाद क्षमा उनके पास आ जाएगी और उनका बुढ़ापा आराम से कट जाएगा, पर यह शादी नहीं भी होती, तो क्षमा अम्मा-बाबूजी के पास ही रहती। पापा के पास कभी भी नहीं जाती, सोनू को लेकर तो कभी भी नहीं। अब भी अगर लौटना हुआ, तो वह इसी घर मे लौटेगी। शादी से पहले तो खैर मजबूरी थी, पर अब वह उस निरकुश शासन को झेल नहीं पाएगी।

सोनू जी बिगुल बजाते हुए ही घर में दाखिल हुए थे, पर अतिथि को देखकर एकदम चुप हो गए।

"हैलो सोनू जी, यह क्या ले आए है आप ? जरा हमें भी तो दिखाइए ।"

सोनू चुपचाप उनके पास चला गया । उनकी गोद मे बैठकर प्रश्नो के उत्तर देता रहा, पर उसके चेहरे से तनाव साफ झलक रहा था ।

"दादा-दादी कहाँ है ?" क्षमा ने पूछा ।

"आ रहे है ।" उसने मरियल-सी आवाज में जवाब दिया ।

क्षमा दरवाजे पर जाकर खड़ी हो गई, जैसे कि स्वागत करना बहुत जरूरी हो । वे लोग अपनी गति से सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे ।

"कौन आया है ?" बाबूजी ने पूछा ।

"जीतू के पापा ।" क्षमा ने कहा और खुद ही झेप गई । पता नहीं क्यों, श्यामसुदर के लिए यही संबोधन याद आता है । क्या वे कभी सोनू के पापा हो सकेंगे ।

श्यामसुदर ने आगे बढकर दोनो के पैर छू लिए । गद्‌गद होकर आशीर्वाद देते हुए अम्माजी ने कहा, "मुन्ने को भी ले आते बेटा ।"

"जी, वह मम्मी के बिना रहता कहाँ है ?"

"एक दिन बहनजी को भी लेकर आना बचवा ।"

"समधिन है हमारी । क्या ऐसे ही आ जाएँगी ?"

"आप भी कैसी बात करते है । अगली बार जरूर लेकर आऊँगा । निमत्रण की जरूरत नहीं है ।"

क्षमा चाय बनाने के बहाने भीतर चली गई । उसे अपने ऊपर बेहद गुस्सा आ रहा था । जो बात अम्मा-बाबूजी इतनी सहजता से कह गए, वह उसके मन में क्यों नहीं उठी ? इतनी देर बैठी रही, पर एक बार भी उसने जीतू के बारे में नहीं पूछा । खुद तो चाहती है कि सामने वाला उसके बच्चे को बाप का प्यार दे, पर वह खुद क्या कभी जीतू को माँ की नजरो से देख पाई है ? मम्मीजी के प्यार का मजबूत घेरा उसके चारों ओर है, तो क्या हुआ ? उसने भी तो कभी उस घेरे को तोड़ने की कोशिश नहीं की । श्यामसुदर तो जब-तब सोनू को दुलरा भी लेते है, पर वह तो हमेशा निर्लिप्त-सी बनी रहती है ।

वह चाय लेकर बाहर आई तो बाबूजी ने कहा, "बेटे, अपना सामान समेट लो । श्यामजी तुम्हें लेने आए है ।"

उसने श्यामजी की ओर देखा । वे सोनू से बतियाने मे व्यस्त थे ।

"बहनजी आज सुबह बनारस गई है । उनके भाई बहुत बीमार है ।"

"और जीतू ?"

"वह घर पर अकेला है इसीलिए तो तुम्हें लेने आए हैं वैसे बेटे उसे भी यहीं

ले आते सुबह सब लोग साथ निकल जाते

सुबह आने से नहीं चलता बाबूजी, सोनू का स्कूल तो ग्यारह बजे से है, पर जीतू की बस तो सुबह साढ़े सात पर ही आ जाती है।"

"अभी उसे कहाँ छोड़ आए हैं ?" क्षमा खुश थी कि कम से कम उसे यह पूछने का तो होश रहा।

"अभी तो पड़ोस में सन्ध्या के पास छोड़ आया हूँ। सीधे यहाँ आता तो शायद ले भी आता।"

ठीक ही तो किया जो छोड़ आए। पापा के यहाँ उसे ले जाते, तो पता नहीं और भी क्या-क्या सुनना पड़ता। वह तैयार होने के लिए भीतर गई तो सोनू पीछे-पीछे चला आया। उसका मुँह इतना-सा निकल आया था।

"मम्मी, क्या हम लोग वापस जा रहे हैं ?"

"हाँ, बेटा ?"

"पर क्यों ? आपने तो कहा था, मंडे तक रहेंगे।"

"कहा था, पर वहाँ अपना जीतू अकेला है न, इसीलिए जा रहे हैं।"

"क्यों ? उसकी बड़ी मम्मी कहाँ गई ?"

"बेटे, वह आपकी भी बड़ी मम्मी हैं।"

"ठीक है, पर वे गईं कहाँ ?"

"बनारस गई हैं। बड़े मामाजी वहाँ बीमार हैं न। अब जीतू घर पर एकदम अकेला है, तो उसने पापा से कहा कि सोनू भैया को ले आइए। इसीलिए पापा को आना पड़ा।"

सोनू बहुत खुश तो नहीं हुआ, पर उसके चेहरे का तनाव जरूर कम हो गया। हमारी किसी को जरूरत है, यह बात बच्चों के अहं को भी तृप्त करती है जैसे।

"दादाजी, मैं अपना नया वाला हेलीकॉप्टर ले जाऊँ ?"

"बिलकुल ले जाओ। तुम्हारे लिए ही तो लाए हैं।"

"और पुरानी वाली ट्रेन ?"

"वह भी ले जाओ और नई वाली ड्रेस भी। जन्मदिन पर पहनना।"

"सोनू के जन्मदिन पर आपको भी आना है, बाबूजी।" श्यामसुंदर ने कहा तो क्षमा को अच्छा लगा। सोनू का पिछला जन्मदिन तो शादी के तुरत बाद ही पड़ा था। वह जानबूझकर चुप कर गई थी। सोनू को भी अपना जन्मदिन जीतू की बर्थ-डे पार्टी पर याद आया था। तब श्यामसुंदर ने क्षमा को बहुत डाँटा था।

इस बार तो सोनू का जन्मदिन भी उतनी ही धूमधाम से मनेगा, वह जानती है।

नीचे उतरने तक उसने बडी मुश्किल से सब्र किया । सडक पर आते ही बोली, "चलने के लिए आप मुझसे भी तो कह सकते थे । बाबूजी से कहलवाने की क्या जरूरत थी ?"

"दरअसल मैं थ्रू प्रॉपर चैनल एप्लाई करना चाहता था । इससे बड़े लोग जरा खुश हो जाते है ।"

"अरे, बहुत खुश है वो । दोनो ने आपको ए ग्रेड दे रखी है ।"

"वैसे उनसे थोड़ा-सा झूठ बोला हूँ मै । मामाजी कल रात को ही कूच कर गए है, पर बुजुर्गों को एकदम किसी की मौत की खबर नही सुनानी चाहिए । शॉक लगता है । इसीलिए तो मैंने जीतू को भी मम्मी के साथ नहीं भेजा । बच्चे भी उस माहौल से खौफ खा जाते है । पिछली बार नानी के समय गया था, तो बहुत अपसेट हो गया था । हफ्तो गुमसुम बना रहा । ऊटपटॉग सवाल पूछता रहा । मम्मी उसे छोडकर जाने को तैयार नहीं थीं, पर मै भी अड गया । मैंने कहा, आपकी मर्जी है, जाना चाहो जाओ, या न जाओ, पर मै बच्चे को उस माहौल में नहीं भेजूंगा ।"

"जीतू के जाने का तो खैर सवाल ही पैदा नहीं होता, पर आपको तो जाना चाहिए था । सुबह ही जाकर मुझे ले आते, तो अच्छा था ।"

"तुम्हे क्या लगता है, मम्मी उसे तुम्हारे भरोसे छोड़कर चली जातीं ? वह तो फिर शायद अपना जाना ही मुल्तवी कर देतीं । मेरे पास छोड गई है, यही गनीमत समझो ।" श्यामसुदर बोल तो गए, पर तुरत ही उन्हे लगा कि बहुत गलत बात कह गए हैं । बात का रुख बदलकर बोले, "मामाजी की मृत्यु का अफसोस तो है, पर जीतू के हक में एक बात अच्छी हुई है । मम्मी के मोहपाश से उसे थोड़ी मुक्ति तो मिली है । वह तो उसे बिलकुल बच्चा बनाए हुए है । लगता है, कभी बडा होने ही नहीं देंगी ।"

"कोई माँ नहीं चाहती कि उसका बच्चा बड़ा हो ।"

"क्यो ?"

"क्योंकि बड़े होकर बच्चे अपने नहीं रह जाते, पराए हो जाते है ।"

"वेरी स्ट्रेंज एंड वेरी सल्फिश ऑल्सो । यह तो बहुत ही स्वार्थ-भरा दृष्टिकोण है ।"

"सो तो है । अब थोड़ी बच्चों के स्वार्थ की भी बात हो जाए । घर पास आ गया है न, दो आइसक्रीम के कप खरीद लेते है ।"

पहली बार ऐसा हुआ कि वह बडे आवेग के साथ घर की सीढियाँ चढी । बडी आतुरता से उसने दरवाजे का ताला खोलते हुए कहा, "सोनू, जाओ तो बेटे, सध्या दीदी के यहाँ

से जीतू को ले आओ । कहना, मम्मी तुम्हारे लिए एक चीज लाई है ।"

सोनू दौड़ता हुआ पड़ोस में गया । उसके चेहरे का तनाव अब एकदम गायब था पर जीतू को देखकर लगा, वह तनाव अब उसके चेहरे पर आ गया है । बेचारा लड़का ! अपनी माँ को तो उसने कभी देखा ही नहीं था, पर जिसने माँ की तरह पाला-पोसा था, उससे पहली बार बिछुड़ने की पीड़ा उसके चेहरे पर साफ अंकित थी ।

"देखो, हमारी मम्मी तुम्हारे लिए क्या लाई है !" सोनू ने आइसक्रीम का कप उसके सामने करते हुए कहा ।

"सोनू ?" क्षमा ने घुड़का, "यह हमारी-तुम्हारी क्या होता है । मम्मी दोनों की होती है, समझे ?"

सोनू थोड़ा-सा सहम गया, पर जीतू ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की । पापा की बगल में खड़ा हुआ वह चुपचाप अपना कप खाली करता रहा । उसे थपथपाकर क्षमा ने कहा, "अब दोनों बच्चे बड़ी मम्मी के कमरे में खेलेंगे । शोर नहीं करेंगे । लड़ेंगे भी नहीं । तब तक मम्मी खाना बनाती है । खाना खाकर थोड़ा आराम करेंगे, फिर शाम को मम्मी-पापा के साथ पार्क में घूमने जाएँगे, ठीक है ?"

"पार्क में फिर से आइसक्रीम मिलेगी ?" सोनू ने पूछ ही लिया ।

"बिलकुल मिलेगी लेकिन उसके लिए पहले राजा बेटा बनना होगा । नाउ गेट सेट एंड गो !"

सोनू दौड़ता हुआ बड़ी मम्मीजी के कमरे में चला गया । जीतू भी पैर घसीटता हुआ उसके पीछे जाने लगा ।

"आप जरा ध्यान रखिएगा । इन लोगों का कोई भरोसा नहीं है, एकदम हाथापाई पर उतर आते हैं ।" उसने श्यामसुंदर को हिदायत दी और किचन में वह पहली बार अपनी मर्जी से खाना बना रही थी । जिस तरह आज सोनू एकदम तनावमुक्त हो गया था, वह भी बहुत हलका महसूस कर रही थी । उसका तो गुनगुनाने का मन हो रहा था । पहली बार वह इस घर में खुलकर साँस ले रही थी । मम्मीजी का व्यक्तित्व उस पर किस कदर हावी था, इसका यह प्रमाण था ।

आधे घंटे में उसने सारा काम निबटा दिया । सबसे आखिर में चावल कुकर में चढ़ाकर बाहर आई तो घर में एकदम सन्नाटा था । केवल बीच-बीच में सोनू के खिलखिलाने की आवाज आ रही थी ।

"सोनू, यह जीतू कहाँ चला गया ?"

"कमरे में होगा, क्यों ?" श्यामसुंदर ने पेपर से नजर हटाए बिना जवाब दिया ।

"कमरे में तो हो नहीं सकता । इतनी देर में तो एक दर्जन शिकायतें आ जातीं ।"

उसने वॉश बेसिन पर हाथ-मुँह धोते हुए कहा ।

श्यामसुदर उठकर कमरे तक गए और बोले, "इधर आकर देखो जरा ।"

क्षमा ने जाकर देखा, सोनू बडे मजे से जीतू की पटरियों वाली ट्रेन चला रहा था । और जीतू सोनू का नया हेलीकॉप्टर गोद में लिए चुपचाप उसे देख रहा था ।

"क्षमा, तुमने मार्क किया ? मम्मी को गए अभी चौबीस घटे भी नहीं हुए है और यह लड़का कितना शरीफ बन गया है ।"

क्षमा ने तड़पकर पति को देखा । कैसे बाप है ये, बेटे का दर्द नही समझते । जिसे वह शराफत समझ रहे है, वह डर है, मन मे छिपी असुरक्षा की भावना है । सोनू जानता है कि आज घर मे मम्मी की सत्ता है और इसीलिए इतना दिलेर बना हुआ है । उसी तरह जीतू भी जान गया है कि आज घर में उसका सरपरस्त कोई नही है । बेचारा बच्चा, मम्मीजी के ऑचल की छॉह जरा-सी हटते ही तपती रेत पर खडा हो गया है ।

क्षमा का मन ममता से भर आया । उसने जीतू को गोद मे ले लिया और दुलारते हुए बोली, "मेरा राजा बेटा भूखा है न, देखो तो, चेहरा कैसा निकल आया है ? मम्मी अभी पॉच मिनट मे अपने बेटे के लिए खाना लगाएँगी, हॉ ।"

फिर कुछ कड़े स्वर मे सोनू से कहा, "सोनू, तुम ये सारी चीजे जगह पर रखने के बाद ही कमरे से बाहर जाओगे, समझे ? और जाते समय पंखा बद करना मत भूलना ।"

दोनो बच्चो ने ऑखों मे अविश्वास भरकर क्षमा की ओर देखा । सोनू का चेहरा तमतमा गया था, पर जीतू की ऑखो मे आश्वस्ति की एक चमक कौध गई । उसने क्षमा की गोद मे मुँह छिपाकर कॉपते स्वर मे पूछा, "बड़ी मम्मी कब आएँगी ?"

□□